मासिक—

# मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० के० एल० जौड़ा
एम.एस.सी., पीएच.डी.

| | | |
|---|---|---|
| वर्ष 8 | शनिवार 10 अप्रैल 1982 | संख्या 12 |

# मनुष्य

## परम दयाल जी की दृष्टि में

(मनुष्य बनो अगस्त 1947)

यह सत्संग पूज्य परम दयाल जी महाराज ने 1947 में पाकिस्तान बनने व भारत को आजादी मिलने के बाद भयंकर धार्मिक अन्धकार में आये हुए लोगों की आबादी की अदला-बदली, कतलों, आगज़नी और शरणार्थियों की कठिनाई से दुःखी होकर दिया था। सत्संग में मनुष्य के बारे में उनका विवेचन है—साथ ही सामाजिक सुधार की उनकी आत्मा की तड़प भी है—वे महान् निडर परमपुरुष थे।

यह सत्संग एक पुस्तक के रूप में हिन्दी व उर्दू में भी छपा था जिसकी भूमिका में उन्होंने लिखा था—यह पुस्तक मैं नेताओं, धर्मप्रचारकों, गुरुओं और भेदभाव रहित सच्चे मनुष्यों के लिए लिख रहा हूं। नेताओं को भी उन्होंने पुकार कर कहा था :—

"ऐ मान्यवर क़ायदे आज़म और पं० जवाहरलाल नेहरू ! राज्य लोगों को सयम में रखने के लिए होता है। जिस राज्य में असयमी और बेलगाम मनुष्यों की रोक-थाम नहीं होती वह राज्य दुनिया में कष्ट और दुःख पैदा करता है। ऐ हिन्दू महासभा वालो, मुसलमानो और अकालियो ! यदि धर्म मनुष्य को इन्द्रियों का दमन नहीं सिखलाता तो उस धर्म को धर्म न कहो ; अच्छा हैं संभलो और संभल कर सच्चाई का मार्ग ग्रहण करो, वर्ना तुम्हारा देश चाहे वह हिन्दुस्तान हो या पाकिस्तान, नष्ट हो जायेगा। मैं जो कुछ कह रहा हूँ सच कह रहा हूँ। विचार शक्ति और संकल्प शक्ति के सिद्धान्त से विज्ञ होकर उच्च स्वर में कहता हूँ कि यदि देशवासी विशेषत: आप लोगों ने अपने विचारों पर अधिकार न पाया तो उसका फल बहुत बुरा होगा; क्यों कि विचार का फल एक स्वाभाविक बात है।"

परम दयाल जी महाराज के पुराने सत्संग प्रकाशित करने की दिशा में ऐसी भेंट पाठकजन को समर्पित होती रहेगी जिससे मौजूदा पीढ़ी को भी पुराने विचारों से लाभ मिले।

—संपादक

# प्रार्थना

जब तक मुझ को अपने होने का भान है और उसी दृष्टि से विवेक विचार मौजूद है, तब तक मुझको इस बात का विश्वास है कि मेरा कोई आधार है। अतः स्वाभाविक रूप से मैं प्रार्थना करने के लिए विवश हूं।

हैरान होकर ऐ ज़ात कबरिया[1] मैं करता हूं पुकार।
तू क्या ? कहां है ? कौन है ? क्या है यह सँसार ॥
जिस तरफ मेरी हस्ती[2] की तवज्जह जाती है।
नये-२ इनकिशाफ़[3] होते हैं मुझ पर आशकार[4] ॥
हजारों लफ्ज गढ़-२ कर तेरी सना[5] करता हूं।
टूटे नहीं हैं सिफ्त करते-२ दिल के तार ॥
चलते-२ जब तख़ैयल[6] छोड़ कर वजद[7] है तारी[8] होता।
बे खुदी में होके वासिल[9] पाता हूँ कैफ़े बहार[10] ॥

---

1. बड़ी से बड़ी शक्ति। 2. स्वयं। 3. हालात। 4. प्रकट। 5. प्रशंसा। 6. विचार। 7. आनन्द। 8. छा जाना। 9. मिलकर। 10. आनन्द की दशा।

होश में आकर तमीज़ बतलाती है कि तू है आनन्द स्वरूप।
मगर हिस्से बातिन[1] कहती है कि तू है इससे भी पार॥
योग किया ध्यान धरा जैसा समझा वैसा नज़र आया।
कुरेद थी बाकी इस लिये गया इस से भी पार॥
तू है एक हालत जहां मन नहिं, बुद्धि नहिं, नहीं है विचार।
क्या है तू ? जहां न 'मैं' है और नहीं है तेरा प्यार॥
नूर से ऊंचा शब्द से भी परे, मैंने तुझे समझा।
मैं खोजता-२ ऐ ज़ाते कबरिया गया हार॥
जिस्म है मन है और उन की कैद बंद में हस्ती मेरी।
फिर आके उस में करता हूँ दुनिया का कारोबार॥
मुअम्मा[2] तेरा खुला मगर न खुलने के बराबर प्यारे।
गूमगू[3] का मजमून होगया, कैसे कहूँ ऐ ज़ाते मफ़ार[4]।

ऐ मालिक ! ऐ आधार ! यह मेरी दशा है। इस खोज के सम्बन्ध में जो-२ अनुभव मुझे प्राप्त हुए हैं, उनको मैं बिना किसी स्वार्थ के प्रकट करता हूं।

तेरे प्रेमियों और भक्तजनों ने जो इस देश में समय-२ पर पैदा हुए, सहस्रों मार्ग तेरे मिलने के

---

1. अन्तर आत्मा। 2. भेद। 3. खामोशी।
4. मालिक।

बनाये। उन पृथक्-२ विधियों या मार्गों की भिन्नता के कारण पृथक्-२ धर्म संसार में प्रकट हो गये। मगर क्या मैं पूछ सकता हूं कि ये सब धर्मों या मार्गों के अनुयाई तुम से अनभिज्ञ नहीं हैं ? अथवा पथ-भ्रष्ट नहीं हैं ? अवश्य हैं। क्यों कि यदि ऐसा न होता तो फिर धर्मोन्माद के वश क्यों एक दूसरे के रक्त के प्यासे होते ? क्यों एक दूसरे से घृणा और द्वेष रखते ? इन वर्तमान धर्मों के अनुयाइयों का ढंग यह सिद्ध करता है कि ये सब के सब सच्चाई और असलियत से अनभिज्ञ हैं। अत: बाह्य घटनाओं के वशीभूत भाइयों को सच्चाई का मार्ग दिखाने को लेखनी उठाई है। यदि तेरी इच्छा है कि लोगों तक इन विचारों को पहुंचाया जाय तो आशीर्वाद दें जिस से सच्चाई की शिक्षा का प्रचार हो, और यदि मौज नहीं है तो—

राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।
हम सब हैं तेरे ख़ादिम, तू सब का ना खुदा है ।।

'फ़कीर'

१५ अगस्त सन् १९४७ ई०

---

# प्रथम अध्याय

## मनुष्य

इस समय देश और समाज की दशा ऐसी हो रही है कि सुख और शान्ति के प्रेमी हर प्रकार से घबराये हुए हैं ! कौन ऐसा है जो वर्तमान घटनाओं से प्रभावित होकर अपने-२ विचारों के अनुसार उस की रोक-थाम, प्रवन्ध या उपचार नहीं सोचता। हर एक का विचार उसकी अपनी समझ के अनुसार है। कौन उचित है और कौन अनुचित है, इसका न्याय करना बहुत कठिन है फिर भी यदि कोई सच्चा उपाय बता सकता है तो वह केवल मनुष्य है। कोई हिन्दू, मुसलमान, सिख या ईसाई इस योग्य है न होगा जो वर्तमान गुत्थी को सुलझा सके। आप आश्चर्य करोगे कि मैं क्या कह रहा हूं, मगर जो कुछ मैं कह रहा हूं सोलह आने सच कह रहा हूं।

आज अगस्त 47 की 15 तारीख है । जहाँ हिन्दुओं को कुछ मिला वह प्रसन्न हैं । मगर इस क्षेत्र की दूसरी जातियां क्या प्रसन्न हैं ? इसी प्रकार पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दू और सिखों की हार्दिक दशा का अनुमान लगाओ । जहाँ समाज-वाद के विचार के मनुष्य समाजवाद को अच्छा मसझते हैं वहाँ धनवान् मनुष्यों से पूछो कि उनकी क्या राय है । सारांश यह है कि वर्तमान दशा से किसी न किसी पहलू से हर व्यक्ति और हर जाति को कोई न कोई शिकायत है । अब प्रश्न यह है कि यह शिकायत क्यों है ? क्या इसका कोई उपाय भी है या नहीं ? मैं कहता हूं कि यह असन्तोष केवल इस लिए है कि मनुष्य सच्चा मनुष्य नहीं बनता । यदि मनुष्य मनुष्य बन जाय या अपने आप को पहिचान ले यह विपत्ति दूर हो सकती है ।

पहिचान ले अपने को तो इन्सान खुदा है ।
गो ज़ाहिर मैं है ख़ाक मगर ख़ाक नहीं है ।।
जलबों की ख़ता क्या जो दिखाई नहीं देते ।
खुद देखने वालों की नज़र पाक नहीं ।।

वर्तमान घटनाओं के आधार पर मैंने "आज़ादी की कुञ्जी" भाग पहला व दूसरा लिखा और उसी के सम्बन्ध में यह लेख लिख रहा हूं।

हिन्दू दावेदार हो रहे हैं हिन्दुस्तान के।
मुसलमान भगा रहे हैं ग़ैरों को पाकिस्तान से ।।
पठानों को हविश है पठानिस्तान की।
सिक्ख आरज़ू रखते हैं ख़ालिस्तान की ।।

यह सब समुदाय क्यों ऐसा चाहते हैं? हिन्दू को हिन्दूपन का घमण्ड है क्योंकि उनकी अधिकता है और वे शक्तिशाली हैं। मुसलमानों को इस्लाम पर गर्व है और वह मरने मारने के लिए कटिबद्ध हैं। सिक्खों को कृपाण धारी होने का अभिमान है और पठान अपनी पठानियत पर दावा करते हैं इत्यादि। क्या इनका ऐसा करना उचित है या नहीं, इसका उत्तर हर व्यक्ति अलग-2 देगा। मगर प्रत्येक व्यक्ति का विचार कहां तक सच्चा है इसका निर्णय करना किसी हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई या और किसी पार्टी वाले मनुष्य का काम नहीं है किन्तु कोई सच्चा मनुष्य जो पक्षपात रहित है, कर सकता है।

सम्भव है कि धार्मिक संसार के मनुष्य यह कहें कि घमण्ड, अहंकार, मद नहीं करना चाहिए । वे इसके प्रमाण में अपने पूज्य ग्रन्थों के हवाले देंगे। मैं उनसे सहमत हूं। मगर एक बात पूछता हूं कि यदि खुदी या अहंकार नहीं करना चाहिए तो प्रकृति ने मनुष्य के अन्दर ये भाव क्यों पैदा किये ? इसका उत्तर भी कोई सच्चा मनुष्य दे सकता है । उस उत्तर को आप सुनिये ।

## अहंकार की परिभाषा

किसी वस्तु या अवस्था को जब मनुष्य प्रत्यक्ष रूप में देखता है तो उस चीज़ या अवस्था के सदैव स्थापित रखने का विश्वास करके अपने भावों के वशीभूत होकर दूरदर्शिता से काम न लेकर उत्साह के साथ अपना मत या विचार प्रकट करता है। उसी को अहंकार कहते हैं। ये भाव प्राकृतिक हैं। इस समय धार्मिक और राजनैतिक दृष्टिकोण से जहां किसी धर्म, सम्प्रदाय या पार्टी का जोर और शक्ति है, वह अपनी अज्ञानता के वश में अपनी शक्ति के

घमंड के अतिरिक्त अपने सिद्धान्तों को सर्वथा स्थिर समझकर जिन क्रियाओं और विचारों को प्रकट करते हैं वह ही अहंकार और घमंड है । समय पर अवस्थाओं और घटनाओं के बदलने के साथ इन सबको मुंह की खानी पड़ेगी । गुरु नानक सच्चे मनुष्य (सत्पुरुष) ने वर्णन किया है :—

## बड़े-२ अहंकारिये नानक गर्व गले ।

दूरदर्शिता और सच्ची समझ विवेक या ज्ञान के साथ जो मनुष्य और जाति सच्चाई की दृष्टि से किसी वस्तु या अवस्था को पूर्णतया सोच विचार के पश्चात् अपना विचार प्रकट करते हैं वह सच्चा अहंकार या स्वाभिमान कहलाता है, ऐसा अहंकार मनुष्य के जीवन का एक महान् अंग है ।

देशवासियों को साधारण रूप से और नेताओं को विशेष रूप से सोचना चाहिए कि वे धार्मिक या राजनैतिक दृष्टिकोण से अपने आपको हिन्दू मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, कांग्रेसी, मुसलिमलीगी, सोशलिस्ट समझ कर किसी बात का दावा करते हैं ।

उस दावे के कारण देश में अशान्ति, अत्याचार रक्त-पात, घृणा और द्वेष की आग भड़क रही है। क्या उनके इस दावे में सच्चाई है ?

ऐ हिन्दू, मुसलमान, सिक्खो, ईसाइयो समाज-वादियो! क्या तुम्हारा किसी पक्ष के दावेदार होने का घमंड करना वास्तव में ठीक है ? सुनो एक हिन्दू मुसलमान हो सकता है दूसरा हिन्दू सिक्ख हो जाता है फिर सिक्ख भी अपना धर्म बदल लेता है। इसी प्रकार राजनैतिक समुदाय वाले भी अपना विचार बदल के अपना आदर्श बदल लेते हैं। घटना और अवस्था के वशीभूत एक धनवान् कंगाल हो जाता है और एक कंगाल करोड़पति हो सकता है एक आरोग्य पुरुष रोगी हो जाता है और एक रोगी आरोग्य हो जाता है सारांश यह है कि जितने हमारे तुम्हारे धार्मिक, सामाजिक राजनैतिक विचार और अवस्थाएँ हैं वे परिवर्तनशील हैं और हर समय बदलते रहते हैं। यदि मनुष्य इस भेद को समझ जाय तो इसका कोई काम या विचार दुःख और झगड़े का कारण न होगा, क्योंकि उसमें अहंकार

न होगा । क्या अभी तक देश को पूरा :
हुआ कि देश के अन्दर जितना कष्ट या दुःख
या सामूहिक ढंग से आरहा है इसका कारण केवल हमारी भ्रान्ति-मूलक स्वाभिमानता या अहंकार का परिणाम है । निस्सन्देह जीवन नाम ही स्वयं अभिमान का है । परन्तु यह स्वाभिमान या अहंकार यदि सच्चाई पर आधारित हो तो जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत होगा वर्ना नहीं । वास्तविक सच्चे अहंकार की चर्चा अगले अध्यायों में की जायगी ।

# द्वितीय अध्याय

## मनुष्य-शारीरिक दृष्टिकोण से

प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको कुछ न कुछ समझने पर विवश है । कोई अपने आपको हिन्दू समझता है और कोई मुसलमान, सिक्ख, ईसाई इत्यादि । यह भेदभाव धर्म के आधार पर है इसके अतिरिक्त देश में आर्थिक, सामाजिक और नैतिक क्षेत्रों में भी पार्टियाँ और धड़ेबंदियां होती हैं । इसके परिणाम रूप कोई अपने आपको कांग्रेसी, मुसलिमलीगी, सोशलिस्ट,

कम्यूनिस्ट इत्यादि समझ रहा है और उन पार्टियों और धर्मों से गुटबद्ध हो रहा है। ये पार्टी या धर्म उसके गले का हार होकर उसे पक्षपाती और तंग-दिल बनाये हुए हैं, जिसके कारण वह व्यक्ति सच्ची अवस्था से नितांत अनभिज्ञ है। इस अनभिज्ञता और अज्ञानता के कारण उससे ऐसे-२ कर्म बन पड़ते हैं कि जिससे एक सच्चे मनुष्य का मस्तिष्क लज्जा से झुक जाता है।

एक मनुष्य हिन्दू घराने में पैदा होकर हिन्दुओं के विचार और रीति-रिवाज़ के वशीभूत होकर हिन्दू धर्म की ओर झुकता है ऐसे ही मुसलमान, सिक्ख, ईसाई इत्यादि। मेरा अभिप्राय यह है कि एक बच्चा जिस प्रकार के वातावरण में पलता है वह उन्हीं विचारों के ग्रहण करने के लिए विवश है। वही विचार और प्रभाव धीरे-२ परिपक्व होते हुए दृढ़ विश्वास के रूप में बदल जाते हैं। यदि वही व्यक्ति किसी दूसरे धर्म के वातावरण में होता तो उसका धर्म अवश्य उसके वातावरण के अनुसार होता।

इस लिए सिद्ध हुआ कि मनुष्य किसी धर्म के साथ जन्म से लगाव रखते हुए संसार में नहीं आता किन्तु जिस धर्म के विचार, प्रभाव उसको संगत में मिलते हैं वह उस धर्म का बाना पहन कर धार्मिक बन जाता है।

थोड़ा ध्यान से देखा जाय तो धर्म यथार्थ में सिवाय कुछ विचारों और रीति-रिवाज के कुछ नहीं है। जन्म के समय मनुष्य का बच्चा बिना किसी धर्म और पक्ष के पैदा होता है। उस बच्चे के विषय में कोई मत स्थिर नहीं किया जा सकता कि वह किस धर्म और पक्ष से सम्बाध रखेगा। उसके पालन-पोषण करने वाले व अन्य घटनाएँ या अवस्थाएँ जिस प्रकार के सांचे में ढालना चाहें ढाल सकते हैं।

जो तुम ब्राह्मण ब्राह्मणी जाये। और राह से क्यों नहीं आये।
जो तुम तुर्क तुर्किनी जाये। पेट से सुन्नत क्यों न कराये।।
काली पीली दो ही, गाय। उनका दूध देऊ बिलगाय।।

मनुष्य का शरीर जो कि जन्म के समय बहुत छोटा सा होता है, पहिले माँ के दूध से, फिर खुराक

खाने से बड़ा और बलिष्ठ होता हुआ मनुष्य का पूर्ण आकार ग्रहण कर लेता है। सिद्ध हुआ कि शरीर की लम्बाई, चौड़ाई ओर मोटाई खुराक से मिलती है जो कि देश की भूमि से पैदा हुई है। दूसरे अर्थों में मनुष्य का शरीर माँ के पेट से बाहर आने के पश्चात् देश की खुराक से बढ़ता और जीवित रहता है। यदि भोजन न मिले तो उसका पालन-पोषण तो एक तरफ वह तो नष्ट ही हो जायेगा। अब देखिये कि मनुष्य का गर्भाधान कुछ वीर्य के कीड़ों से जिन्हें अंग्रेजी में (Supermatoria) कहते हैं, होता है। यह शक्ति पिता के अन्दर देश के खाद्य पदार्थों से पैदा हुई है और उस भोजन सामग्री से यह वीर्य बना है जिस में यह कोड़ा पैदा होता है। इससे सिद्ध हुआ कि हमारा शरीर देश के खाद्य पदार्थों से न केवल पलता है किन्तु बना हुआ भी उसी का है। अर्थात् देश की भोजन सामग्री ही ने एक प्रकार से बदल कर मनुष्य के शरीर की आकृति ग्रहण करली है जो हिन्दू है न मुसलमान इत्यादि-२।

इससे क्या यह सिद्ध नहीं होता है कि तुम्हारा शरीर तुम्हारे पास देश की धरोहर है। यदि शारीरिक रूप में तुम कोई घमंड या अहंकार कर सकते हो तो यह कि हम अमुक देश के निवासी हैं। यह असली और सच्चा अहंकार शारीरिक ढंग से है जिसके होने से तुम में ईर्ष्या, द्वेष, घृणा और घमंड का नाम निशान भी नहीं रह सकता, क्योंकि यह देश ही वास्तव में हमारी शारीरिक दृष्टि से सच्ची माँ है और इसके बच्चे तुम्हारे सच्चे भाई हैं।

होरहा है तंग दिल कोताह बीन।
दीदये दिल खोल हो रह हक़ ग़ज़ीन॥

कौन यगाना और बेगाना है कौन।
कौन आकिल और दीवाना है कौन॥

है यह दुनिया सब तेरी ज़ातो शिफ़ात।
देख अपने आप को कहें सच्ची बात॥

अपने आप को समझ लेगा अगर।
पायेगा फिर सर्रे अकबर की खबर॥

———

# तृतीय अध्याय।

## मनुष्य–जीवन के दृष्टिकोण से

अब अपने विचारों को कुछ आगे ले चलो। हमारे शरीर के अन्दर एक जीवन है यह क्या चीज़ है? आपने जीवन की भिन्न-२ परिभाषाएँ सुनी होंगी। मैं न इनको स्वीकार करता हूं न अस्वीकार। मैं जीवित हूं। मैंने अपने जीवन को देखने, समझने, परखने और जानने के लिए सारी आयु व्यतीत की है। इस लिए मैं जो कुछ कहता हूं अपना अनुभव कहता हूं। सुनी सुनाई बातों से कोई सम्बन्ध नहीं। गुरु दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी की सेवा में जीवन व्यतीत किया। आपने कहा था कि "अपने आपको आप पहिचानो, कहा और का नेक न मानो" इसी सिद्धान्त के आधार पर मैं यह नहीं कह सकता कि मेरी बात को मानो। परन्तु यह कहता हूं कि तुम में समझबूझ, विवेक, विचार है। स्वयं समझो। विचार में केवल आपका ध्यान बदलने का संकेत

करता हूं वह भी इस लिए कि तुम और तुम्हारे भाई दुःखो हैं । दुःख का समय देख कर मनुष्य के रूप में आपको बताना चाहता हूं कि तुम मनुष्य बनो । हिन्दू न मुसलमान,सुर न असुर, परन्तु मनुष्य बनो । अपने आप को जानो । नहीं मानते तो आपकी इच्छा परन्तु फल भोगना पड़ेगा । कुछ भोग रहे हो और कुछ आगे भोगोगे । हम इस बात को भूल गये कि हम मनु या आदम की सन्तान हैं । मनुष्य अपनी असलियत को छोड़कर गिर गया और भिन्न-2 वर्णों और धर्मों में बंट गया ।

अब सुनो जीवन क्या है ? हमारा जीवन पिता के वीर्य से हुआ । इस में हम कीड़े थे । इस कीड़े में क्या चीज़ थी ? तुम कहोगे जीवन जीवन कहाँ से आया ? कैसे आया ? इसका उत्तर धर्मावलम्बी पृथक्-2 ढंगों से देते हैं । यद्यपि इनके उत्तर सच्चे हैं परन्तु वर्णनशैली के मतभेद के कारण सन्देह और भ्रम पैदा होते हैं इस लिए जो कुछ सोचा जाता है इस पर मनुष्य का पूर्ण विश्वास नहीं होता । सुनिये ! वह कीड़ा वीर्य से बना । वीर्य रुधिर से और रुधिर खाद्यपदार्थों से बना ।

ये खाद्यपदार्थ पृथ्वी से उत्पन्न हुए। जब तक कि सूर्य और तारागणों की किरणें ताप और प्रकाश के रूप में पृथ्वी पर न गिरें, पृथ्वी खाद्यपदार्थ पैदा नहीं कर सकती। इस लिए सूर्य और तारागणों की किरणें, जो कि ताप और प्रकाश हैं, ही जीवन हैं। यह जीवन भिन्न-2 दशाओं में होता हुआ हमारे शरीर में ठहर कर हमको चलायमान रखता है या जीवित रखता है। यह ताप और प्रकाश तमाम संसार का जीवन है।

जिसे नूर समझते हो तुम यहां, यह मेरे जहूर का राज है।
किसी बाखबर से यह पूछलो, मैं ही नूर हूं मैं ही नार हूं।।

मैं अधिक बादविवाद और प्रमाणों से काम नहीं लेना चाहता, क्योंकि मैं केवल समझदार मनुष्यों अथवा वर्तमान नेताओं और पथप्रदर्शकों का ध्यान आकर्षित कर रहा हूं। हिन्दू शास्त्रों ने दुनिया के पैदा करने वाले का नाम ज्योति:स्वरूप या ईश्वर रखा हुआ है। वह ज्योति:स्वरूप क्या है? वह ताप, प्रकाश और तेज का भण्डार है।

अव्वल अल्ला नूर पाया, कुदरत के सब वन्दे।

वर्तमान विज्ञान भी इस सूर्य से परे एक महान् सूर्य तक पहुचा है। यदि तुम अधिक प्रमाण चाहते हो तो अपनी मृत्यु और जीवन को ध्यान से देखो। शरीर की अग्नि समाप्त हुई कि मनुष्य मर जाता है। यदि शरीर में गर्मी है तो मनुष्य जीवित है। अपने आपको मस्तिष्क में इकट्ठा करो। तुम्हारे अन्दर प्रकाश प्रकट होगा। अधिक क्या कहूं, इतना ही काफ़ी है। यह हमारी तुम्हारी शारीरिक ज़िन्दगी ताप, प्रकाश और तेज ही है। ये भिन्न-2 तारागणों और सूर्य की किरणें हैं जो मिश्रित दशा में प्रत्येक शरीर के अन्तर कार्य करती हैं।

(नोट :—यह शारीरिक जीवन है न कि आध्यात्मिक, भ्रम न हो)

अब तुम स्वयं विचार करो कि जीवन के दृष्टि-कोण से किस का दावा कि वह हिन्दू, मुसलमान सिक्ख या ईसाई है, उचित है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन ताप, प्रकाश और तेज ही है। अत: सच्चाई के दृष्टिकोण से आपका एक दूसरे से ईर्ष्या, द्वेष अथवा परायापन रखना मिथ्या अहंकार है। यही

कारण है कि हम लोग दुःख व आपत्ति का शिकार हो रहे हैं।

मैं यह जानता हूं कि इस संसार में बिना विवेक पूर्ण स्थिति के काम नहीं चलता। नाम और रूप कुदरत की जान हैं। इस लिए अगर हम लोग सच्ची समझ से काम लें तो हम अपनी शारीरिक और सांसारिक जिन्दगी को सुखमय और शान्तिमय बना सकते हैं :—

अब आपने समझ लिया होगा कि शारीरिक जीवन के दृष्टिकोण से हम सब एक हैं। हमारा एक दूसरे को अन्य समझना मूर्खता के सिवाय और कुछ नहीं है। यदि अब भी विश्वास नहीं आता तो गुरु नानक देव जी का वाक्य सुनिये।

हिन्दू कहाँ ना मारिये मुसलमान भी नाहि।
पांच तत्त्व का पूतला नानक मेरा नाम ॥

हिन्दू शास्त्र भी कहते हैं कि यह शरीर पंच-भौतिक है अर्थात् पाँच तत्त्वों का बना हुआ है

अतः जितने भी मनुष्य इस देश के वासी हैं सब के सब एक हैं और भाई-2 हैं।

हसद से कीना से बुग्ज़ व नफ़रत से,
दीन व दुनिया में है बुराई।

हसद को कीना को बुग्ज़ व नफ़रत को छोड़ो,
गर तुम, तो, हो भलाई॥

नहीं है दुश्मन कोई तुम्हारा,
जो दिल को पाक व साफ़ करलो।

जहाँ के इन्सां नज़र में आने लगें,
तुम्हारे हक़ीक़ी भाई॥

---

# चतुर्थ अध्याय।

## मनुष्य–भाव व विचार के दृष्टिकोण से।

सब से पहिले इस बात की आवश्यकता है कि मनुष्य को यह मालूम हो कि विचार क्या वस्तु है ? कैसे उत्पन्न होता है ? और क्यों उत्पन्न होता है ? मनुष्य जो कुछ सोचता है क्या वह उसके अधिकार की बात है अथवा किसी अन्य शक्ति के अधिकार में है ?

मैंने पिछले अध्यायों में वर्णन किया है कि ताप और प्रकाश से स्थूल पदार्थ के मिलने से मनुष्य बनता है। शरीर अलग वस्तु है। संगठित रूप से इन तीनों के खेल का नाम जीवन कहलो तो कोई हर्ज़ नहीं।

(दृष्टि मंतव्य की ओर रहे, नकि शब्दों की ओर मैं विद्वान् नहीं हूं। मुमकिन है इल्म की कमी के कारण इबारत में त्रुटि रह जाय।)

विचार मनुष्य के भावों का स्पष्टीकरण है। भाव बाहर के प्रभावों के कारण पैदा होते हैं। हर एक अणु, परमाणु या एटम ( atom ) अपने अन्दर धन ( Positive ) और ऋण (Negative) शक्ति या फोर्स (Force ) रखता है। दूसरे शब्दों में प्रत्येक शरीर में या उसके अंश में गुण, कर्म और स्वभाव मौजूद रहते हैं।

प्रत्येक शरीर चाहे वह छोटे से छोटा हो या बड़े से बड़ा, उसके अन्दर से धन (Positive) और ऋण ( Negative ) शक्ति या फोर्स की धारें, लहरें या किरणें हर समय निकलती रहती हैं। और उस शरीर के इर्द-गिर्द घेरा या मंडल बांधे रहती हैं। जब वह शरीर दूसरे शरीर के घेरे में आता है तो दोनों शरीरों या अधिक शरीरों की फोर्स आपस में टक्कर खाती हैं। उस टक्कर या मिलाप के कारण इनमें परिवर्तन होता है। तब हर शरीर के अपने गुण, कर्म और स्वभाव या फोर्स में नई किस्म की लहर पैदा होती है। इसका नाम भाव है। इन भावों का

इज़हार विचारों से और शारीरिक हरक़त के रूप में हुआ करता है।

मनुष्य का दिमाग़ जो बहुत ही सूक्ष्म पदार्थ का बना हुआ है तमाम शरीर के साथ बहुत ही बारीक-2 नसों और नाड़ियों से पिरोया हुआ है। जब दूसरे शरीरों के गुण, कर्म और स्वभाव या फोर्स बाह्य प्रभावों के रूप में देखने, सुनने और छूने के कारण पड़ते हैं, तो उनको मनुष्य का दिमाग़ स्वीकार करता है। वह उस दिमाग़ को प्रभावित करते हैं और उसके अपने गुण, कर्म और स्वभाव या फोर्स में तबदीली पैदा करते हैं।

इन प्रभावों और प्रतिविम्बों का दृश्य एक ऐसा जौहर करता है जो न शरीर है, न विचार, न जीवन, बल्कि वह उनसे अलग वस्तु है जिस का नाम सुरत या तवज्जह कहो। अब शायद आप समझ गये होंगे कि भाव व विचार क्या हैं। चूंकि बात बहुत सूक्ष्म है, मैं विशेष स्पष्ट किये देता हूं।

प्रत्येक शरीर के गुण, कर्म और स्वभाव या उस की धन ( Positive ) और ऋण (Negative ) शक्ति

(Force) एक दूसरे पर प्रभावित होकर उसके विचारों में तबदीली पैदा करती रहती हैं। इस कारण से समय-2 पर प्रत्येक मनुष्य के भावों और विचारों में तबदीली होती रहती है।

यदि यहां तक समझ लिया हो तो आगे चलिये। प्रत्येक शरीर पर दूसरे शरीर का असर पड़ता है। उनका असर और उनका नतीजा पृथक्-२ हुआ करता है। एक ही घटना के बाह्य प्रभाव तो एक ही होते हैं मगर इसका असर हर शरीर पर भिन्न-२ हुआ करता है। दृष्टान्त के रूप में समझ लीजिये, एक जगह गाड़ियों की टक्कर या बाढ़ से कुछ आदमी मर गये या डूब गये। जिन्होंने सुना या देखा, उनमें से किसी ने तो घायलों या मुरदों के धन को लूटा, किसी ने उनकी मरहमपट्टी की, किसी ने उस कारण को जिससे यह घटना हुई, दूर करने का उपाय सोचा इत्यादि-2। ऐसा क्यों होता है? इस लिए कि प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति अलग-२ होती है। यह प्रकृति का नियम है। अतः भिन्न-2 भाव, भिन्न-2 विचार और भिन्न-२ दशा प्रकृति का गुण है। मज़हबी दुनिया में

इसीलिए इस संसार का नाम द्वन्द्व का जगत् या त्रिगुणात्मक जगत् माना हुआ है।

मेरे विचार में आपने समझ लिया होगा कि भाव व विचार के दृष्टिकोण से हमारा आपस में भिन्नता का होना प्राकृतिक है। इसी दृष्टिकोण से गुरु नानक साहब ने कहा है :—

करे करावे आपहि आप मानुष के कुछ नाहीं हाथ।

मगर इस भिन्नता के कारण जो दुःख और आपत्ति हम अपनी नासमझी के कारण अपने ऊपर ला रहे हैं, उसकी रोक-थाम भी सच्चे मनुष्यों ने वर्णन की है। वह उपाय है—सत्संग, सच्चे-सच्चे पुरुषों की सोहबत, जहां से मनुष्य को सूझ मिलती है और साथ ही वह तरीक़ा या ढंग बताया जाता है जिस का सत्संग के साथ-साथ अमल करने से वाह्य प्रभाव, जो हमारे भाव व विचारों में हानिकारक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं, न पड़ें। इस लिए मैं कहता हूं कि मनुष्य के दुःखों का एक मात्र इलाज़ अपने आप को जानना है। यह इल्म पूर्ण मनुष्य की सोहबत

से प्राप्त होता है। जिस का नाम सत्संग है इसके साथ-साथ इस तरीक़े या विधि का अमल और अभ्यास है जिस से बाह्य प्रभावों का असर कम हो । इस का नाम है इन्द्रियों का वश में करना या नामजप इत्यादि जब तक हमारे मौजूदा नेता और पथप्रदर्शक स्वयं अपने आप को न जानेंगे, तब तक उनसे यह आशा रखना कि वे हमारे लिए सुख,शान्ति पैदा कर सकेंगे, ग़लत है।

देश को नेताओं की इतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि सच्चे मनुष्यों की । इस समय जो भेदभाव विचारों के कारण हैं वे उस वक्त तक दूर न होंगे जब तक कि प्रथम, श्रेष्ठ और सच्चाई पर आधारित आनन्ददायक व शान्तिदायक बाहिरी प्रभाव न दिये जायं या न फैलाये जायं । इस प्रकार के बाहरी प्रभाव देने वाले पाक इन्सान, खालिस इन्सान, उत्तम पुरुष हों, जो धर्म, पंथ, राग और द्वेष से रहित हों।

द्वितीय—ज़ब्त (संयम) का उसूल हो, जिसकी शिक्षा छोटे बच्चों को (अ), (ई) से प्रारम्भ कराई

जाये और उसकाअन्तिम रूप गवर्नमेंट का क़ानून हो। जब मनुष्य असभ्य होकर या संयमी न रहकर अपनी भावनाओं में बहने लगता या मनमानी करने लगता है तब ऐसे बेलगाम, बेज़ब्त, संयम रहित मनुष्यों को संयमी बनाने व रखने के लिए राज्य का क़ानून हरक़त किया करता है। अब न शिष्टाचार रहा, न मज़हबों की सच्ची तालीम न ईश्वर का भय, न राज्य का डर। यदि देश तबाह न हो तो क्या हो।

पासे अदव कहां है न खौफे खुदा कहीं।<br>
अपने ही हाकिमों से वह डरते तक नहीं।।

———

# पंचम अध्याय ।

## मनुष्य–धार्मिक दृष्टिकोण से

ऐ विभिन्न धर्मों के आचार्य्यों और खुदा या ईश्वर के मानने वालो ! जरा ध्यान से सुनिये। तुम्हारे आपस में धार्मिक मतभेद हैं। इसके कारण तुम आपस में राग, द्वेष रख कर एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो रहे हो। ऐसा क्यों है ? इसका कारण यह है कि तुम्हें यह ज्ञान नहीं है कि वास्तविक रूप में धर्म किस बला का नाम है।

वर्तमान दशा से प्रभावित होकर सच्चाई का राग सुना रहा हूं। सुनोगे, भला होगा। विचारोगे, सुख शान्ति मिलेगी और यदि अमल करोगे तो रक्त के बादलों को, जो देश पर छारहे हैं, हटा सकोगे। प्रत्येक धर्म की नींव दो सिद्धान्तों पर है। एक सिद्धान्त मनुष्य को शारीरिक सुख व शान्ति प्राप्त

कराता है और दूसरे से भ्रम और भ्रान्ति मिटती है। वर्तमान समय के विद्वान् मनुष्यों के जब तक भ्रम न मिटेंगे, तब तक वे धार्मिक सिद्धान्तों के, जो मनुष्य को शारीरिक व दिली सुख व शान्ति प्रदान करते हैं, अनुयाई नहीं हो सकते। यदि प्रत्यक्षरूप से अनुयाई होंगे भी तो पक्षपाती होंगे और झगड़े फ़िसाद के कर्त्ता धर्त्ता होंगे, जैसा कि आजकल हो रहा है।

वह सिद्धान्त, जो हर मज़हब ने शारीरिक व दिली सुख व शान्ति के लिए अपनाये हैं कर्मकाण्ड या शास्त्र कहलाते हैं, इन सिद्धान्तों को जिन महापुरुषों ने बनाया था उन्होंने देश, काल, पात्र, जलवायु को दृष्टि में रखा था। समय-समय पर देश और काल के परिवर्तन के साथ-2 उन सिद्धान्तों में दूसरे महापुरुषों ने अलग-2 सम्प्रदाय बनाकर परिवर्तन किया। यही कारण है कि हर मज़हब या धर्म के अनेक सम्प्रदाय या फ़िरके होते गये। यदि इसकी व्याख्या की जाय तो एक दफ्तर की आवश्यकता होगी। इस लिए थोड़े से सिद्धांतों की बातें वर्णन करता हूं।

प्रथम—कर्मकांड के सिद्धांतों में हर एक मजहब ने शारीरिक स्वास्थ्य का विचार मुख्य रखा है ताकि मनुष्य किसी न किसी प्रकार का विवश हो कर धार्मिक रूप से सफाई वगैरह रखता हुआ स्वस्थ रहे ।

द्वितीय—मनुष्य का मन चंचल है । बाह्य प्रभावों के कारण अशान्त हो जाता है । इस लिए विचार की एकाग्रता के लिए पृथक्-2 मार्ग अर्थात् सुमिरन, ध्यान, भजन, प्रार्थना व अन्य सिद्धान्त बनाये गये थे ।

तृतीय—शादी विवाह व मौत की रस्में भी देश की परिस्थिति व खानदानी तबीअतों और आदतों का ध्यान रख कर बनाई गई थीं ।

चतुर्थ —मतभेद का सबसे बड़ा कारण धार्मिक ग्रन्थ हैं । प्रत्येक धर्म का दावा है कि उसका ग्रन्थ ईश्वरीय वाणी (इलहामी) है । आचार्यों को न समझ-बूझ है न विवेक कि ईश्वरीय वाणी (इलहाम) क्या

है। मनुष्य के दिल के ऊपर जिस प्रकार के बाह्य प्रभाव पड़ते हैं उनके अनुसार उसके अन्तर की आवाज़ होती है उसको इलहाम कहते हैं। मैं मानता हूं कि इलहाम या अन्तर की आवाज़ 99 फीसदी सच होती है लेकिन केवल ऐसे पुरुषों की जिनका हृदय शुद्ध होता है। शुद्ध हृदय की भी ख़ास दशा होती है। जब कोई मनुष्य किसी एक विचार को ग्रहण कर लेता है तो उसका हृदय उस विचार से भर जाता है। उसके अन्दर की आवाज़ उसी प्रकार की होगी जिस प्रकार के विचार या दशा उसके मन की होगी। वह इस संसार के अन्दर से वैसे ही परमाणु लेगा। रेडियो सिद्धान्त के अनुसार इसकी वाणी सच्ची होगी मगर यह सबके लिए ठीक नहीं हो सकती।

महात्मा गांधी आंतरिक आवाज़ पर विश्वास रखते थे। मगर शायद उनको यह इल्म नहीं था कि इनकी आंतरिक आवाज़ ईश्वर की आवाज़ नहीं है बल्कि इनकी आवाज़ उन विचारों के आधार पर होती है जिनको उन्होंने परिपक्व किया है। 'अहिंसा

परमो धर्मः, का सिद्धान्त धन्य है। मगर क्या उनके दिल की आवाज़ (आन्तरिक आवाज़) पूरी हुई? जितना ही वह उस पर ज़ोर देते रहे उतना ही रक्तपात उन्होंने देखा और भविष्य में, ईश्वर करे वे दीर्घायु हों, देखेंगे। यह विचार कि उनका सिद्धान्त समस्त के लिए लाभदायक होगा मेरी समझ में ग़लती होगी। हाँ! उनकी आन्तरिक आवाज़ उनके लिए या उनके समान प्रकृति वाले मनुष्यों के लिए भलाई पैदा करेगी।

जितने महापुरुष संसार में आये, उन्हें उनके विचारानुसार इलहाम या आन्तरिक वाणी हुई। वह उस समय के लिए या उन जैसों के लिए ठीक थी। इस लिए किसी धर्मावलम्बी का यह दावा करना कि उनका धार्मिक ग्रन्थ ईश्वर की आवाज़ है ग़लत, ख़ुदी और अहंकार है। इसका नतीज़ा दुःख व मुसीबत है जिस को लोग इस समय देख रहे हैं।

निस्सन्देह जिस मनुष्य ने अपने मन को छोड़ देने का अभ्यास किया है अथवा जो विचार, भाव और शारीरिक जीवन से ऊँचा जा सकता है, उसकी

वाणी या उसकी आन्तरिक आवाज़ सदा ठीक होती है। वह जो कुछ कहेगा वह किसी जाति, सोसाइटी या सम्प्रदाय के पक्ष में न होगा। ऐसे मनुष्य को समझने वाले समस्त लोग नहीं हो सकते क्यों कि वे पक्षपात रहित नहीं होते। यही कारण है कि सन्तमत में हमेशा जीवित व्यक्ति से लाभ उठाने की चेतावनी दी जाती है।

जीवित गुरु को ढूंढ रे, तेरे भले की कहूं।
पिछलों की तज टेक रे, तेरे भले की कहूं॥
(स्वामी शिवदयाल सिंह)

अत एव क्या हिन्दू क्या मुसलमान, ईसाई क्या पंथाई सब के सब अनभिज्ञ हैं। यह भूल जायं कि अपने प्राचीन धार्मिक विश्वास जो उनके पवित्र ग्रन्थों में लिखे हैं, के शाब्दिक अर्थों को समझ कर, उन पर अमल कर सकेंगे। सिद्धान्त ग़लत नहीं हैं और न शिक्षाएँ ग़लत हैं। मगर कहां और किस दशा में उनका उपयोग करना चाहिए इसका किसी को ज्ञान नहीं। बड़ा भारी अन्तर यह भी है कि प्रत्येक धर्मावलम्बी यह दावा करता है कि उनके प्राचीन

महापुरुषों को ईश्वर का साक्षात्कार हुआ। इस विश्वास से वह पक्षपाती हो कर दूसरे धर्म वालों से घृणा व द्वेष रखते हैं।

सुनो भाइयो! वह साक्षात्कार जिस को वर्तमान या प्राचीन काल के महापुरुषों ने प्राप्त किया, वास्तव में उन महापुरुषों के अपने विचारों के विश्वास का परिणाम था। जो बाह्य प्रभाव उनके शुद्ध स्वरूप पर पड़े और जिस महापुरुष का दिल जितना सच्चा और शुद्ध था उसी अनुसार उसके अन्तर में अनुभव हुए। इन अनुभवों का नाम साक्षात्कार है। जिस-2 प्रकार के विचार या संस्कार ईश्वर के स्वरूप के बारे में उनके थे वैसे ही प्रकाश और रूप में ईश्वर उनको दृष्टिगोचर हुआ।

जाकी रही भावना जैसी, हरि मूरति देखी तिन तैसी ॥

धन्य हैं वे पवित्र पुरुष जिनके दिलों में उसकी भक्ति पैदा हुई। जिस-२ प्रकार की उन की भक्ति या प्रेम था उसी प्रकार का उनको आन्तरिक अनुभव हुआ। सत्पुरुषों ने इस लिए साफ कहा है कि मनुष्य के

दिल के अन्दर ईश्वर रहता है। क्या यह भूठ है ?

दिल में दिल में दिल में है।
न वह आव व आतिश व गिल में है॥

(दातादयाल शिवब्रतलाल)

इस लिए धर्मावलम्बी जो केवल धार्मिक सिद्धान्तों की भिन्नता के कारण लड़ते हैं वे ग़लती पर हैं। अनसमझी है। अज्ञान है। तुम कहोगे कि यदि ईश्वर दिल में है तो जो वस्तु साक्षात्कार होती है या जिसको मनुष्य ईश्वर समझकर दर्शन करता है वह अपना विचार ही तो हुआ। फिर ईश्वर कहां रहा ? सुनिये।

खुदा भी है ईश्वर भी है इसमें नहीं शक़ ज़रा।
मगर वह क्या है इसके इज़हार का नहीं किसी को हक़ मिला।
वह है है दोस्तो वह है है और है।
ज़ात है हमारी हम से न था न है न होगा जुदा॥
दिल से ऊँचा जाय तो और तखय्यल को अपने छोड़ दे।
तब राज़ पायेगा वह कि कहां है सच्चा खुदा।

उसका न नाम है न निशान है-रंग रूप से न्यारा।
वह है हैरत हैरत और है, कुल आलम का सहारा।।

साधारण तौर पर धर्मावलम्बी प्रारम्भिक अवस्था में उस ईश्वर की पूजा करते हैं जिसने संसार की रचना की है। इस संसार का रचयिता यह प्रकाश और ताप का भंडार है जिससे किरणें या धारें निकल-निकल कर इस संसार में पदार्थ को पैदा करती हैं और खेलती हैं। उनके कारण सारा ब्रह्माण्ड पैदा होकर, स्थित रहकर फिर नष्ट हो जाता है। जीवन, मरण सब इस खेल का नतीजा है। इस द्वन्द्व जगत् के खेल के प्रभावों से बचने के लिए धर्म का एक दूसरा सिद्धान्त है।

यह सिद्धान्त मनुष्य को उन दुःख, मुसीबत, खुशी, रंज से जो हमको, बाह्य प्रभावों के कारण मिलते हैं, बचाता है, यह सिद्धान्त क्या है ?

मनुष्य अपने आप को, अपनी आत्मा को, अपनी तवज्जह को जो शरीर और मन की श्रेणी में आकर

बाह्य प्रभावों को ग्रहण करती है निकाल ले । इसका ढंग केवल सुरत शब्द योग है । मनुष्य की तबज्ज़ह जब इस नग़मा (शब्द) को सुनती है तो वह प्रकाश और पदार्थीय प्रभावों से पृथक् होकर अपने स्वरूप या सच्चे ईश्वर से मिलकर सच्ची शान्ति प्राप्त कर सकती है मगर यह केवल गिने-चुने मनुष्यों के लिए है ।

दोस्तो ! धर्मों की भिन्नता के कारण आप आपस में लड़ते हो । कोई तुमको समझाने वाला नहीं है ? है । बल्कि सच्चाई यह है कि तुम समझने वाले नहीं हो । अच्छा हो कि सच्चे मनुष्यों का संग करो और थोड़ा-२ साधन करो ताकि आप लोगों को धर्म की वास्तविकता का पता मिले । वर्तमान हिन्दू और मुसलमानी धर्म की लड़ाई केवल तुम्हारी ग़लत समझ का परिणाम है ।

# छटा अध्याय

## मनुष्य—अपने नेताओं से सम्बन्ध रखने की दृष्टि से।

साधारणतया मनुष्यों में घृणा, द्वेष व लड़ाई, झगड़ा इस कारण से होता है कि प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि दूसरे लोग भी उसी रहबर, गुरु या नेता को मानें जिसको कि वह मानता है। मनुष्य के अन्दर यह भाव प्राकृतिक है। वह ऐसा करने के लिए मजबूर है। यदि आपने मेरे लेखों का ध्यान पूर्वक अध्ययन किया है तो आपको मालूम हो गया होगा कि मनुष्य के अन्दर जो भाव उत्पन्न होते हैं और जिनको वह अपने वचन और कर्म से प्रकट करता है उसका कारण बाह्य प्रभाव हैं। इन बाह्य प्रभावों का असर मनुष्य पर उसकी प्रकृति के अनुसार होता है। और वह मजबूरन प्राकृतिक

रूप से उन मनुष्यों को ओर झुकता है जो उस जैसे भाव वाले होते हैं इस लिए प्रत्येक मनुष्य के भावों की लहरें उस ओर झुकती हैं जहां उनको खेलने का अवसर मिलता है।

मनुष्य के अन्दर भिन्न-2 प्रकार के भाव उत्पन्न होते रहते हैं। सबसे बड़े-2 भाव ये होते हैं :—
प्रथम—विद्या प्राप्त करना अर्थात् ज्ञान की इच्छा।
द्वितीय—जिन्दा रहने की इच्छा।
तृतीय—उन्नति और बढ़ने की इच्छा।
चतुर्थ—उन्नति और बढ़ने के मार्ग में जो रुकावटें आती हैं उनका मुकाबला करना।

जब मनुष्य इन चारों प्रकार के भावों से उकता जाता है तो वह मजबूरन किसी ऐसी शक्ति या अवस्था का अभिलाषी होता है जहाँ ये भाव न हों। उसका नाम सुख, शान्ति, विश्राम अथवा असली और सच्ची भक्ति या पूजा है।

मनुष्य जिस समय जिस भावना में है अथवा जीवन की जिस अवस्था में है, यदि आप उसको

बिना अनुभव कराये रोकना चाहें तो वह तुम्हारा विरोध करेगा और तुमको कभी सफलता न होगी। सच्चे पुरुष, जिनको सच्चा पथप्रदर्शक कहा जा सकता है, न तो एक ही प्रकार की शिक्षा या उपदेश देते हैं न सब को एक ही लाठी से हाँकते हैं। इस लिए सच्चा लीडर अथवा सच्चा पथप्रदर्शक वह हो सकता है जो जीवन की सम्पूर्ण अवस्थाओं से गुजरा रहा है।

सुनिये! अपने घर की एक घटना सुनाता हूं। मैं जन्म से ही मालिक या ईश्वर के मिलने का संस्कार लेकर आया था। मजहबी तल्लीनता के अन्दर भिन्न-2 अवस्थाओं से गुजरा। दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी की शरण के प्रभाव में चलता था। मेरी धर्मपत्नी घर पर थी और मैं बसरा में मुलाजिम था। मेरी पत्नी दु:खी रहा करती थी, जिस का कारण मेरी बे परवाही और गरीबी था। घर के रिश्तेदार उसको तंग किया करते थे। वह दुखी रहा करती थी। उसने दाता दयाल को अपने दु:ख की कथा सुनाई। आपने कहा कि घबराओ मत। अच्छा समय

जल्द आयेगा । मेरी आज्ञा मानो । वह आज्ञा यह थी कि यदि तुमको कोई एक सुनावे तो तुम उसको सोलह सुनाया करो । कुछ चिन्ता नहीं, चाहे वह तुम्हारा पति (मैं) ही क्यों न हो । मुझे इस की खबर न थी २॥ वर्ष बाद जब मैं वापिस आया तो माँ, बाप और रिश्तेदारों ने मेरी पत्नी के विरुद्ध उसकी बेअदबी की मुझ से शिकायत की । धार्मिक सिद्धान्त के अनुसार मैंने सब से क्षमा मांगी और बीच-बिचाव कराकर वापिस लाहौर आया । थोड़े दिन के ही पश्चात् मेरी पत्नी का पत्र आया कि फिर अमुक-अमुक रिश्तेदार उसको तग करते हैं । मैंने वह पत्र दाता दयाल की सेवा में रखा । आप ने कहा "उसको लिख दो कि वह मेरी आज्ञा नहीं मानती । मैं उसकी कोई सहायता नहीं कर सकता ।" मैंने प्रार्थना की कि महाराज आपने क्या आज्ञा दी थी जो उसने नहीं मानी । मेरे प्रश्न करने पर महाराज ने जो आज्ञा दी थी वह अक्षरशः वर्णन कर दी । मैं धार्मिक मनुष्य होने के कारण हैरान हुआ और प्रार्थना की कि महाराज ! लोग क्या कहेंगे कि दयाल की शिक्षा ऐसी निकम्मी है जो स्त्रियों को अपने सास, ससुर और

रिश्तेदारों के सामने बोलना सिखाती है । आप हँसे और कहा,

'ऐ फ़कीर ! तू अभी अनभिज्ञ है । सन्तमत की समझ से ख़ाली है । जिन्दगी का भेद तुमको नहीं मिला । मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता हूं कि लोग मुझे क्या कहेंगे । न बदनामी का डर है न इज्ज़त की ख़्वाहिश है । मैं यह चाहता हूं कि तुम्हारे घर में सुख, शान्ति हो । इस समय तुम इस भेद को नहीं समझते न आमिल हो । समय आयेगा जब तुम समझोगे ।'

मैंने उत्तर में अपनी धर्मपत्नी को लिख दिया कि महाराज जी की आज्ञा का पालन करो । वास्तव में आज तक मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ । उन्होंने क्यों ऐसी आज्ञा दी ? इस भेद को उनकी दया से मैं अब समझा हूं ।

इसी प्रकार इन भिन्न-२ पार्टियों व धार्मिक समुदाय के नेताओं को, जो विशेष-2 भावनाओं से

प्रभावित होकर कार्य करते हैं, किसी सत्तपुरुष के आदेशानुसार रहने की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि स्वयं उनके ऊपर किसी सत्तपुरुष का प्रभाव नहीं है तो उनके अनुयायी देश में शरारत, झगड़ा और उपद्रव की जड़ होंगे।

सर्व साधारण का भिन्न-2 प्रकार के भावों के अनुसार अपने जैसे भाव वालों को नेता मानना स्वाभाविक है, मगर इन लीडरों का उनको समझा लेना उस समय तक असम्भव है जब तक कि वे लीडर किसी सत्तपुरुष की, जो जिन्दगी के रहस्यों का पूर्ण रूप से ज्ञाता हो, हिदायत न लें।

दूसरी विशेष बात जिसकी ओर मैं वर्तमान लीडरों, नेताओं और गुरुओं का ध्यान दिलाना चाहता हूं, वह यह है कि यदि आप में से कोई भी सज्जन उस विचार का, जिसका आप प्रचार करते हैं पूर्णतया अमल करने वाले नहीं हैं और उस विचार को किसी निजी स्वार्थ या लाभ की दृष्टि रखकर ग्रहण किया हुआ है तो याद रखो आप तो डूबोगे ही साथ में औरों को भी ले डूबोगे। सम्भव है कि

जब तक तुम्हारी भावना जोर पर रहे, सफलता नजर आवे मगर परिणाम भला न होगा।

भाइयो ! आपको मालूम नहीं कि बहुधा लीडर लोग चालाकी और ढंग से काम निकालते हैं। इस लिए इससे पहिले कि मनुष्य किसी को अपना लीडर माने चाहे वह राजनैतिक हो अथवा सामाजिक या आध्यात्मिक, मनुष्य का कर्त्तव्य है कि उसके अन्दरूनी हालात से पूरा परिचय प्राप्त कर ले।

गुरु कीजिये जान, पानी पीजिये छान।

यह सिद्धान्त आध्यात्मिक बिषय में है और यही सांसारिक जीवन में कार्य करता है।

भिन्न-२ पार्टियों और समाजों (जो भिन्न-2 प्रकार के भावों को दृष्टि में रखकर काम करती हैं) का होना स्वाभाविक है। मगर जो बुरे नतीज़े उनके काम के होते हैं वे केवल उसी दशा में दूर हो सकते हैं, जब प्रत्येक पार्टी, सम्प्रदाय और समाज के लीडर किसी सत्तपुरुष के असर में रहकर कार्य करें।

# सप्तम अध्याय

## मनुष्य—अध्यात्म के दृष्टिकोण से।

अध्यात्म (रूहानियत) क्या वस्तु है? इसका निर्णय करना उसी मनुष्य का काम है जिसका जीवन स्वयं आध्यात्मिक हो। चूंकि यह विषय कठिन है और केवल आध्यात्मिक स्वभाव वालों से सम्बन्ध रखता है, इस लिए अधिक सम्मति प्रकट करना उचित प्रतीत नहीं होता। इतना समझलो कि शरीर, शारीरिक जीवन और कल्पनाओं का जो वस्तु अनुभव करती है वह रूप (आत्मा) है। इसका अनुभव उसको हो सकता है जो शरीर, मन और भाव से अलग हो सकता है।

यद्यपि मनुष्य मात्र में रूह (आत्मा) है, मगर जब तक वह साधन न करे, आध्यात्मिक नहीं है। साधन के पश्चात् उसको अनुभव हो सकता है। मेरे एक मित्र ने मुझ से रूहानियत के विषय में

पूछ-ताछ की। मैंने हँस कर जवाब दिया कि जहां बुद्धि समाप्त होती है वहाँ से रूहानियत प्रारम्भ होती है। जो साधन का विषय हो उसको ज़बान और ख्याल पर लाने से भ्रम फैलता है।

सम्पूर्ण मनुष्य रूह (आत्मा) रखते हुए भी रूहानी मनुष्य नहीं हो सकते और न अध्यात्म (रूहानियत) का अनुभव कर सकते हैं, जब तक कि साधन और रूहानी मनुष्य के सत्संग का लाभ न उठायें।

एक मित्र ने पूछा कि क्या राजनैतिक और सामाजिक लीडर रूहानी मनुष्य हो सकते हैं ? उत्तर में कहा कि रूहानियत तो सब में है मगर जब तक मनुष्य समाजवाद या राजनैतिकता (पॉलिटिक्स) में डूब रहा है, उसको रूहानियत का अनुभव न होगा। निस्संदेह रूहानी अनुभव प्राप्त होने के बाद अगर मनुष्य उनमें भाग ले तो सफलता पाँव चूमेगी। एक भाई ने प्रश्न किया कि क्या वेदान्ती विचार वाला या सूफ़ीइज्म (एकत्ववाद) का अनुयायी रूहानी मनुष्य हो सकता है ? मेरा ज़वाब यह था कि यदि वेदान्ती या सूफ़ी अपने विचार और संकल्प,

विकल्प से अपने अन्दर आनन्द या मस्ती पैदा करता है तो वह रूहानी मनुष्य नहीं है बल्कि उस पर उस समय क्षणिक दशा का उतार होता है। यदि किसी ने सुरत शब्द योग के द्वारा अपने आप को भावों और संकल्प, विकल्प से अलग करके देखा है तो वह रूहानियत का अनुभव करके सच्ची रूहानियत का आनन्द ले सकता है।

मैं विद्वान् नहीं हूं। मैंने विभिन्न शब्दों से प्रयत्न अवश्य किया है कि अध्यात्म के विषय को समझदार वर्ग और वर्तमान लीडर या नेता लोग समझ सकें। मनुष्य आत्मा (रूह) रखता हुआ भी अपनी ग़लती से साधन बिना आध्यात्मिक नहीं है। इसका परिणाम यह है कि वह सदा संसार की ऊँच-नीच और बाहरी प्रभावों के झकोले लेता रहता है।

———

# अष्टम अध्याय ।

## मनुष्य–हक़ीक़त (सत्त) की दृष्टि से ।

हक़ीक़त क्या है ? जहाँ आत्मा (रूह), मन और शरीर तीनों अपना काम करते हैं और मनुष्य के स्वरूप (ज़ात) को तीनों के कर्म के परिणामों का असर नहीं होता है । यह सहजसमाधि कहलाती है या सहजवृत्ति है ।

जब जीवन की सम्पूर्ण अवस्थाओं का अनुभव हो जाता है, तब यह दशा मनुष्य में पैदा हो सकती है, इससे पहिले कदापि नहीं हो सकती । ऐसे मनुष्य दया के संस्कार से सम्भव है कि शिक्षा या सुधार का कार्य करें, मगर ऐसे निःस्वार्थ, सच्चे और सम्मानयोग्य महापुरुष ईश्वर के दूत होते हैं ।

देश के अन्दर ऐसे महापुरुष अधिक संख्या में

होते, तो उनकी धारें या लहरें अमन व शान्ति लातीं। जब-2 किसी देश में अशान्ति, अत्याचार और अधर्म होते हैं, उस समय प्रकृति में ऐसे सत्पुरुष प्रकट हुआ करते हैं, जिनकी उपस्थिति विचार द्वारा नेक प्राणियों की सहायता करती है। जो सिद्धान्त रेडियो की लहरों का है, वही सिद्धान्त विचार और रूहानी धारों का भी है। इसके विषय में मैं जानबूझ कर इस वक्त जिक्र करना नहीं चाहता।

## परिपूरक।

मेरे निजी अनुभव, सार समझ या सार ज्ञान, जो मुझ को अपने जीवन में सच्चाई की खोज के सम्बन्ध में प्राप्त हुआ है, के आधार पर मैं समझता हूं कि समस्त मानव जाति एक है। जो भी भेदभाव हैं वे केवल विचारों और भावों के हैं। इसका कारण प्रत्येक मनुष्य की शारीरिक प्रकृति और बाहरी प्रभाव हैं।

भेदभाव व भिन्नता का होना प्रकृति का गुण है। भेदभाव या भिन्नता पर क़ाबू रखने और उनके दुष्परिणामों को रोकने के लिए डर, भय, संयम और

कण्ट्रोल की बड़ी आवश्यकता है, ताकि मनुष्य के मुंहज़ोर होने का अवसर कम दिया जाय। इस लिए दो बातों की आवश्यकता है:— प्रथम — आत्मज्ञान का खुले रूप से प्रचार किया जावे कि मनुष्य क्या है? जगत् क्या है? यही सच्चा धर्म है कि जिसकी शिक्षा सच्चा हिन्दू धर्म, खालसा पन्थ और सन्तमत (मनुष्य धर्म) देता है। उसके सिद्धान्तों से शरीर, मन और आत्मा में एकत्व प्राप्त होता है। दोयम—ज़ब्त और अदब (संयम और शिष्टाचार) की पाबंदी है। मनुष्य सुरत शब्द योग को ज़ारी रखता हुआ सच्चा मनुष्य बन सकता है।

तृतीय राज्य (शासन) धर्म, साम्प्रदायिकता और पक्षपात से रहित हो और मनुष्य को मनुष्य बनाने में सहायक हो।

यही है इबादत यही दीन व ईमाँ।
कि काम आये दुनिया में इन्साँ के इन्साँ ।।

जो कुछ इस समय हो रहा है वह इसीलिए है कि हाकिम, मिलिटरी, पुलिस और अदालतों में में मनुष्य नहीं हैं, बल्कि हिन्दू, मुसलमान, सिख या ईसाई हैं। ये अज्ञानवश अपने-अपने आदमियों

का पक्षपात करने पर बाध्य हैं। इसका फल रक्तपात और अशान्ति है।

मित्रो! आज तुम न सुनोगे, न सुनो। आपकी इच्छा है। मगर सिवाय खालिस इन्सान या उत्तम पुरुष बन कर रहने के और कोई उपाय तुम्हारे सुःखी और शान्तिमय रहने का है, न होगा। आध्यात्मिक और राजनैतिक अनुभवी एक महापुरुष गुरु गोविन्द सिंह जी इस देश में प्रकट हुए थे। वे अपने निजी अनुभव के आधार पर वर्णन करते हैं:—

राज करेगा खालसा, आकी रहे न कोय।

इस ख़ालसा शब्द का अर्थ सिख ज़ाति नहीं है बल्कि ख़ालिस इन्सान उत्तमपुरुष से है। यह हो कर रहेगा। अब मान जाओ तो अच्छा है, नहीं तो प्रकृति डण्डे मार-मार कर सीधे रास्ते पर लायेगी। जब तक देश अपना आदर्श मनुष्यता—सच्चा मनुष्य बनने का न रखेगा, संयम, नियम और कंट्रोल के सिद्धान्तों को ग्रहण न करेगा और शासनाधिकार ऐसे ही लोगों के पास न आयेगा, तब तक देश में सुख, शान्ति की आशा न रखना।

फ़कीर—
15-8-47

# सत्संग परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

दिनाँक 28-9-80

चल सत्तगुरु की हाट, ज्ञान बुधि लाईये।
कीजे साहेब से हेत, परम पद पाईये ।।

उपरोक्त शब्द के आधार पर पिछले रविवार के सत्संग में मैंने बताया था कि सत्तगुरु के हाट अर्थात् दरबार से हमें क्या मिलता है ? वहां से सच्ची बुद्धि, सच्चा विवेक और सच्चा ज्ञान मिलता है जिस पर आचरण करने से व्यक्ति अपना जीवन सुख से गुज़ार सकता है। उसको संक्षेप में फिर बता देता हूं कि ऐ इन्सान ! तुम को जो कुछ मिलता है, मिल चुका है या मिलेगा यह तेरी अपनी ही वासना, अपनी ही इच्छा और अपना ही

विचार है। जैसा ख्याल करोगे वैसे होते जाओगे। पिछले सत्संग में मैंने कहा था कि हमें क्या करना चाहिए। दुनिया में सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा करो। जीवन विषय-विकार से रहित हो, नीयत साफ रखो, तुम्हारे विचार में बड़ी शक्ति है आदि-आदि। गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने के लिए इस प्रकार की बहुत सी बातें बताईं, कोई क़सर नहीं छोड़ी थी। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि परमपद क्या बला है? परमपद कहते हैं (Position) स्थान को। जैसे डिप्टी कमिश्नर का पद, तहसीलदार का पद इत्यादि। परमपद अर्थात् सबसे बड़ा स्थान या अवस्था क्या है? सब से बड़ो पदवो मालिक अथवा जात की है जहां से हम सब निकल कर आये हैं। जो हमारी आद अवस्था अथवा परमतत्त्व है वह परमपद है। सन्तमत उस परमपद में वापिस जाने के लिए उपाय बताता है।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं क्यों फ़क़ीर चन्द, तुम को परमपद मिल गया? मैंने परमपद को

समझ तो लिया चाहे अभी तक मुझ से वहां ठहरा नहीं जाता यह मेरे खोटे कर्म समझ लो या भगवान् की इच्छा समझ लो। मैंने परमपद को कैसे समझा? जब से मुझे पता लगा और निश्चय हो गया कि मेरे मन के अन्दर जितने ख्याल, भाव, विचार फुरते हैं यह माया है। तो मैं इस मन को छोड़ जाता हूं। मन से परे है प्रकाश और शब्द। जो चीज़ प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है उस अवस्था में ठहर जाना ही मेरी समझ में परमपद है। मगर यह कठिन है। हर व्यक्ति उस जगह जा नहीं सकता। यद्यपि मैं जानता हूं मगर जब कभी बीमारी या कष्ट होता है तो फिर नानी याद आ जाती है। मेरे लिए भी वहाँ जाना कठिन हो जाता है सुरत वहां नहीं जाती, सच्ची बात कहता हूं झूठ नहीं बोलता मगर मेरी समझ में आ गया है कि परमपद क्या है?

मैं संतों की बड़ी महिमा सुना करता हूं कि संत बहुत कुछ कर सकते हैं। मैं हूं, मुझे लोग संत समझ कर मेरे पास आते हैं, प्रसाद ले जाते हैं वे

राज़ी हो जाते हैं। जब मुझे शारीरिक कष्ट होता है तो मैं डाक्टरों के पास जाता हूं फिर क्या कहूं कि संत कुछ कर सकता है। जो कुछ करता है यह तुम्हारा अपना विश्वास कर सकता है या तुम्हारे अपने कर्म कर सकते हैं। अगर भाई संत कुछ कर ककते हैं तो वर्तमान सन्त कर के दिखायें। हमारे भारतवर्ष में क्या कुछ हो रहा है, देश पर कई प्रकार के दुःख आये हैं संत फूंक मारें मगर नहीं मार सकते। हर व्यक्ति को जो कुछ मिलना है वह उसका अपना ही कर्म है। कोई किसी को दुःख नहीं देता। हम सोचते हैं कि हम को दुःख देने काला कोई और है, देश में राजनैतिक दल एक दूसरे पर दोष लगाते हैं कि अमुक दल ने यह खराब काम किया जिससे देश की जनता इतने दुःख उठा रही है। मेरी समझ में आया है कि जो कुछ हमारे साथ होता है यह हमारा कर्म है, हम को कोई दूसरा दुःख देने वाला नहीं।

आप लोग मेरे पास आते हैं। कई आदमी कहते हैं बाबा ! हम पास हो जायें, बाबा ! हमारी बीमारी चली जाये। कई पत्र आते हैं बाबा ! हमें

कैंसर है। अब बाबा सिर मुँडाये! बाबा क्या करे! जो कुछ कर्म तुम जीवों या हम लोगों ने किये हैं वे भुगतने पड़ते हैं। देख लो इन बड़े-बड़े गुरुओं का क्या हाल हुआ। इस लिए मैं कहता हूं कि ऐ इन्सान! तू अपनी नीयत को साफ रख, अपने कर्म को ठीक कर, आदमी तुम्हारे दुःख-सुख का दाता है, यह मेरी समझ में आया है और यही सच्चाई है। तुम देखो हम लोगों को दुःख होते हैं, आनन्दपुर जाते हैं, कौन आनन्दपुर और कौन चिन्त-पूरनी, भण्डारे चढ़ाते हैं, झण्डे ले जाते हैं, आनन्दपुर जाते हैं, कौन आनन्दपुर और कौन चिन्तपूरनी सहायता करता है? ऐ इन्सान! तेरा अपना ही ख्याल है, तेरे अपने ही कर्म हैं, तेरे अपने ही कर्म के सिवाय कुछ नहीं। दाता दयाल का शब्द है :—

"कोई दुःख सुख का नहीं दाता, तेरी है भूल सब।
कर्म अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब॥
कर्म की प्रधानता की, क्या नहीं तुझ को समझ।'
कर्म से आनन्द है, और कर्म ही है सूल सब॥

कर्म क्या है ? कर्म केवल हाथ हिलाने का ही नाम नहीं है। जो मन में वासना या इच्छा पैदा होती है यह हमारा कर्म बन जाता है। जब हम किसी का बुरा सोचते हैं वह हमारा कर्म बन जाता है, किसी का अच्छा सोचते हैं वह भी हमारा कर्म बन जाता है। कर्म दो प्रकार के हैं, मानसिक कर्म और शारीरिक कर्म। यह पत्र दाता दयाल ने मुझे लिखा था। मैं बसरे बग़दाद में था। मेरे पिता ने मुझे लिखा कि साथ वाले बिरादरी के आदमी उन को तंग करते हैं। बूढ़े आदमी थे लोग उनके साथ झगड़ा करते थे तो एक पत्र मैंने दाता दयाल को लिखा, उसके ज़वाब में उन्होंने मुझ को यह पत्र लिख कर भेजा। हम सब को अपना-अपना कर्म मिलता है मगर हम लोग यह समझते हैं कि हम को दुःख देने वाला कोई और आदमी है और उसके साथ हम बदला लेते हैं यह ग़लत है। जो कुछ किसी को मिलता है वह उस के अपने कर्मों का फल मिलता है, मुझ पर भी दुःख-सुख आते हैं तो मैं यह सोच कर किसी को दोष नहीं देता क्योंकि मैंने जो कुछ किया हुआ है भुगतता हूं। दाता कहते हैं :—

यह जगत् है वाटिका, करते हैं प्राणी आके काम।
कर्म के अनुसार इनके, काँटे हैं और फूल सब ।।

जो ठगेगा वह ठगा जायेगा, निस्सन्देह आप।
प्रेमीजन ही पाते हैं, और प्रेम के बहुमूल सब ।।

अपनी करनी आप भरनी, पड़ती है संसार में।
अपने घर की आप उठाया, करते ही हैं चूल सब ।।

किस भरम में तू पड़ा, औरों की बातें छोड़ दे।
काम में लग अपने करले, कर्म निज अनुकूल सब ।।

राधास्वामी नाम भज, झगड़ों से बच कर रह सदा।
जो नहीं समझा तो पढ़ना, लिखना होगा धूल सब ।।

मैं सेना में था तो पिता जी ने मुझे लिखा, कि मुझे ये तंग करते हैं, तू लड़ाई के मैदान में है, तू अफसरों को लिख कि मेरे बाप को तंग करते हैं। पिता जी ने तो मुझे इस लिए लिखा कि मैं अपने सेना अधिकारियों और डिप्टी कमिश्नर के द्वारा उन को लिखवाऊं कि यह यूंही खामखा तंग न करें। तो दाता उसका जवाब देते हैं कि झगड़े में पड़ने की कोई आवश्यकता नहीं। ऐसे ही आप लोग दुःखों के मारे मेरे पास आते हैं, तो मैं स्वयं सोचता हूं कि मैं क्या करूं। कई बार सोचता हूं दाता ने मुझे यह कार्य सौंप

कर क्या मेरी जान को मुसीबत में डाल दिया मैं क्या कर सकता हूं ? मैं सच्ची राय दे सकता हूं। दुःख-सुख हम पर आते हैं और कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है चाहे वह संत है, अवतार है, पीर या पैग़म्बर है कोई भी अपने कर्म के फल से बच नहीं सकता। न राम बचे, न कृष्ण बचे। हम तुम जो कुछ करते हैं भूल जाओ कि उसके बदले से तुम बच सकोगे, जो इच्छा हो कर लो। हाँ ! ज्ञान के रास्ते से बच सकते हो। ये तुम्हारे कर्म थे तुम ने भोग लिये। तब तुम को शान्ति मिल जायेगी वरना जो कर्म किया हुआ है उसकी सज़ा से तुम क्या, कोई भी नहीं बच सकता। यह और बात है कि वह सज़ा तुम्हारी जाग्रत में भुगते या स्वप्न में भुगत जाये, मगर कर्म का फल हमको अवश्यमेव मिलेगा। दाता दयाल का एक दूसरा शब्द है :—

नर भोगे बारम्बार अवश्य फल कर्म किये का।
यह सोच समझ चित्तधार, भरम जग जन्म जिये का।
सुर नर, देवी, देव, महर्षि और ब्रह्म अवतारा।
अशुभ कर्म के फल से उनको, मिले नहीं छुटकारा।

एक जो कहिये राम महा प्रभु, पुरुषोत्तम मर्यादा।
गुप्त घाट सरयू जल डूबे, रामायण संवादा।

मैं हिन्दू हूं, राम को मानता हूं मगर मेरे दिल में जो प्रश्न पैदा होता है उसका कोई ज़वाव नहीं देता कि राम ने आत्महत्या क्यों की ? कहना पड़ता है राम के कर्म थे। राम ने बेज़ूसूर गर्भवती सीता को जिसकी अग्निपरीक्षा ले ली गई थी एक धोबी के कहने पर अपने आप को मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने की इच्छा से वनवास दिया था, जो यह अपराध था उस कर्म की सज़ा उनको यह मिली। हम घरों में क्या करते हैं ? निर्दोष स्त्रियों को दु:ख देते हैं, सास बहू से लड़ती रहती है। मैं कहता हूं ऐ इन्सान ! तू राम राम न जप, अपने कर्म और अपने अमल को ठीक कर। जब मैं देखता हूं राम जैसे और कृष्ण जैसे महापुरुषों को भी अपने कर्म का फल भुगतना पड़ा तो तुम लाख राम-राम करते रहो तुम्हारे कर्म नहीं कटेंगे। तुमने अपने कर्मों को आप काटना है, यह है मेरी तालीम, यह है मेरी शिक्षा जो मैं बताना चाहता हूं। अपनी नीयतों व अपने

मन को साफ रख कर अपनी निजी आवश्यकता के लिए किसी के साथ हेरा-फेरी, धोखा-फ़रेब, चार सौ बीस मत करो। जो पिछले किये हुए कर्म हैं उनका फल अगर आता है तो खुशी से भुगतो, हाय-हाय करने की क्या आवश्यकता है :—

"दूजे कहिये कृष्ण विवेकी, सोलह कला के पूरे।
यदुकुल नासी भीर की गांसी, भयभान मद चूरे॥"

अब तुम देखो ! कृष्ण महाराज ने महाभारत की लड़ाई में 18 अक्षौहिणी सेना मरवा दी तो उन का अपना खानदान सारे के सारे यादववंशी शराब पीकर आपस में लड़ कर मर गये। आप लोग यह चाहते हैं कि कृष्ण तुम्हारा बेड़ा पार करेगा और तुम्हारी सहायता करेगा, वह तो अपने खानदान को न बचा सका तुम्हारी सहायता कहाँ से करेगा ! सोचो ज़रा !! मेरे पास लोग आते हैं बाबा जी ! प्रसाद कर दो मेरा पुत्र बीमार है। मैं अपनी बीमारी दूर नहीं कर सकता तो मेरे प्रसाद से उसका पुत्र कैसे राज़ी होगा। यह है सच्चाई जो मैं दुनिया को देना चाहता हूँ।

सन्त सत्तगुरु वक्त के रूप में कहना चाहता हूं कि जो कर्म तुमने या हमने किये हुए हैं उनके फल से न तुम बच सकते हो, न राम बचा, न कृष्ण बचा, कोई नहीं बचा।

"तीजे युधिष्ठिर राज धर्म की, अकथ अपार कहानी।
भाई, भार्या संग गले सो, हम सब कोई जानी।"

यह युधिष्ठिर आदि पांच पाण्डव थे, लड़ाई की, जीत गये, अब राज किस पर करते, उदास हो गये जाकर हिमालय पहाड़ में गल कर मरे।

"चौथे वसिष्ठ महा मुनि ज्ञानी, देखा कुल का नासा।
विश्वामित्र के हाथ पलट गये, ज्ञान योग का पासा।"

वसिष्ठ जी को ब्रह्मर्षि कहते थे। विश्वामित्र चाहता था कि यह मुझे ब्रह्मर्षि कहें मगर वसिष्ठ जी उसे राजर्षि कहते थे। क्योंकि वसिष्ठ जी ने उसे ब्रह्मर्षि नहीं कहा इस लिए विश्वामित्र ने उनके सारे बच्चे मार दिये और उनकी कामधेनु गाय भी चुरा ली। आखिर एक दिन कुटिया के पास विश्वामित्र छुप कर बैठ गये कि आज मैं वसिष्ठ को मार

दूंगा। वसिष्ठ जी की पत्नी ने कहा कि नमक नहीं है। वसिष्ठ जी ने कहा विश्वामित्र के आश्रम से, ले आओ। पत्नी ने कहा उस दुष्ट के आश्रम से जिसने मेरे इतने बच्चे मार दिये, नहीं लाऊंगी। वसिष्ठ जी ने कहा यह तो कर्मों का फल था। विश्वामित्र सुनता था उसने सोचा कि मैंने इतना अपराध किया और इसके दिल में कोई पाप नहीं, उसने आकर सिर निवाया शरणागत हो गया। वसिष्ठ जी ने कहा आइये ब्रह्मर्षि जी, उसने कहा तुमने पहिले कह दिया होता तो मैं इतनी मुसीबत में न पड़ता। वसिष्ठ जी ने कहा उस समय तुमको राज का अभिमान था, ऐसे आदमियों के साथ जो ब्रह्मर्षि थे, उनके साथ भी जो कुछ कर्म का होना था वह होकर रहा। आप लोग आते हैं मुझे भाषण देना नहीं आता, मैं आपको निश्चय करवा देना चाहता हूं कि आप लोग अपनी नीयतों को साफ रखकर शुद्ध भाव से एक मालिक है उसका कोई रूप नहीं, जिस रूप में तुम उसको मानते हो अपने आप को उसके समर्पित करते रहो और सांसारिक काम घर में नेकनीयत से करो। जो

होना है वह होकर रहेगा। इसमें ही तुम्हारा या मेरा या सांसारिक कल्याण है। बहुत अधिक किताबें पढ़ने या घुंघरू बांध कर नाचने या कोई और पाखण्ड जाल चलाने से यदि तुम चाहो कि किसी का भला हो सकता है यह नहीं हो सकता।

"पंचम दशरथ अवध नरेशा, श्रवण ऋषि कुमारा।
पुत्र वियोग प्राण को त्यागा, मिला न राम सहारा॥"

दशरथ ने तीर मारा था, श्रवण मर गया था। उसके अन्धे मां-बाप थे उन्होंने शाप दिया था तो दशरथ का अपना क्या हाल हुआ! पुत्र बनवास चला गया और उसके विरह में आप मर गया।

छठे इन्द्र की करनी समझो, शाप बृहस्पति दीना।
भगमय देवराज की काया, कर्म का फल यह लीना॥
चन्द्र कलंक काम वेग से, जाने सब संसारा।
कर्म अटल है महाबली है, कोई कोई करे विचारा॥
रावण, बाली, भरत जड़ ज्ञानी. ऋषि के सुत दुर्वासा।
कर्म किया वैसा फल पाया, अन्त में भये उदासा॥

जड़ भरत की बाबत कहानी है, यह राजा था पिछली आयु में संन्यासी हो गया जंगल में बैठ

गया। मैं आपको परमार्थ की बात भी बता देता हूं, वहां एक गर्भवती हिरणी पानी पीने के लिए आई। शेर ने धाड़ मारी हिरणी का गर्भ गिर गया, बच्चा बाहर आ गया और शेर हिरणी को पकड़ कर ले गया। भरत ने हिरणी के बच्चे को पाला और वह उससे बहुत प्यार करता था वह जब डेढ़ वर्ष का हो गया आखिर जंगल का जानवर था भाग गया। जब मरने का समय आया भरत का उस बच्चे के साथ प्रेम था, उसका परिणाम यह निकला कि दूसरे जन्म में वह हिरण बन गया। हिरण 12 वर्ष तक जीया और कहावत है कि वह हरे पत्ते खाता था। इससे क्या साबित हुआ कि मरने से पहले हम जिसके साथ प्रेम करते हैं उसी का रूप हमको धारण करना पड़ता है। इस लिए जीवन में मरने से पहले अपने बन्धनों को सम्पूर्ण संसार से छोड़ना चाहिए वरना आवागमन के चक्र से तुम नहीं बच सकते। यह बात जो खास कर बूढ़े आदमी हैं उनको कहना चाहता हूं, नौज़वानों को नहीं। ज़िन्दगी में मरने से पहिले अपने मन की (Attachment) किसी भी स्थूल मादा से, पुत्र से, दौलत से,

मकान से, गुरु के शरीर व आश्रम से या राम व कृष्ण जो अयोध्या व गोकुल में पैदा हुए, यदि यहाँ तक भी तुम्हारा प्रेम का बन्धन है तो तुमको दूसरा जन्म अवश्य मिलेगा, आपकी मुक्ति नहीं हो सकती। बात को समझो और अपने जीवन में अमल में ले आओ।

सुन प्रसंग चित अपना साधो, सोधो मन कर्म वाणी।
शब्दयोग कर जन्म बनाओ, राधास्वामी की सहदानी॥

मैं शब्दयोग की बड़ी महिमा सुनता था। अपनी आत्मा से पूछता हूं तू बता तू शब्दयोग की क्या महिमा बताता है? अगर तो तुम यह कहो कि शब्दयोग सुनने वाले को कष्ट नहीं होता या उसको अपने कर्मों का फल नहीं मिलता यह गलत है, राधास्वामी दयाल जिन्होंने शब्दयोग चलाया वो पिछली आयु में दो वर्ष बीमार रहे तो शब्दयोग ने उनकी बीमारी को दूर नहीं किया। दूसरे शब्द-योगी गुरुओं का क्या हाल हुआ? अपनी बीमारी को दूर नहीं कर सके। बात सच्ची कहता हूं लाख तुम शब्दयोग करो, शब्दयोग से जो तुमने पिछले

कर्म किये हुए हैं वे कट नहीं सकते। शब्दयोग का क्या लाभ है ? जब हमारी आत्मा अन्दर से तमाम दृश्यों को छोड़कर शब्द में लग जाती है तो हम शरीर और मन को भूल जाते हैं, तो शब्दयोग से क्या मिला ? यही कि अन्त समय नाम को पकड़ कर लें तो हमें फिर दोबारा इस जिन्दगी में जन्म लेने की आवश्यकता नहीं, यह है लाभ शब्दयोग का। दूसरे जब तक आदमी शब्द सुनता रहता है उस का मन विचलित नहीं होता मगर यह शब्दयोग आ नहीं सकता जब तक कि इन्सान का मन शुद्ध और पवित्र नहीं है लाख प्रयत्न तुम करो। लोग नाम ले लेते हैं मगर जब तक मन की हालत ठीक नहीं है यह शब्दयोग कोई फ़ायदा नहीं देता। मैंने शब्द-योग की महिमा अगर कोई समझी है तो केवल यह समझी है कि शब्दयोग के नाम को पकड़ जाने से इन्सान के शरीर और मन के विचार भूल जाते हैं और जब हमारा अन्तिम समय आयेगा हम वहां जा सकते हैं या जब हम को कष्ट है अगर हम शब्द में चले जायें तो हमको शारीरिक कष्ट भूल जाता है। मुझे जब कोई कष्ट होता है मैं शब्द में चला जाता हूं तो मुझे पता नहीं लगता

कि मेरे शरीर को कष्ट है या नहीं, यह लाभ मैं देखता हूं। शेष सब रोचक और भयानक बातें हैं। सब ने बात का बतंगड़ बना दिया। अगर इन बड़े-बड़े शब्दयोगी साधु, महात्माओं को कष्ट न होते तो मान जाता कि शब्दयोग कुछ कर सकता है। तुम्हारा सांसारिक कार्य केवल तुम्हारे अमल और कर्म ने करना है शब्दयोग ने नहीं करना। शब्द ने केवल तुम को अपने शरीर और मन से अलग कर के एक शान्ति की अवस्था देनी है। बाकी के जो कर्म तुमने या हमने किये हुए हैं उनके फल से बच नहीं सकते।

मुझे भाषण देना नहीं आता, इसका अर्थ यह है अपनी नीयत को साफ रखो, चलते-फिरते, उठते-बैठते हमेशा एक इष्ट बना लो। हिन्दुओं, मुसलमानों, राधास्वामियों, नानकपन्थियों आदि सब का वह ही एक मालिक है। उसका प्रारम्भ में एक रूप मान लो। अधिक अदला-बदली करने की आवश्यकता नहीं। उस रूप को पूरा मानो कि वह मालिक का अवतार है और संसार में रहते हुए

नीयत साफ रख कर के अपनी ज़ाती गरज़ के लिए किसी के साथ हेरा-फेरी, धोखा-फ़रेब, चार सौ बीस मत करो, हक़-हलाल की कमाई खाओ, मेरी समझ में इससे ज्यादा और कोई अच्छाई नहीं, बाकी जितने झगड़े हैं ये तो दुनिया में जो कुछ हो रहा है अपना-अपना कर्म सब भोगते हैं। कोई किसी के वश की बात नहीं!

आप लोग आ जाते हैं, मैं इस के करने से सुखी नहीं हूं मगर ज्ञान है मुझको, इस लिए 'होनी होय सो हो' को ध्यान में रखकर अपनी ज़िन्दगी को अच्छा बनाता हूं। जो कुछ मैंने अपने जीवन में अनुभव किया, चाहता हूं कि वह आपको बता जाऊं या आपको शुभ भावना दूं। इस तरह आप सब का भला चाहता हूं इसके सिवाय मेरे पास और कुछ नहीं, न मैं पाखण्ड जानता हूं, न मुझे पाखण्ड करने की आवश्यकता है। मैं तो स्वयं डरता हूं जब मैं देखता हूं कि इन शब्दयोग, भक्ति या राम-राम करने वाले बड़े-बड़े महात्माओं को नाम जपने से क्या फ़ायदा हुआ। जब ये अपनी ज़िन्दगी के

कितने कष्ट
बीमारी को दूर न कर सके,
इस लिए मैं कहता हूं ऐ इन्सान !
शब्दयोग का सम्बन्ध केवल
इस दुनिया में

बताना है, राय देनी है, तज़वीज़ बतानी है
गुरुमत है और कुछ नहीं। "धन
कहने से तो जीवन नहीं

अपने कर्म को ठीक कर,
आवागमन से बचने के लिए

रहने के लिए कर्म तुम्हारा साथी बनेगा दूसरा कोइ नहीं बन सकता, नाम तो केवल Realization और मन की दुनिया से पार होने के लिए है। दुनिया के लिए नाम नहीं है। दुनिया के लिए अपने ख्याल को ठीक करो, अपनी नीयत को साफ करो, अपना कर्म ठीक करो, अपनी गति, गरज़ व गतलव के लिए किसी से धोखा-फरेब, हेरा-फेरी, चार सौ बीस न करो, घरों में शान्ति रखो तुमको तुम्हारे अमल ने बचाना है न कि राम ने या गुरु ने।

अपनी ज़िन्दगी को ...
सत्संग से जीवन ...

मैंने अपनी ज़िन्दगी में खबर नहीं कितने हज़ार सत्संग दिये होंगे मगर एक से एक मिलता नहीं। गो मतलब वह ही था केवल वर्णन शैली अलग-अलग थी। बास्तव में इन्सान जो कुछ करता है इसको समझ नहीं है। सच पूछते हो आदमी के हाथ में भी नहीं है। हम लोग उस कर्त्ता पुरुष के अनुसार जिसने संसार रचा है जैसो-२ ग्रहों की चाल है वैसा-
-ते हैं, हम मजबूर हैं। सच्चाई यह है
-रे पिछले कर्म ऐसे ही होंगे

# सत्संग परम दयाल जी महाराज.

# मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 23-11-80

आप लोग आ जाते हैं आज मेरे शरीर का जन्मदिन है । मेरी आत्मा प्रश्न करती है कि मुझको किसने पैदा किया ? मैं दुनिया में क्यों आया ? मेरी सारी ज़िन्दगी इसी खोज में गुज़र गई । जिसने पैदा किया उसकी तलाश करता हुआ चला आ रहा हूं । किसी ने उसे कुछ कहा, किसी ने उसे कुछ कहा । किसी ने कहा कि वो निर्गुण है, किसी ने कहा वो सगुण है, किसी ने कहा कि वो अवतार लेता है, किसी ने कहा कि वो गुरु के रूप में आता है, हज़ारों प्रकार से कहा ।

आयु बीत गई, मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा । मैंने कभी राम के रूप में,

कभी कृष्ण के रूप में उसे पूजा। इस प्रकार कभी किसी रूप में, कभी, किसी रूप में पूजता-पूजता 24 घण्टे रोने के बाद एक दृश्य द्वारा दाता दयाल के दरबार में चला गया उन्होंने यह सन्तमत मुझे दे दिया। जब मैंने सन्तमत की वाणी सुनी तो मुसीबत आ गई, दिल को दुःख हुआ। क्यों? कबीर साहिब तथा राधास्वामी दयाल ने किसी भी पन्थ और धर्म को नहीं छोड़ा, सब का खण्ड़न किया। उन्होंने अपनी वाणी में राम और कृष्ण का इस तरह खण्ड़न किया है कि राम, कृष्ण को मानने और पूजने वालों के दिलों को ठेस लगती है। इन सन्तों की वाणियों ने मुझे पागल किया हुआ था। मेरा विश्वास क्योंकि दाता दयाल पर था और उन्होंने जो मुझे कहा था कि अगर तुम उस मालिक को मिलना चाहते हो तो कबीर साहिब, नानक साहिब और राधास्वामी की लाईन पर चलो, इस पर भी मुझे यक़ीन था। मेरा विश्वास दाता दयाल से तो टूटा नहीं। अगर मेरा यह विश्वास दाता दयाल पर न होता तो मैं राम, कृष्ण के खण्डन को सहन न करता। क्योंकि हम लोग तो राम, कृष्ण और ऋषियों के

पुजारी हैं अत: मैं इन पुस्तकों को फाड़ देता। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा जो कुछ मुझे मिलेगा वो मैं बता जाऊंगा। मुझे याद है कि दाता दयाल ने इन तीनों के तीन शब्द जो "सार वचन" भाग-२ में छपे हैं। मुझे कभी लिखे थे। कबीर साहिब एक शब्द के खण्डन में कहते हैं :—

"साधो कर्त्ता कर्म से न्यारा"

हम लोग राम और कृष्ण को पूजते हैं, मैं दाता दयाल के रूप को पूजता था। कोई कहता है कि राधास्वामी दयाल मालिक के अवतार थे वो उन्हीं को पूजता है। कोई किसी गुरु को अकाल पुरुष का अबतार समझ कर पूजता है। अब देखो गुरु नानक साहिब का जन्मदिवस था, कोई गुरु नानक को पूजता है। जब रामनवमी आती है तो कोई राम को पूजता है। कबीर साहिब के इस शब्द के अनुसार यह तो सब अपने-2 कर्म भोगते हैं। वो जो असली मालिक है वो तो कर्म से अलग है इस असलियत को देखने और वो कर्त्ता जो कर्म से न्यारा है उसको ढूंढ़ने के लिए

मेरी आयु गुजर गई ।

इस असलियत का पता मुझे केवल आप सत्संगियों के तजुर्बों से मन का रूप समझ जाने के बाद मिला । मैंने एक बार दाता दयाल को प्रेम से बहुत तंग किया कि मुझे वह भेद बतायें जिस के कारण इन सन्तों ने सभी मतों का खण्डन किया है । क्योंकि वह भेद मुझे समझ नहीं आता था तब उन्होंने 1918 में मुझे यह कार्य दिया था और कहा था कि तुझको सच्चा सत्तगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा और तुमको असली घर का पता बतायेगा । और मुझे वो मिल गया । कैसे ? यहां इन्दौर से एक माई आई हुई है वह बहुत अमीर है उसका पति मर गया एक लड़का करोड़पति है, दूसरा वकील है । जब यहां आती है छः महीने रहती है, सर्दियों में चली जाती है । अब चौथी बार आई है और अब जाने वाली है । मेरे मकान पर गई । मैंने उससे पूछा माता, तू मुझसे इतना प्रेम क्यों करती है ? उसने उत्तर दिया बाबा जी ! मैंने बाबा सावन सिंह जी से नाम लिया हुआ है । उनसे मैं बहुत प्रेम करती थी उनके गुज़र जाने के बाद मुझे बहुत दुःख हुआ और मैं रोती रही कि अब मेरे सम्भालने वाला कौन है ।

उसने कहा कि एक दिन मैं तथा बाबा सावन सिंह जी दोनों उसके अन्दर प्रकट हुए तथा सावन सिंह जी ने कहा कि तुझे ज्ञान देने और तेरा उद्धार करने वाला यह फ़कीर चन्द है। क्योंकि बाबा सावन सिंह जी ने उसे यह ज्ञान दिया था अत: यह मेरे साथ इतना प्रेम करती है तथा मेरे पीछे फिरती है। अब तुम सोचो क्या मैं बाबा सावन सिंह जी के साथ उसके अन्दर गया था? मैं नहीं गया। इस से यह साबित हुआ कि बाबा सावन सिंह जी भी इसके अन्दर नहीं गये।

आज मेरा जन्मदिन है। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। मैं आप लोगों को नहीं बल्कि सारे संसार को सत्तज्ञान का भेद दिये जाता हूं कि सच्चाई क्या है? यही कि तुम्हारे मन के अन्दर जितने खेल आते हैं ये सारे तुम्हारे ही मन का चक्कर है। न तो राम, न मुहम्मद तथा न देवी बाहर से आती है बल्कि जिस प्रकार के संस्कार और ख्याल हमारे दिमाग़ पर पड़े हुए होते हैं उन के अनुसार ये दृश्य बन जाते हैं। कहीं बाबा फ़कीर

आ गया, या मुहम्मद आ गया, रसूल आ गया, राम आ गया या देवी आ गई। इन को सत्य मानना कि कोई बाहर से आया है यह इन्सान की बुद्धि जो माया है इसका काम है और इसका परिणाम यह है कि हम इन्सान होते हुए बँट गये। हम इन्सानो नसल का धर्मों में बँट जाना धार्मिक भेद-भाव व झगड़े हैं। कोई सिख बना हुआ है, कोई हिन्दू बना हुआ है, कोई मुसलमान तो कोई जैनी बना हुआ है। मुसलमानों में भी कई मत हो गये और जैनियों तथा बौद्धों में भी कई मत हो गये और ये सभी के सभी मनमत व कालमत के हैं। दूसरे जब तक इन्सान के साथ जो इसका मन रूपी चक्कर है और वह इस मन रूपी चक्कर में फँसा हुआ है तो उसका आवागमन समाप्त नहीं होगा तथा न ही उसे असली घर जाने की आवश्यकता अनुभव होगी, न ही वह अपने घर जा सकता है तथा न ही वह असली मालिक जो कर्म से न्यारा है, को पा सकता है।

लोगों के पत्र आते हैं जो लिखते हैं, कि मेरा रूप स्वप्न में और जाग्रत में उनकी सहायता करता

है। एक व्यक्ति लिखता है कि 9 नवम्बर को जब मैं गाँव से लौट कर बस द्वारा देहली आ रहा था और बस अपनी पूरी रफ्तार पर थी तो रास्ते में सिकन्दराबाद में मैं बस की अगली खिड़की खुलने से नीचे गिर पड़ा। आप प्रकट हुए और आपने मुझे उठाया। मैं हँस रहा था कि मालिक! अब मेरे जीवित रहने की क्या आवश्यकता है और सोच भी रहा था कि शायद मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा। मेरे हाथ में मामूली सी चोट अवश्य आई। आप की असीम कृपा से अब स्वस्थ हूं और मुझे यक़ीन है कि आप पूर्ण पुरुष जगत् आधार हैं। मैं और क्या लिखूं। अब मेरे शरीर को कुष्ठ पड़े अगर मुझे मालूम हो कि मैंने उसको सम्भाला और बचाया हो। मैं शपथपूर्वक बताता हूं कि मैं नहीं गया और न ही मुझे मालूम है।

यही वह भेद है जिसको बताने के लिए मैंने कार्य किया है, यह मानव मन्दिर बनाया है, प्रति दिन का स्यापा पीटा है और अपनी जान को मुसीबत में डाला है। क्यों डाला है? केवल संसार को यह

बताने के लिए कि ऐ मूर्ख इन्सानो ! इन गुरुओं ने और इन पन्थों ने तुम्हारी आँखों में धूल डाल कर तुमको मूर्ख बनाया है और तुम्हारी दौलतों को लूटा है, इन्हीं ख्यालात से तुम लुट गये या नहीं लुट गये ? क्या कोई महात्मा, कोई पन्थ, कोई गद्दी स्पष्ट बताती है ? सभी हम को अपने ख्याल में फँसाने की कोशिश करते हैं और हम इस ख्याल में फँस कर लुटने में मज़ा लेते हैं। तो संतमत का भेद क्या था ?

यही कि फ़कीर चन्द ! तेरे मन में जितने ख्यालात उठते हैं, जितनी कल्पनाएँ व शक्लें पैदा होती हैं ये सब काल और माया हैं। जब से मुझे मन के इस रूप का पता लगा तो कर्त्ता जो कर्म से न्यारा है उसकी और अपने रूप की समझ आई कि मैं कौन हूं। तब से मैं मन के चक्कर से ऊपर आनन्द-मय तथा खुश रहता हूं, चिन्ता और फ़िक्र नहीं करता और जब मन में आता हूं तो मन के रूप का पता लग जाने के कारण जैसे हम किसी पागल की बातों को सुनकर उसकी परवाह नहीं करते, चिन्ता

नहीं करते बल्कि हँस छोड़ते हैं ऐसे ही मैं मन में रह कर मन के चक्कर या चालों में नहीं फँसता। मन के चक्कर में आकर रोता, पीटता, दुःखी और अशान्त नहीं होता, बल्कि उसमें Enjoy करता हूं, इसी का नाम जीवन्मुक्त अवस्था है। जिसको यह समझ आ जाये उसको ज्यादा अभ्यास व मेहनत करने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब मेरा हाल दाता दयाल के शब्दानुसार है :—

"धन्य धन्य धन्य राधास्वामी"

"गुरु नाम में हिया जियां उमगाऊं।
गुरु दर्स पाये मन उमगाऊं॥"

गुरु नाम क्या था? गुरु ने एहसास किया, बताया कि ऐ फ़कीर चन्द, तू कौन है। गुरु का दर्शन एक तो बाहरी है, दूसरा गुरु के ज्ञान व अनुभव का दर्शन है। अनुभव हो गया कि मैं कौन हूं, दुनिया क्या है, कैसे बनती है, कैसे बिगड़ती है :—

"गुरु रूप में दर्स दियो, जग में।
अपना के किया मुझ को मग में।"

मैंने मालिक के दर्शन किये। मैं मालिक के दर्शन के लिए 24 घण्टे रोया था। महर्षि जी के रूप में मुझको दर्शन दिये गये। वो क्या कर गये ? रास्ते पर लगा गये। किस मार्ग पर आ गया ? मन, माया के रूप का ज्ञान हो जाने से मन रूपी चक्कर से अलग हो गया तब मुझे अपने घर में जाने का सीधा रास्ता मिल गया और वह रास्ता प्रकाश और शब्द है :—

"तेरा चरण छोड़ नहीं कहिं जाऊं।
धन्य धन्य धन्य राधास्वामी"।

दुनिया चरण के शब्द से महर्षि या किसी और गुरु के चरण समझती है। दीवानो, गुरु शब्द स्वरूप है और गुरु के चरण तुम्हारे अन्दर प्रकाश और नूर हैं। यही राधास्वामी मत में राय सालिग राम साहिब ने स्पष्ट लिखा है, 'गुरु शब्द स्वरूप है उसके चरण प्रकाश हैं।' दुनिया बाहरी चरणों को पूजती-पूजती मरी लेकिन किसी को कुछ प्राप्त नहीं हुआ और यही सनातन कहता है। सनातन धर्म की शिक्षा में और राधास्वामी मत में कोई भेद

नहीं है, इन संतों के शिष्यों को स्वयं पता नहीं। कल मैंने दाता दयाल की एक किताब पढ़ी तो आँख खुल गई। उन्होंने लिखा है कि यह पंचाग्नि का साधन वेद मार्ग में था, पंचाग्नि का तप करते थे वह बदल कर पाँच देवताओं का आया, वही दूसरी शक्ल में अब पाँच नाम के रूप में आया हुआ है। जो वेद का मार्ग था वही बदल-बदल कर यहाँ आया है। इस लिए मैंने अनामीधाम से आकर 'इन्सान बनो' की आवाज़ उठाई है ताकि हम असलियत को समझ कर धार्मिक विरोध से ऊपर आयें और मन रूपी चक्कर में बँट न जायें। कई कहते होंगे कि मैं अहंकारी हूं। अरे, मैं ही अनामीधाम से नहीं आया बल्कि तुम सब अनामीधाम से आये हो। अनामीधाम है क्या :—

"अदम से जानबे हस्ती, तालाश यार में आये।"

पहले शून्य था, उसमें से हम सब निकल कर आये हैं हमारा आद तो वो अनामीधाम था। मगर हम अज्ञान में फँसकर बँट गये और धार्मिक झगड़े

होने लगे। ये धार्मिक झगड़े क्यों होते हैं ? क्योंकि इनको हक़ीक़त का पता नहीं है। यह संतमत हक़ीक़त को बताने के लिए आया था मगर उन्होंने आकर और भी बाँट मचा दी। गुरु नानक साहिब के ही उदासी, अकाली, निहंग आदि कई मत बन गये। राधास्वामी मत में भी स्थान-स्थान पर गद्दियाँ बन गईं। अफ़सोस ! संतों की तालीम को किसी ने नहीं समझा :—

'तेरा सुमिरन, भजन, ध्यान नित हो,
धन्य धन्य धन्य राधास्वामी।'

राधास्वामी कौन है ? वह अकाल पुरुष, वह परम तत्त्व आधार, उसका पता बताया। तो किस गुरु का सुमिरन करते हैं ? उसका ध्यान और उस का भजन कैसे करोगे ? प्रकाश उसके चरण हैं। प्रकाश को पकड़ो, शब्द को पकड़ो, शेष सभी बातें पक्षपात में ले आती हैं तथा झगड़े डाल देती हैं। संत कबीर ने इस खण्डन के शब्द में यह साबित किया है कि राम और कृष्ण मानव थे उनको वह मालिक नहीं मानते। अब मेरा प्रश्न है कि जो

कबीर साहिब, राधास्वामी या किसी गुरु को मानते हैं इनके कथमानुसार हम भी ग़लती खाते हैं। इष्ट सर्वदा पूर्ण होता है। पत्थर की मूर्ति है हम यह तो नहीं कहते कि हमने इसे बनाया है। इष्ट Ideal है, वह पूर्ण है। हम उसको किसी रूप में मान कर चलते हैं :—

"तेरा श्रवण मनन निदिध्यासन हो,
धन्य धन्य धन्य राधास्वामी।"

मगर हम क्या करते हैं? हम तो यही कहते हैं कि इस दिन यह गुरु पैदा हुआ था, जिस तरह मैं आज पैदा हुआ तो उन्होंने अज्ञानी बनकर मुझे दूध और दही के साथ नहलाया। मेरे पैदा होने से तो कुछ नहीं होता। वह तो न पैदा होता है न मरता है। बाहरी गुरु की केवल इतनी ही इज्ज़त है कि उसने आकर उसका पता दिया, जो ज्यादा मान करते हैं वे ग़लती में हैं। गुरु ज्ञान, समझ और बिवेक का नाम है। तो किसी सुलझे हुए गुरु के पास जाकर असली गुरु तत्त्व को समझने की कोशिश करो। तो सुमिरन, ध्यान, भजन किसका है? उस मालिक और ज़ात का।

कैसे करोगे ? शब्द और प्रकाश बस यही है राज़, Reality यह है जो मैंने 94 वर्ष की आयु में समझी :—

धरूं मन में मैं तेरा रूप सदा,
तू दाता दीन दयाला है, भक्तों का तू प्रतिपाला है।

दुनिया में देखो कितने भक्त हैं। क्या फ़कीर चन्द या कोई और गुरु सारे भक्तों की रखवाली करता है ? नहीं ! वह एक शक्ति है, वह एक परम तत्त्व आधार है, वही भक्तों का रक्षक है और प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर रहता है। तुम सच्चे बनो, सच्चे बन कर कोई भी चीज़ मांगो प्रकृति कोई न कोई तरीक़ा अपनायेगी जिससे तुम्हारी मांग पूरी होगी। जैसे मैं 24 घण्टे रोया कि मालिक, मुझे मानव रूप में मिल जा। जहाँ से मुझे मिलना था मिल गया। मेरा यह विश्वास कि महर्षि जी मालिक के अवतार हैं या मालिक महर्षि जी के रूप में मेरे लिए आया था यह टूट भी गया था। जब कि मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होने लगा तो मैंने सोचा कि दाता दयाल भी नहीं आये थे, यह मेरा अपना ही भ्रम

था मगर वह फिर पक्का हुआ। तुम पूछोगे कि वो कैसे? कन्नौज में एक माई थी, मैं तो जानता नहीं था लेकिन वह अपने दिल से मुझे गुरु मानती थी, उसने मुझे कहा था कि कन्नौज आना, मैंने कहा कि मैं गाड़ी में आऊंगा। जब मैं कानपुर पहुंचा तो वहां संत कृपाल सिंह का एक चेला रत्नचन्द होता था उसने मुझे उतार दिया और कहा आप यहां ठहरिये, कल मैं अपनी कार दे दूंगा आप चले जाना। अब वह तो गाड़ी में इन्तज़ार करती थी लेकिन मैं गाड़ी में नहीं गया, रात कानपुर में रहा। तो रात को उस माई ने देखा कि बाबा कार में आ रहा है, काली कार है और उनके साथ एक औरत है और कार के आने के लिए गांव में रास्ता नहीं है। उस के चार लड़के थे। उसने सुबह चार बजे चारों लड़कों को बुलाया और कहा कि बाबा कार में आ रहा है, काली कार है और उनके साथ एक औरत है। कार के आने के लिए गांव में रास्ता नहीं है, रास्ता बना दो। उन चार लड़कों ने उसके कथनानुसार जो रास्ता जाता था उसको खुला कर दिया। जब मैं वहां गया तो मैंने सोचा कि भई यह क्या हुआ? इस औरत को कैसे मालूम हुआ कि मैं कार में आ।

रहा हूं। तो मेरे दिल ने माना कि जो आदमी जिस चीज़ से सच्चा प्यार करता है उसका सच्चा प्रेम होने के कारण उसको उसका पता लग सकता है, मेरे दिल में यह यक़ीन हो गया। महर्षि जी मालिक के अवतार थे या नहीं थे मेरा विश्वास ही मेरे लिए सब कुछ था। किसी भी ढंग से मालिक का विश्वास व ध्यान किसी रूप में पक्का होना ही अभ्यासी की प्रारम्भिक उन्नति का भेद है।

दूसरी घटना सुनो! मैं यहां कारखाने में काम करता था। मैं आ रहा था तो कुत्ते ने काटा। मैं डाक्टर के पास गया डाक्टर ने कहा कि कुत्ते को बांध लो अगर सात दिन तक कुत्ते को कुछ न हुआ तो फिर कुत्ते को छोड़ देना। नारायण दास ने कुत्ते को बांध लिया। मेरे पास मेरा एक नौकर था। उसका पिता कर्मचन्द तीसरे दिन अपने गाँव से मेरे पास आया। कहने लगा बाबा जी! मैंने देखा आपको कुत्ते ने काटा है, आपको क्या हालत है? मैंने कहा तुमको किस ने बताया? कहने लगा मैंने ख्याल किया मेरे दिल में आया कि कुत्ते ने आप को

काटा है। तो मेरे मन में आया कि भई इसको किसने बताया। इस से साबित हुआ कि जो आदमी जिस चीज़ से प्रबल प्यार करता है वह उससे सम्बन्धित सब कुछ जान सकता है। तो इस विचार ने मुझे फिर बदला कि भाई मैं तो मालिक को मिलना चाहता था, जहां से मेरा काम बनना था मुझे पता लग गया और दाता दयाल पर जो मेरा विश्वास टूटा हुआ था (कि वो मालिक के अवतार नहीं हैं) वह विश्वास दोबारा क़ायम हो गया, अब आपने मेरी बात को समझा या नहीं समझा ? तो आप लोग आ जाते हैं मैं दुनिया को कहना चाहता हूं कि ऐ इन्सान ! तू अपनी आत्मा में सच्चा बनकर उस मालिक के आगे पुकार किया कर, वह एक शक्ति है। जहाँ तुम्हारा काम बनना होगा वो प्रकृति स्वयं कोई न कोई प्रबन्ध करके तुम्हारा काम कर देगी। यह है जो मैंने अपनी 94 वर्ष की आयु में समझा है 'माँगो और मिलेगा'। सच्चे बनो। आपकी सच्चाई और आपके अन्दर सच्चे प्रेम की आवश्यकता है। जहां तुम में किसी बात की भी सच्चाई आई प्रकृति

स्वयं दयालु है तुम्हारा कोई न कोई प्रबन्ध कर देगी। यह है जो मैंने समझा है।

"तेरे चरण में तन मन बिसराऊं,
धन्य धन्य धन्य राधास्वामी"।

तन, मन किस में बिसराऊं? अपने अन्दर प्रकाश को पकड़ कर प्रकाश में लय हो जाओ। अपने आप तन, मन सब बिसर गया। तो जो आदमी प्रकाश और शब्द का साधन करता है केवल उसी का बेड़ा पार होगा, वही पार होगा बाकी जो रूप का ध्यान करते रहते हैं उनको आनन्द तथा प्रसन्नता मिलेगी। उनके सांसारिक काम हो जायेंगे मगर वे आवागमन से नहीं बच सकते और अपने घर नहीं जा सकते। यह केवल हम को मूर्ख बनाया गया है कि नाम ले जाओ अन्त समय गुरु आकर तुमको ले जायेगा। मेरे साथ में भी ऐसी घटनाएँ होती हैं मगर मैं जब जीवित नहीं जाता तो मैं कैसे मानूं! यह केवल हमको अन्धकार में रखा गया है तथा झूठे वायदे किये गये हैं, इस लिए अगर पार जाना चाहते हो तो प्रकाश को पकड़ो। प्रकाश गुरु

के चरण और शब्द गुरु का रूप है। इस तरह बेड़ा पार होगा। गुरु दाता अवश्य है मगर वो तुम्हारे मन का विश्वासरूपी गुरु है और जो इस तरह मन के चक्कर में रहते हैं वे मन से तो नहीं निकले :—

'राधास्वामी ने की है दया भारी,
गुरु चरण कमल पर बलिहारी।'

बाहरी गुरु ने बड़ी भारी दया की। क्या दया की? राज़ दे दिया और भेद मिल गया। मैं सत्य बात बता चला उस पर अमल करना तुम्हारा काम है। गुरु का काम मार्ग दिखाना है, तरीक़ा बताना है, शेष अमल करना तुम्हारा काम है :—

गुरु वचन सुनूं और नित्य गाऊं,
धन्य धन्य धन्य राधास्वामी।
गुरु वचन हित चित्त से गाऊं,
धन्य धन्य धन्य राधास्वामी।

गुरु नाम क्या है? धुनात्मक नाम व शब्द जो हमारे अन्तर में है। आज सारी रात मैं शब्द

में रहा क्योंकि सुबह मैंने सत्संग देना था। तो वहां मुझे क्या मिला ? आनन्द व खुशी। लेकिन मैं कोई खुदा नहीं हो गया । वहम तथा भ्रम चला गया।

तो आज मेरा जन्म दिवस था। मैंने अपनी 94 वर्ष की ज़िन्दगी में जो कुछ सीखा वह तज़ुर्बा बता दिया मगर मैं यह दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने कहा है यह ठीक है मैंने अपनी नीयत से जो समझा वो कहा,हो सकता है,कि मैंने ग़लत समझा हो। दूसरे महात्माओं को अधिकार है कि अगर मैं ग़लत हूं तो मेरे विरुद्ध आवाज़ दें। मैंने उस मालिक की तलाश में अपना सारा जीवन खो दिया। मालिक मेरे लिए क्या निकला ? एक अवस्था है जहां मैं चला जाता हूं, यहां मुझे अपनी होश नहीं रहती कि मैं हूं या नहीं हूं। मैंने मालिक को यह समझा है और मेरी समझ में कुछ नहीं आया। शुभ भावनाएँ देता हूं, दुःखी लोग आते हैं यही चाहता हूं कि दाता तूने यह काम सौंपा था, यह स्यापा मेरे गले डाल दिया । मेरे कर्म खोटे थे। अब ये

दु:खी आते हैं इनका भला हो जाये। बस मैं इतना ही कर सकता हूं और मेरे पास कुछ नहीं।

सब को राधास्वामी !

---

# नोट

1. तुम अपने आप की इज्ज़त करना सीखो। तुम्हारे अन्दर सब कुछ है, मांगो और सब कुछ मिलेगा। यह मैं सच्चाई की सर्वोत्तम बात कहता हूं। वह मालिक सब के अन्दर है। Crave for it and you will get it. सच्चे बन कर मांगो मिलेगा

बस, कहीं जाने की आवश्यकता नहीं तुम्हारे अन्दर ही खोपड़ी में शिवजी का असली मन्दिर है। साँसारिक कार्य करो मगर केवल मन के रूप को समझ कर कि उसका स्वभाव ही ऐसा है उसमें फँसना नहीं। आदमी कुछ न करे केवल जब अकेला बैठे तो सच्चा बन कर उसको अर्पित करने का प्रयत्न करे, अपने आप रास्ता खुल जायेगा। मैंने रास्ता ही साफ कर दिया।

2. यह संतमत का जितना खण्डन है यह केवल आवागमन से बचने और अपने असली घर में जाने के विचार से किया गया है। इस संसार में रहने के लिए संकल्प व विचार काम करता है जो हम को राम की ज़िन्दगी से, कृष्ण के जीवन से, मुहम्मद साहिब या और दूसरे बज़ुर्गों से, जैनियों से, बौद्धों से ज़िन्दगी गुज़ारने का संस्कार मिलता है। अत: इन सब की पूजा, इज्ज़त और मान करना जब तक इन्सान का जीवन है, आवश्यक है।

———

हज़ूर मानव दयाल जी महाराज

# सत्संग परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 26-12-80

मस्तरामसुतं देवं फ़कीरचन्दं पण्डितम्।
परमसन्तं दयालुं च नमामि जगद्गुरुम्॥
गुरुर्ब्रह्मा गुर्रुविष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

श्री मस्तराम जी के घर उत्पन्न हुए, साक्षात् देवताओं के भी देवता परमतत्त्व फ़कीर चन्द जी महाराज परम सन्त, परम दयाल जो जगद्गुरु हैं उनके चरणों में मेरा नमस्कार। गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही परमेश्वर महादेव हैं और गुरु ही परमतत्त्व निधि हैं, ऐसे गुरु को नमस्कार है। परमतत्त्व की निशानी क्या होती है? वह यह होती है कि प्रत्येक व्यक्ति जो उनके साथ होता है वह कहता है कि वे मुझसे ही सब से अधिक प्रेम करते हैं

कोई नहीं कहता कि मुझ से कम प्रेम करते हैं। यह परमतत्त्व व सच्चे गुरु की निशानी होती है। दूसरे उनके पास बैठते ही शान्ति की किरणें आयेंगी। तीसरे वह हमेशा खुश रहता है।

मेरे आदर्श परम दयाल जी के प्रिय सत्संगी भाई बहिनो! उन्होंने मुझे सबसे पहिली यह आज्ञा दी थी कि तू पहिले खुद अपने आप साधना करना। दूसरी गुरु की आज्ञा यह है कि बहुत सीधी-सादी भाषा में बोलना परन्तु पढ़ाता था न! मेरी आदत थी कि बड़ी उच्च कोटि के बड़े-बड़े शब्द बोलता था। क्योंकि वहां बड़े-2 लोगों में उनकी भाषा में बोलना आवश्यक होता है परन्तु यहां मैं कोशिश कर रहा हूं कि सीधी-सादी भाषा में बात करूं और गुरु की अपार कृपा की धारा से दिन प्रतिदिन मुझ में एक नई आदत पड़ रही है कि मैं बहुत ही सरल शब्दों में आपसे बात करूं।

अमरीका में पिता जी के पास जब मैं रहा, हंसराज जो यहां बैठे हैं ये साक्षी हैं, वह रात,

घई साहिब ! ऐसी रात थी कि मुझे लगता है कि कई जन्म-जन्मान्तरों के बाद मैं उनके पास रहा । मैं कहता हूं कि उस रात के लिए ही पिता जी वहां पधारे थे । उस रात को मैं बयान नहीं कर सकता । उन्होंने वहां शरीर छोड़ने का Plan आठ साल पहिले ही बना रखा था, यह मत समझिये कि यूंही वो चले गये थे । यह कैसे, बताऊं आपको ?

डा० रामदेव राव जी के पिता राजेश्वर राव जी पिता जी से दीक्षित हैं और पिता जी के भक्त हैं । जब यह छोटा सा बच्चा था उस समय से पिता जी के पास जाता था । यहां डाक्टरी पढ़ने के बाद पिता जी से अमरीका जाने की आज्ञा ली । जो डाक्टर अमरीका जा करके Practice करना चाहे या नौकरी लेना चाहे उस डाक्टर को वहां के क़ानून के अनुसार दो साल वहाँ ट्रेनिंग व शिक्षा लेनी पड़ती है, हस्पताल में रहना व सीखना पड़ता है। वहां पर हर एक विभाग के अलग-अलग विशेषज्ञ डाक्टर होते हैं जिनको अपने-2 विभाग की विशेष जानकारी होती है कोई हृदय का डाक्टर है कोई मस्तिष्क का डाक्टर

है, हर प्रकार के डाक्टर हैं। रामदेव राव एक ऐसे डाक्टर के नीचे काम कर रहा व सीख रहा था जो हृदय की गति अर्थात् Heart का ख़ास डाक्टर था। और जिस हस्पताल में सीखने गया उसका नाम है मर्सी हस्पताल। मर्सी का क्या मतलब है जानते हैं आप ? मर्सी का अर्थ है दया। हैं ! क्या ये सब बातें ऐसे ही हो गईं कि परम दयाल दया के हस्पताल में जायें, नाम भी दया हो उसका ? आप सोचो, वह जो मर्सी हस्पताल है बहुत पुराना है और वह है भी एक धार्मिक हस्पताल, क्यों कि कैथोलिक लोगों ने चलाया हुआ है। उसमें कैथोलिक माताएं रहती हैं और जो मरीज़ होते हैं उनके लिए वे प्रार्थना भी करती हैं परन्तु वह हस्पताल चूंकि बहुत पुराना है उसमें बहुत पुराने-२ अच्छे-2 महा अनुभवी डाक्टर काम करते हैं। रामदेव को मालूम था कि दो साल मैं यहाँ जब सीख लूंगा तो यहां तो भई बड़े-2 धुरन्धर डाक्टर हैं, यहां तो कोई मुझ जैसे नये आदमी को लगा नहीं सकता, दस-बीस साल उस का अनुभव हो तब तो लगायें। वह कहता था कि जब उसके दो साल पूरे हो गये तो उसने पिता जी को चिट्ठी

लिखी। वह चिट्ठियां तब लिखता था जब कोई काम होता था:—

सुर, नर,मुनि सब की यह रीती कि स्वारथ वश करें प्रीती।

ठीक है, स्वार्थ के लिए भी लिखो यदि सन्त पूर्ण पुरुष है आपके स्वार्थ को वह कभी रोक नहीं सकता, आपके स्वार्थ को भी देगा। उसने चिट्ठी में पिता जी को कहा कि महाराज मालिक, दो तीन शहर हैं जहां मैंने अर्ज़ियां भेजी हैं, यह बताओ कि इन तीन चार जगहों में से कौन सी जगह मेरे लिए अच्छी होगी ? उसने अर्जियां दीं तो डाक्टर से जा करके कहा कि मेरे लिए सिफ़ारिश लिखो, सिफ़ारिश लिखवानी पड़ती है। उस ने बड़े डाक्टर से दो तीन जगह सिफ़ारिश की चिट्ठियां लिखवाईं तो इतने में पिता जी ने एक लाईन में अंग्रेजी में उसको उत्तर दिया कि Stay where you are अर्थात् जहां पर तुम हो वहीं मर्सी हस्पताल में ही रहो। वह कहने लगा, चिट्ठी आई तो मैं हैरान रह गया। मैंने दिल में कहा पिता जी यह क्या कर रहे हैं! क्या यह चाहते हैं कि मैंने दो साल सीखा और सीखने के लिए यहाँ रहूं ?

यहां मुझे कौन पूछता है ? यह उसके मन में ख्याल आया। इतने में उसने किसी और जगह नौकरी के लिए अर्ज़ी भेजनी थी तो उसके लिए बड़े डाक्टर के पास गया और उससे प्रार्थना की कि महाराज ! आपने तीन जगह मेरी सिफ़ारिशें भेजी हैं तो एक सिफ़ारिश की चिट्ठी और भी लिख दीजिये। तो वह डाक्टर उससे कहने लगा कि रामदेव ! तू सब जगह अर्ज़ियाँ भेज रहा है क्या तुम्हें यह मर्सी हस्पताल पसन्द नहीं है ? अब आप देखो कि पिता जी को चिट्ठी के बाद यह असर हुआ ! चिट्ठी का असर होता है !! यदि आप साधन में अंग से अंग लगायें और अगर आपके अन्दर फुर्ती नहीं आई है, अर्थात् धारा नहीं आई है तो आप नपुंसक हैं, पिता जी नपुँसक नहीं हैं। कोई भी ऐसी बात नहीं है जो उनके नाम से आप सिद्ध करना चाहो और वह न हो, यह असम्भव बात है। वहां अमरीका में जो मांस खाने वाले हैं उनकी सिद्धि हो रही हैं, आप तो सब शाकाहारी हो। पिता जी को देखते ही उनका रंग, रूप बदल जाता है और वहां भी लोग मांस को छोड़

रहे हैं। क्या पिता जी की हस्ती की कोई तुलना कर सकता है ?

तो रामदेव कहता है कि उस डाक्टर ने कहा तुम्हें मर्सी हस्पताल पसन्द नहीं है ? रामदेव ने बताया कि मैं जवाब नहीं दे सका, मैं तो घबरा गया कि यह कह क्या रहे हैं। उस डाक्टर ने समझा कि इसको तनख्वाह ज्यादा चाहिए, तो वह डाक्टर कहता है कि रामदेव ! भई हम अभी तो तुम्हें सारे दिन के लिए नहीं बल्कि Part time अर्थात् आधे दिन के लिए लगाते हैं, घबराओ मत ! हम तुमको पैंतीस हजार डालर देंगे। आप सोचो, लोगों को तो पच्चीस हजार डालर सारा दिन काम करने के भी नहीं मिलते। अच्छा भई, तुम अगर इस से भी घबराते हो तो अपना प्राइवेट प्रैक्टिस भी कर सकते हो, रामदेव बोला नहीं ! कहता है 'मौनं सर्वार्थसाधनम्' अर्थात् चुप रहने से सब कुछ सिद्धि होती है।

यहाँ आपको एक कथा सुना दूं। आपने सुना होगा कि कालिदास बड़े भारी कवि हुए हैं। कालिदास कवि ही नहीं थे बल्कि एक सन्त भी थे। कालिदास

की रचनाओं को पढ़ो तो आप देखोगे कि उनका दिमाग़ कहां-कहां उड़ान भरता है। यह भारत भूमि सन्तों की भूमि है, सन्त कोई अभी नहीं हुए, शुरू से ही ऋषि, मुनि आदि बहुत सन्त हुए हैं। सनातन धर्म और सन्तमत एक है। तो कालिदास कैसे इतने विद्वान् बने जब कि वो बिलकुल अनपढ़, अक्खड़ और अशिक्षित थे वह तुम्हें मैं बताता हूं। विद्योत्तमा नाम की एक राजकुमारी थी, उसका एक गुरु था जो उसको पढ़ाता था। पढ़ाते-पढ़ाते जब वह उससे दर्शन अर्थात् परमात्मा या मालिक की बातें करता तो वह चूंकि बहुत विदुषी थी, उससे भी ज्यादा समझती थी इस लिए कई बार उससे उस का मतभेद हो जाता था। जो असली गुरु होता है उसका अगर मतभेद होता है तो उसे क्रोध नहीं आता बल्कि वह मतभेद को समझ कर बड़े प्यार से बात करता है। पिता जी की बहुत ऐसी बातें मेरे साथ हुईं, उन्होंने मेरी बहुत परीक्षा ली। आप समझते हैं कि मैं अमरीका में बैठा था तो उनके साथ नहीं था ? ऐसी बात नहीं है बल्कि 18, 19 साल उन्होंने मेरी परीक्षा ली, वो निरन्तर मेरे साथ रहते थे।

तो एक बार बहस हो गई और विद्योत्तमा ने गुरु की बात नहीं मानी। गुरु क्यों कि पूरा सन्त तो था नहीं उसमें ज़रा अहंभाव था। जो पूरा सन्त होता है उसमें अहंकार नहीं होता और वह कभी किसी से घृणा कर ही नहीं सकता क्यों कि वह जानता है कि हर एक में मालिक की धार है तो वह घृणा किससे करे। मुझे बताओ कि जिसके हृदय में वह नहीं है? परन्तु उस गुरु ने देखा कि उसकी जो शिष्या थी उसने उसकी बात को माना नहीं इस लिए अपने मन में कहा, अच्छा देखूंगा मैं इस का बदला लूंगा। जहां बदला व निन्दा है वहां काल है परन्तु निन्दा की परवाह मत करो। कबीर साहिब ने कहा है :—

कबीर निन्दक ना मरे जीवे आद जुगाद।
हम तो सत्तगुरु पाइया निन्दक के परसाद॥

क्या निन्दक के प्रसाद से सत्तपुरुष मिल सकता है? मिल सकता है। यह निन्दा तुम्हारी परीक्षा है। कैसे? अगर तुम गुरु से प्यार करते हो और दूसरा कहता है कि तुम नहीं करते हो, तो अगर तुम नहीं करते हो तो दूसरा ठीक है। यदि निन्दक निन्दा करता

और तुम्हारे में दोष है तो तुम डरोगे। अगर तुम्हारे में दोष नहीं है तो निन्दक आपकी जितनी निन्दा करेगा उतना आपका प्यार मालिक से बढ़ेगा। मीरा बाई का हाल आपने सुना होगा, मीरा का प्यार मालिक से था। मीरा का प्यार उस कृष्ण से नहीं था जिसको आप शरीरधारी कहते हैं बल्कि वह तो बार-बार अजर, अमर और अविनाशी कहती थी क्योंकि वह मालिक को अजर, अमर जानती थी। क्या उसकी निन्दा नहीं हुई थी? निन्दा जितनी हुई उतना प्यार, प्रेम मालिक से बढ़ता गया और परिणाम स्वरूप मालिक में मिल कर ग़ायब हो गई, शरीर भी नहीं रहा। तो अगर कोई सच्चा प्रेमी है, सच्चा मालिक को मानने वाला है तो वह उस निन्दा की परवाह नहीं करेगा।

तो मैं आपको यह कह रहा था कि वह गुरु काल का गुरु था परन्तु था विद्वान् इस लिए जब विद्योत्तमा ने इस प्रकार उसका अनादर सा किया तो उसने मन में ठान लिया कि मैं राजगुरु हूं। तो जब महाराज मुझे कहेंगे कि इस लड़की के लिए लड़का ढूंढो तो मैं

ऐसा अक्खड़ व भोंदू लाऊंगा जो बिलकुल कुछ न जानता होगा। वह जो अपने आप को समझती है कि मैं बड़ी विदुषी हूं तो मैं इसका बदला लूंगा और उसने ऐसा ही किया। उस राजकुमारी ने यह कह रखा था कि मैं उससे शादी करूंगी जो मेरे से वाद-विवाद करके मुझे हरा देगा अर्थात् मुझसे ज्यादा ज्ञानवान् होगा। मैं आपसे एक प्रार्थना करता हूं कि जब मैं जोर से बोलता हूं तो आप यह मत समझना कि मैं अहंभाव से बोल रहा हूं। अरे, पिता जी बुलवा रहे हैं मैं नहीं बोल रहा! मैं नहीं हूं!!

जब वह मौका आया तो वह ढूंढ़ने के लिए गया। जंगल में देखा कि एक अल्हड़ सा आदमी वृक्ष पर बैठा हुआ उसी टहनी को काट रहा है जिस पर वह बैठा हुआ है। उसने सोचा कि इससे भोंदू तो कोई और मिलेगा नहीं, वह था कालिदास। उन्होंने उस को कहा अरे भई! नीचे आ, नीचे आ। क्या है, मैं नहीं आता! अरे! बात सुन, मैं तेरी शादी राज-कुमारी से कराऊंगा। वह नीचे उतर आया और आ कर कहने लगा हां, हां क्या कहते हो, क्या बात

है ? उस गुरु ने उसको कहा कि भई ! तू मेरे साथ चल तेरी शादी राजकुमारी से कराऊंगा, परन्तु एक बात मानना। क्या बात ? चुप रहना, "मनं सर्वार्थसाधनम्" उस मूर्ख को कहा कि तू बिलकुल चुप रहना। परन्तु बिलकुल चुप भी नहीं रहना चाहिए, संसार में यदि चुप रहोगे तो फिर कुछ नहीं होगा। हमारे प्रिय डा० जौड़ा साहिब जो सच्चे हैं, बोलते हैं बोलना चाहिए नहीं तो कुछ काम ही नहीं होगा। परन्तु उसने तो धोखे से उस राजकुमारी की शादी करवानी थी इस लिए उसने उस मूर्ख से कहा कि राजकुमारी को हराने का तरीक़ा यह है कि तू बोलना मत, बिलकुल चुप रहना। वहां पर महाराजा साहिब को सूचना दे दी कि मैं एक बड़ा विद्वान् ला रहा हूं वह आपकी पुत्री से वादविवाद करके उसे हरा दे तो उस से उसकी शादी कर देना। यहां एक बात है कि गुरु जो बात कह दे उस पर चलोगे तो वह चाहे ग़लत भी हो आगे चल कर ठीक हो जायेगी। परन्तु जो गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करता वह न इस जहान का रहता है न वहां का रहता है।

मूर्ख ने उस की बात को मान लिया, मूर्ख ने जो जूते पहिने हुए थे वे बहुत फटे-पुराने थे। गुरु ने कहा भई, तू आगे चल कर राजकुमार बनने वाला है, इन जूतों को फेंक दे परन्तु उसको उन से मोह था इस लिए वह उन जूतों को एक कपड़े में लपेट कर के अपनी बगल में दबा के ले गया। वहाँ गये तो हज़ारों आदमी प्रतीक्षा कर रहें थे कि राजकुमारी का गुरु एक बड़े विद्वान् को ला रहा है। रास्ते में लोग इधर-उधर नमस्कार करने लगे और पूछा कि यह आपकी बगल में क्या है? तो बोलना तो नहीं था परन्तु उसने गलती से कह दिया॰ कण्टकाचूर्णी अर्थात् कांटों को चूर्ण करने वाली। चूर्ण अब किताब का नाम भी होता है, जिस किताब में सच्चाई का चूरा-चूरा कर दिया जाता है अर्थात् जिसमें व्याख्या की जाती है उसको भी संस्कृत में चूर्णी कहते हैं जैसे व्याकरण चूर्णी अर्थात् ग्रामर का चूर्ण। लोगों ने बहुत चूर्णी पढ़ी थीं परन्तु उन्होंने कहा भई! कण्टकाचूर्णी तो हमने कभी सुनी भी नहीं, यह तो कोई बड़ी भारी किताब होगी इस लिए उन्होंने कहा बड़ा विद्वान् है। बड़ा प्रभाव पड़

गया। केवल प्रभाव पड़ जाने से भी लोग मान सकते हैं क्योंकि उनको जब लाभ होता है तो अपने आप से होता है परन्तु वे समझते यह हैं कि गुरु से हो रहा है। मंच बने हुए थे, राजकुमारी एक मंच पर बैठी थी दूसरे पर उन्होंने उस अक्खड़ विद्वान् को बिठा दिया। तो गुरु कहने लगे देखो भई राजकुमारी विद्यातमा ! यह बड़ा भारी विद्वान् है इसका कोई मुकाबिला नहीं, विश्व में एक है। तेरे से बहस करेगा परन्तु बोलेगा नहीं। उसने कहा मैं भी नहीं बोलूंगी बिना बोले बहस करेंगे। विद्योत्तमा ने एक उंगली उठाई और उस अक्खड़ कालिदास ने दो उठा दीं, उसने जब तीन उठाईं तो कालिदास ने चार उठा दीं। विद्योत्तमा ने पाँच उँगलियाँ उठाईं उसने यूं मुक्का कर दिया तो विद्योत्तमा ने कहा महाराज ! ये बहुत विद्वान् हैं मैं हार गई, इनसे शादी करूंगी। शादी हो गई। जब उससे पूछा गया कि तूने यह हार क्यों मानी ? उसने कहा कि मैंने उस से कहा कि ईश्वर एक है तो उसने उत्तर दिया कि ईश्वर ही नहीं ईश्वर के साथ प्रकृति भी है, प्रकृति पुरुष दो हैं। तब मैंने उससे कहा कि प्रकृति

के अन्दर तीन गुण होते हैं सत्, रजस् और तमस् । तो उसने मुझे यह बताया कि ये बातें वेदों में लिखी हुई हैं इस लिए विद्वान् हुआ । जब मैंने कहा कि पाँच तत्त्व होते हैं पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तो उसने कहा कि यह क्या कहती है, सभी एक परमतत्त्व से निकले हैं, उसने एक मुक्का दिखाया था न ! इस लिए यह जीत गया । जब उस का विवाह हो गया और उससे बात करने लगी तो उसको तो कुछ नहीं आता था, काला अक्षर भैंस बराबर था । उसे बड़ा दुःख हुआ परन्तु क्योंकि वह पतिव्रता थी, पतिव्रता पति को ही मालिक मानती है तो उसने यह नहीं कि उसको छोड़ दिया बल्कि उसने उसको पढ़ाना शुरू किया और ऐसा पढ़ाया । ऐसा पढ़ाया कि वह बड़ा भारी विद्वान् हो गया । हमारी संस्कृति में तलाक़ नहीं है इसका हमैं बड़ा गौरव है । इससे हम अपने आप को समझते हैं कि हमारा देश ऊँचा है और रहेगा । यही नहीं कि आप साधु, सन्त बन कर ध्यान लगा कर ही ऊपर जा सकते हैं, स्त्री पतिव्रता हो तो भी वह परम-तत्त्व पर पहुंच सकती है ।

तो मैं कह रहा था कि चुप रहने से भी कभी-कभी काम सिद्ध होता है और बताया कि पिता जी की चिट्ठी ने राम देव को यह कमाल दिखाया। उन्होंने आठ साल पहिले ही अमरीका में शरीर छोड़ने का Plan बनाया हुआ था। यद्यपि मैंने शरीर की दृष्टि से उनको रोकने की बड़ी कोशिश की क्योंकि शरीर में विराजमान होने से उनकी जो Radiation व लहरें थीं वे बहुत जल्दी असर करती थीं। पिता जो परमतत्त्व के अवतार हैं, थे नहीं बल्कि हैं! ऐसे गुरु, परम सन्त परम दयाल जैसे गुरु, सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाले और सर्वव्यापी जो इस समय मौजूद हैं और सर्वशक्तिमान् हैं, लागों ने उनको समझा नहीं केवल गुरु, गुरु मानते रहे या सत्तगुरु वक्त भी मानते रहे। जो अनुभव मुझे उनके साथ हुआ उस की व्याख्या नहीं की जा सकती। पिता जी ने मुझे कहा और मैं भी मानता हूं कि मैं पिता जी के साथ इस जन्म में ही नहीं बल्कि कई जन्मों में उनके साथ रहा हूं। यह मत समझिये यि एक दिन में ही उन्होंने कह दिया कि आ भई शर्मा तू यहां काम करना, नहीं! यह बात नहीं है, अभी समय नहीं

है यह पूरा बाद में बताऊंगा। आप धन्य हैं कि आपने उनके दर्शन किये, युगों में आने वाले लोग तो केवल उनके बारे में पढ़ेंगे ही पर आपने साक्षात् उनको देखा, आप बहुत धन्य हैं। मेरे प्यारे सत्संगियों! मेरे प्यारे गुरु के तुम रूप !! इस मन्दिर से अगर आपको प्यार है तो इस मन्दिर को बिलकुल ऐसे पवित्र रखना है जैसे पिता जी ने रखा है। किसी से घृणा व संकोच नहीं करना, कैसे करोगे? जब कि सब के अन्दर वही एक मालिक है। जो सच्चा प्रेमी है, सच्चा मालिक को मानने वाला है वह कभी निन्दा की परवाह नहीं करेगा।

मेरे यह सत्संग शुरू करने से पहिले आपने पिता जी का सत्संग टेप रिकार्ड से सुना, इस में उन्होंने कहा है कि मनुष्य पूर्ण है, तो जब हम इस योनि में आये हैं तो हमें चाहिए कि इस मनुष्य शरीर को सब से उत्तम मानें। पूर्णता आपके अन्दर है, यह न समझें कि आप निम्न श्रेणी में है बल्कि अपने आप को पूर्ण समझ के चलो और जो पूर्णता हमारे ऊपर पर्दे पर पर्दे, पर्दे पर पर्दे पड़े होने के कारग

छुपी हुई है उसको जगायें। इसके लिए सत्संग ज़रूरी है, सत्संग की ही सारी महिमा है। सत् का अर्थ है परमतत्त्व और संग का मतलब है उसके साथ संगति करना। सतगुरु वह है जो आपको बार-बार घिसा-घिसा कर, सुना-सुना व बता बता के आपके अन्दर एक दिन कभी ऐसा झकोला देता है कि सुमिरन, ध्यान करते रहने से एक दिन आप कहें कि ओह ! मुझे बात समझ आ गई है और तभी वह पूर्णता रूपी ज्योति की चमक आपके अन्दर जाग उठेगी।

आप बड़े सौभाग्य से इस मन्दिर में आये हैं और आपने परम दयाल जी के चरन छुये, दर्शन किये और उनके सत्संग सुने तो आप सब लोग इसी जन्म में पूर्णता हासिल कर सकते हो, वह तो आये ही इसीलिए थे। जैसे कि आपने सुना होगा कि उनके गुरु महाराज दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज ने उनके बारे में लिखा है कि वे पिछले जन्म में गुरु हरगोविन्द सिंह जी के रूप में सात हज़ार क़ैदियों को साथ ले के ही जेल से बाहर निकले थे।

वह मालिक परम दयाल है और वह सब जगह है :—

तू है सब का स्वामी सब का दाता,
जो हो जाये तेरा उसी का तू है।

उसके बनो तो सही, उसके होओ तो, वह तुम्हारे अन्दर है अन्यथा पिता जी क्यों कहते कि तुम मेरे गुरु हो ;—

वही नर जहां में सुखी है निरन्तर,
कि दिन रात जिसको तेरी जुस्तजू है।

रात दिन जिसको मालिक की लगन व लौ लगी हुई है वह क्या किसी से घृणा करेगा। मालिक की तलाश में वह गाली भी वर्दाश्त कर लेगा और दिन रात उसकी जुस्तजू करता और काम करता हुआ अपने आप को मालिक के अर्पण करता रहेगा। मैं यह बात ठीक कह रहा हूं कि हमारे डा० जौड़ा साहिब निरन्तर रात दिन लगे हुए हैं और इनको मालिक की जुस्तजू है :—

जो सब को तुम्हीं में और तुम्हें सब में देखें,
वह आशिक है तेरा और तू माशूक है ।

जो मालिक को सब में देखे वही उसका सच्चा आशिक है, सत्संग में लौ लगाओ क्यों कि इन पर्दों को हटाने के लिए सत्संग ज़रूरी है ।

. आप यह मत समझिये कि मैं अमरीका में हूं, मेरी वहां पर रहने की एक क्षण भी इच्छा नहीं । मैं यहां पर आ गया हूं, मेरा हेडक्वार्टर यहीं है, अमरीका अमरीका जाऊंगा थोड़े समय के लिए वो भी पिता जी की आज्ञा का पालन करने के लिए । आप यह मत समझिये कि मैं नहीं आ रहा । इस साल बैसाखी का जो सत्संग होगा उसमें ख़ास सत्संग दिये जायेंगे और जो कुछ मैंने पिता जी के सत्संगों से अनुभव किया है वह मैं आपको सब बताऊंगा ।

# मानव दयाल सत्संग, होशियारपुर

दिनांक 26-12-81 ( सायंकाल )

दरवेश जालन्धरी ने गाया:—

तुम्हीं हो सही जा नशीने फ़कीर ।
तुम्हीं पर है पूरा यक़ीने फ़कीर ।।
मेरे पीर मुरशद ने बख्शिश अपनी ।
अता कर दी तुमको ज़मीने फ़कीर ।।

---

मस्तरामसुतं देवं फ़कीरचन्द पण्डितम् ।
परमसन्तं दयालुं च नमामि जगद्गुरुम् ।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेश्वर: ।
गुरु: साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नम: ।।
पूर्णमद: पूर्णमिद पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

मस्तराम जी के पुत्र भगवान् पण्डित फ़कीर चन्द जी परम सन्त परम दयाल को नमस्कार जो

जगद्गुरु हैं। गुरु ही ब्रह्मा हैं गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही महेश्वर हैं, गुरु ही साक्षात् परमतत्त्व परब्रह्म हैं, ऐसे गुरु को नमस्कार।

पिता जी इस बात को बार-बार कहा करते थे कि वह परमतत्त्व पूर्ण है। हे मनुष्य! तू क्यों कि पूर्ण से निकला है, तु पूर्ण है। इस पूर्ण आत्मा को जान लेने से उस पूर्ण पुरुष का ज्ञान व साक्षात्कार हो जाता है और उससे मिल कर एक हो सकते हैं।

सबसे ऊपर के दोहे में इन्होंने अपनी हृदय की बात कही परन्तु फ़कीर की जागीर ऐसी जागीर है जो सब के लिए उपलब्ध है। फ़कीर सब के अन्दर है। और जो मैंने पहिले श्लोक पढ़ा वह मेरे से लिखा गया और मैंने यह पिता जी को सुनाया। उन्होंने मुझे थपकी दी। उनके पिता जी का नाम मस्तराम, मस्त कौन होता है जो मालिक में मस्त होता हो। ऐसे वे सब बातें जो हैं कोई ऐसे हो नहीं बनी कि ऐसे अचानक हो गई हों। उनका नाम फ़कीर, जन्म से फ़कीर थे। कहा जाता है, 'यथा नाम

तथा गुण:' जैसा किसी का नाम होता है वैसे ही उसका गुण, ख़ासियत व स्वभाव होता है।

फ़कीर कौन होता है ? फ़कीर को समझाने के लिए यह कहा गया है :—

हद से टपे सो औलिया बेहद टपे सो पीर।
हद बेहद दोनों टपे वा को कहें फ़कीर॥

हद क्या है ? हद का मतलब है हमारा देखने का, सुनने का, शरीर का जो जगत् है यह ठोस जगत् है जैसे यह दीवार है दीवार के पार आप नहीं देख सकते तो आप हद में हैं। जो हद से परे देख लेता है जैसे यहां बैठे हुए हो सकता है, यह बड़ी मामूली सी बात है कि यहां बैठ कर आप यह सोचें कि इस वक्त इन्दिरा गांधी किसी को क्या कह रही हैं। कोई बड़ी बात नहीं है, यह नहीं कि कोई ऐसा जान लेता है तो वह कोई बड़ा परम सन्त हो गया। नहीं, मामूली सी बात है। हमारे अन्दर में सब के अन्दर यह शक्ति है कि अगर वो इस

शक्ति को बढ़ायें तो जान सकते हैं। दूसरे के मन की बात को आप जान सकते हैं। अगर आपका मन साफ है तो बिना कहे हुए ही आप दूसरे के मन की बात को जान जाते हैं, मन जिसका पवित्र है। जिन दो लोगों में परस्पर प्रेम होता है वे बिना बोले ही एक दूसरे से बात करते हैं। औलिया कहते हैं जिन को लोग कहते हैं पैग़म्बर, जो बता देते हैं कि ऐसा होने वाला है। परन्तु अधिकतर जो पैग़म्बर होते हूं वे यही कहते हैं कि कोई आपद्धि आने वाली है, यह होने बाला है, यूंही कह देते हैं। उनके अन्दर कुछ होता है कि वह हद से बाहर, क्या मतलब ? कि आगे आने वाली दूर की बात को कह देते हैं। वैसे प्रत्येक व्यक्ति कह सकता है, किसी दिन मैं इस पर सत्संग दूंगा। आपके मन में भी ऐसी अवस्था आ सकती है कि आप कह सकते हैं। पिता जी कहते थे, वो तो और ढंग से कहते थे तो ऊंची चीज़ थी। इस मन से भी जो ऊपर है वह प्रकाश, कारण शरीर है। जो कारण शरीर तक पहुंचता है, प्रकाश देखता है, मन से ऊपर बेहद में चला गया है वो तो हुआ पीर, मुरशद, गुरु। परन्तु

जो हद, बेहद दोनों टपे, हद से भी, शरीर से भी, मन से भी, आत्मा से भी, आत्मा से भी परे जो चला जाता है, वो हमारा प्यारा फ़कीर है। कहां फकीर का मुकाबला! पूर्ण पुरुष है फ़कीर। कबीर साहिब का शब्द है :—

सखिया वा घर सब से न्यारा, जहाँ पूर्ण पुरुष हमारा।
जहाँ नहिं सुख दुःख सांच झूठ नहिं, पाप न पुण्य पसारा।
नहीं दिन रैन चन्द नहिं सूरज बिना ज्योति उजियारा।

कबीर साहिब कहते हैं 'पूर्ण पुरुष हमारा' आपका, मेरा, सबका। एक है पुरुष, दूसरा है पूर्ण पुरुष। पुरुष है आत्मा, पूर्ण पुरुष है परम पुरुष। एक है प्रकृति। प्रकृति क्या है? यह जो ठोस चीज़ है जिसे द्रव्य या मादा कहते हैं, जैसे यह सारे जगत् में प्रकृति है, सूर्य, चाँद सितारे, आकाश पृथ्वी जल, वायु, अग्नि यह सब मादा (Matter) है। मादे का भी नाश पूरा नहीं होता जैसे आप लकड़ी को जला दें, कोयला बन जायेगा। कोयले को फिर जलायें तो राख बन जायेगी। वह शक्ति, वह ताक़त जो पहले लकड़ी थी, फिर कोयला बनी, फिर

राख बन गई, अब राख में भी शक्ति है। उस राख को अगर आप देखें तो उसके अन्दर छोटे-2 ज़र्रे होते हैं जिसको मौलिक्यूल कहते हैं और मौलीक्यूल ज़र्रे के भी सब से छोटे ज़र्रे को अणु कहते हैं। (Atom) क्या होता है ? अणु में एक केन्द्र होता है। उसके चारों और इलैक्ट्रोन प्रोटोन होते हैं। अब साईंस ने क्या देखा ? उन्होंने कहा कि अणु के अन्तर भी शक्ति है और यदि उसमें से उसके केन्द्र वाली वस्तु को निक ल दिया जाये तो उसके अन्दर शक्ति और प्रकाश पैदा होता है। तो यह मादा या प्रकृति है। और प्रकृति या प्रकाश से सारा जगत् पैदा होता है। प्रकृति के तीन गुण होते हैं जिनको कहा गया है सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण अर्थात् प्रत्येक वस्तु की तीन प्रकार की उसकी शक्तियां हैं या Motion व गति है। हमारी पृथ्वी की काया शरीर, भी इन तीनों से बनी है और मन भी तीन प्रकार का है। सतोगुणी मन प्यार वाला होता है, लोगों को मिलाने वाला होता है और जो मन तमोगुणी होता है वह नीचे को जाता है। जो रजोगुणी होता

है वह क्रियाशील होता है, उसमें actviity होती है। है इस तरह यह जो सम्पूर्ण जगत् है, सूर्य, चांद, सितारे, प्रकाश, हमारा शरीर, हमारा मन, हमारी बुद्धि यह सब प्रकृति है। बुद्धि भी तीन प्रकार की होती है। सतोगुणी बुद्धि तो मालिक को ओर ले जाती है, रजोगुणी बुद्धि इस संसार में लगी रहती है, संसार के काम ज्यादा करती है, कोई मन्त्री बन रहा है, कोई प्रधानमन्त्री बनना चाहता है यह रजोगुणी है और तमोगुणी वह है पड़ा रहे घर में, भांग पीकर सो जाये। हम सब के अन्दर तीन प्रकार की बुद्धि, तीन प्रकार का मन, तीन प्रकार के स्वभाव हैं। यह प्रकृति है। कभी तो हम सतोगुणो होते हैं, ज्ञान होता है, प्रकाश होता है, कभी-कभी अभ्यासियों को प्रकाश नहीं, होता प्रकाश नहीं मिलता .तो घबराते हैं। पिता जी ने कहा है कि घबराने की कोई ज़रूरत नहीं, बड़े-2 सन्तों को भी हर समय प्रकाश नहीं दिखाई देता क्योंकि जब आपने ख़ुराक़ ऐसी खाई। ख़ुराक़ भी तीन प्रकार की होती है, सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी। क्यों कहते हैं कि आप मांस न खाइये? क्योंकि मांस

सतोगुणी व तमोगुणी नहीं है रजोगुणी है। जो चीज सतोगुणी है वह तो आनन्द देने वाली है, सुख देने वाली है और जो रजोगुणी है वह बाद में दु:ख देती है, और जो तमोगुणी है वह तो आदमी को बिलकुल नीचे गिराने वाली है। इस तरह से यह प्रकृति है। प्रकृति जो है यह अपने आप में तीन गुणों वाली है। जब किसी वक्त कोई वस्तु अर्थात् संसार नहीं होता तो उस समय प्रकृति अपने इन तीन गुणों में अलग-2 बंट के रह जाती है, उस वक्त न कोई चाँद होता है न सितारे होते हैं, कुछ नहीं। उस प्रकृति में हलचल कब होता है, पुरुष उस शक्ति का नाम है जिसमें चेतना है, प्रकृति में अपने आप चेतना नहीं होती तो पुरुष को इन लोगों ने माना है ईश्वर परन्तु पुरुष ईश्वर का नीचे का रूप है। वह पुरुष जो है वह मकनातीस की तरह दूर से प्रकृति को हिलाता है और इस तरह से उसके अन्दर हिलोर आती है। तो कुछ हिलोर से वे तीन गुण मिलते हैं। जब तीन गुण मिलते हैं। बुद्धि पैदा होती है। बुद्धि के बाद अनन्तकार होता है। यह बात आपको ज्यादा बताने को नहीं।

तो मैं यह कह रहा था कि पुरुष जो है वह चेतन तत्त्व है इस संसार के अन्दर जो प्रकृति या मादा है वह तो नाशवान् भी है। परन्तु पुरुष तत्त्व जो चेतन तत्त्व है वह नाशवान् नहीं है। इस पुरुष और प्रकृति से भी ऊपर है परम पुरुष। वह परम पुरुष वह है जो चेतना से भी परे है। यह बात कबीर साहिब ने अपने अनुभव से कही, यही बात सांख्य जो हमारे वेदों से निकला हुआ एक अंग है उसमें भी कही है। तो सनातन धर्म में और सन्तमत में कोई फ़रक नहीं है। फ़रक यह ज़रूर है कि सनातन धर्म में जो वेदों पर किताबें लिखी हुई हैं वे संस्कृत में बहुत कठिन भाषा में लिखी हैं। उन्होंने अनुभव तो किये परन्तु अनुभव करने वाले लिख गये फिर किसी ने उनको अपने जीवन पर लगाया नहीं और जो पण्डित लोग थे वे पोथियें पढ़-पढ़ के रखते गये। इस लिए सन्तमत ने यदि विरोध किया तो यही किया कि:—

'वेद कतेब जान नहीं सकें'

वेद कतेब से मतलब है कि जो इसको पूजने वाले हैं, परन्तु वेद के अन्दर यह बात लिखी है अर्थात् वेद के अन्दर चौथा पद है, इसमें कोई शक़ की बात

नहीं है परन्तु उसको पढ़ने वाला जो है उसको अभ्यास नहीं है और जिनको अभ्यास है उन्होंने पढ़ा नहीं है इस लिए अलग-अलग माने गये, वास्तव में ऐसा है नहीं।

वह परम पुरुष क्या है? परम पुरुष प्रकृति और चेतन से भी परे है। पुरुष तो इस जगत् के काल को चलाने वाला है और परम पुरुष वह तत्त्व है जिससे चेतना भी निकलती है। गति भी निकलती है, सुख भी निकलता है, दुःख भी निकलता है किन्तु वह इस सब से परे की अवस्था है, परम पुरुष की एक बूंद से सारे संसार की रचना होती है बल्कि हम सब इस संसार में परम पुरुष की बूंद की किरणें है। पिता जी क्योंकि Telegraph Incharge थे इस लिए वो बैटरी का बड़ा सुन्दर उदाहरण दिया करते थे। जिससे कि कई लाइनें और कई करण्ट निकालते हैं उसमें एक होती है इलेक्ट्रोक मोटर फोर्स अर्थात् शक्ति का केन्द्र। कई बार भाखड़ा नंगल की मिसाल देते थे, वहां से जो बिजली निकल रही है वह केन्द्र है और उससे जो धारें

निकलती हैं वे उस शक्ति की किरणें हैं। संसार के अन्दर परम पुरुष स्वयं नहीं है बल्कि परम पुरुष की किरणें हैं। परम पुरुष जो है वह सबसे ऊँचा तत्त्व है।

जब तक आप प्रकृति के देश में रहेंगे काल के देश में रहेगे जहां पर संघर्ष है, जहाँ सुख भी होता है दु:ख भी होता है दोनों ही तो बातें हैं। घबराने की बात नहीं है, जहां सुख है वहां दु:ख है, जहाँ दु:ख है वहाँ सुख भी होगा। यह जो जगत् है इस से ज़रा ऊपर जाओगे तो मन के जगत् में कुछ शान्ति है। वहां पर यह शरीर का सुख-दुःख नहीं है मन का है, परन्तु जब हम असली तत्त्व को पकड़ेंगे जहाँ से यह सब निकला है तो वहाँ सुख है न दु:ख है, न चेतना है न अचेतन है परन्तु इसको आप यह समझ लेंगे, यह तो कुछ भी नहीं है। नहीं-नहीं, कुछ भी नहीं, नहीं यह सब कुछ है। जब आप उस का अनुभव करेंगे तो उस में पहुंच कर, इसी आनन्द से भी परे की अवस्था में जा करके पिता जी जब वापिस आते थे आप उनका चेहरा देखते! सब कुछ जो कुछ है उससे मिल करके फिर वो नीचे आते थे।

एक बात यह है कि बड़े-बड़े जो सोचने वाले दार्शनिक होते हैं इन दार्शनिकों का दिमाग़ खराब होता है, मैं खुद Philosophy पढ़ा हूं, दर्शन पढ़ा हूं, ये अपनी बुद्धि लगाते रहते हैं, बुद्धि ठीक है कुछ हद तक। वो कहते हैं कि यह पूर्ण पुरुष जिसमें न सुख है न दुःख है न चेतना है न अचेतन है यह तो कुछ भी नहीं हुआ! जब सब चीज़ें उस में से निकलीं, एक भी उसमें से निकला अनेक भी उसमें से निकले तो उस को हम न एक कह सकते हैं न अनेक कह सकते हैं, वह जो है सो है लेकिन है ज़रूर है। ज़रूर क्योंकि जब फकीर जी महाराज खुद ऊपर जाते थे तो कहते हैं कि जब मैं वहां पहुंचता हूं तो बता नहीं सकता, गूंगे का गुड़, आप बता सकते हैं कि गुड़ का क्या स्वाद होता है? क्या आप बता सकते हैं कि गुड़ में और आईस क्रीम के स्वाद में क्या फरक होता है? आप कहोगे, खाओगे तो पता लगेगा। पिता जी वहां पहुंच कर जब नीचे आते हैं तो उन्होंने एक बड़ी भारी बात कही जो किसी सन्त ने इस तरह समझाई नहीं कि वह आपके अन्तस् में है, आप उसी से निकले हैं, उसी में समाधिस्थ हो

उसी में मिल जायेंगे और जब यह आपका विश्वास है तो डर किसका, आप सब अमर हैं। उसको हम बता नहीं सकते कि क्या है, परन्तु है जरूर क्यों कि वहाँ जाकर के पिता जी जब नीचे आते थे वो कहते हैं वहाँ चेतन नहीं है, अचेतन नहीं है, परन्तु क्योंकि मैं वापिस आ जाता हूं यदि वहां कुछ नहीं होता तो मैं वहीं समाप्त हो जाता, वापिस क्यों आया ? इससे यह साबित हो गया कि मिलने के बाद भी आदमी की हस्ती जो है वह अलग रहती है। ऐसी बहुत सी बातें हैं जो पिता जी ने बताईं परन्तु और किसी ने नहीं बताईं :—

न वहां सूरज न वहां चन्दा बिन ज्योति उजियारा।

बिन ज्योति उजियारा का अर्थ यह है कि अनेक सूर्य, अनेक चन्द्रमा का जो प्रकाश होता है उससे कहीं अधिक घना प्रकाश है।

जब आप अन्धेरे में जाते हैं तो उससे भी नहीं घबराना चाहिए क्योंकि अन्धकार में आप कहां तक जायेंगे, अन्त तो उसका भी है। अरे ! मालिक के

थर में नीचा कहां ऊँचा कहां। आप कहते हो हम नीचे हो गये, आप कहते हो हमें दु:ख हो रहा है, दु:ख नहीं हुआ। जब पूरा दु:ख हो जायेगा, जब बिलकुल भ्रष्ट हो जाओगे तब कहोगे हे मालिक ! तब आपको ऊपर उठायेगा :—

जहं नहिं सुख दु:ख सांच झूठ नहिं पाप न पुन्य पसारा।

पाप, पुण्य भी हमने बना रखा है। वहां तो इससे भी ऊंची चीज है और वह सबको मिल सकती है अगर कोई चाहे तो। इसके लिए ही सत्संग होता है :—

नहीं दिन रैन नहिं चन्द्र सूरज बिना ज्योति उजियारा।
नहीं तहं ज्ञान ध्यान नहिं जप तप वेद कितेब न बाणी।

जहां यह कहा गया है कि वहां न ज्ञान है, न ध्यान है, न जप, तप है इसका मतलब यह न समझना कि वहां कुछ नहीं है। ज्ञान, ध्यान के बिना तो जा ही नहीं सकते, ये सीढ़ियां हैं। जब सीढ़ियों पर चढ़ कर मंजिल पर पहुँच गये तब उससे ऊपर उठ गये।

यह बात उन लोगों के समझने की है जो सीढ़ियों पर चढ़ कर पहुंच गये :—

करनी धरनी रहनी गहनी ये सब वहां हिरानी।
घर नहीं अधर ना बाहर भीतर पिण्ड ब्रह्माण्ड कछु नाहीं।
पाँच तत्त्व गुण तीन नहीं तहाँ साखी सबद न ताहीं।

पाँच तत्त्व और गुण वहां नहीं हैं क्यों कि वहां तो इनका आधार है :—

मूल न फूल बोलि नहिं बीजा बिना वृच्छ फल सोहै।
ओअं सोहं अर्ध उर्ध नाहीं स्वांसा लेख न कोहै।

वहां तो मूल का भी मूल है जो सब का आधार है। मैं सोऽहं की थोड़ी बात कहना चाहता हूं कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है, उसमें शरीर, मन बुद्धि और आत्मा का मेल है और जब तक वह सांस लेता रहता है ये तीनों जुड़े रहते हैं। जब सांस रुक जाता है तब कहते हैं कि मृत्यु हो गई। हम एक मिनट में अठारह या बीस बार सांस लेते हैं। क्यों लोगो को चैन नहीं होता ? जरा सोचने की बात

है। लोग चाहते हैं कि पैसा मिल जाय परन्तु पैसे वाला महान् दु:खी होता है। कहां छुपाये पैसे को, उसके मन की दशा बहुत बुरी होती है। पैसे से सुख, चैन नहीं मिलता परन्तु पैसे के बिना काम भी नहीं चलता, होना चाहिए। कोई चाहते हैं कि विख्यात हो जायें बड़े मशहूर हो जाय, दुनिया में उनको इज्जत मिल जायें परन्तु इज्जत मिलने पर पैसा मिलने पर या शरीर की सुन्दरता मिलने पर क्या वह खुश रहेगा ? तब भी खुशी नहीं होती। अमरीका में जा कर देखो।

सन् 1963 ई. में हमारे राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् जो मेरे विद्यागुरु हैं वो अमरीका आये थे। उन दिनों मैं वहां पढ़ा रहा था, उन्होंने मुझे कहा कि मुझे आके मिलना, मैं जाके मिला। प्रेजिडेण्ट कैनेड़ी की गाड़ियाँ थीं तीन चार गाड़ियां आगे चलती थीं तीन पीछे चलती थीं। उसका जो खास ड्राइवर था उसकी बड़ी अच्छी तनख्वाह थी। डा० राधाकृष्णन् जी के सैक्रेटरी, गुप्ता जी ने उस ड्राइवर से पूछा कि भई ! तुम कितना वेतन लेते हो ? उसने बताया कि मैं एक हज़ार डालर हर महीने लेता हूं। गुप्ता जी ने कहा कि तुम्हारी

तनख्वाह तो हमारे प्रेजिडेण्ट से ज्यादा है। फिर उस से पूछा यह बताओ, कि क्या तुम खुश हो ? वह कहथे लगा कि I am miserable अरे मैं तो बड़ा दु:खी हूं ! तो पैसे का क्या फायदा। सब लोग भागते हैं अमरीका को क्यों ? वहाँ पैसा बहुत है परन्तु आप जा के देखो होता क्या है, न्यूयार्क में छोटी-छोटी कोठरियों में बैठे हैं और महान् दु:खी हैं। रात को बाहर निकलें तो उनको कोई गोली मार दे। यह न समझना कि वे सुखी हैं। तो एक मेरिलन मनरो एक बड़ी भारी Actress थी, बहुत सुन्दर बड़ी मशहूर थी, करोड़ों रुपये उसके पास थे। उसने गोलियां खा कर के आत्महत्या कर ली। कोई चीज है जिसकी हम कमी महसूस करते हैं। अगर इस कमी को हम पूरा करें तब सुख और आराम मिलता है।

मैं सोऽहं की बात बता रहा हूं। सब कुछ है फिर भी देखो शान्ति नहीं है क्योंकि हमारी आत्मा तो निरन्तर कह रही है मालिक ! मैं तेरे पास आना चाहती हूं। सांस की गति कह रही है सोऽहं मैं वो हू, मैं वो हूं। आप एक मिनट में

अठारह बीस बार जो सांस लेते हैं हर एक सांस के अन्दर आप क्या कह रहे हो, आत्मा तो कह रही है "सोऽहं-सोऽहं" अर्थात् बैठो सोऽहं का ध्यान करो, सोऽहं का मतलब यह है कि हमारी आत्मा ऊपर जाना चाहती है :—

नहिं निर्गुण नहीं सर्गुण भाई नहीं सूक्ष्म स्थूलम् ।
नहिं अक्षर नहीं अविगत भाई यह सब जग की भूलम् ।
जहां पुरुष तहंना कछु नाहीं कहै कबीर हम जाना ।
हमारी सैना लखै जो कोई पावै पद निरवाना ।

अन्तिम पद में फैसला कर दिया । कुछ नहीं का मतलब है कि जो कुछ आप देखते हो, सुनते हो, जिस का आपको आंखों से, कानों से, मन से, बुद्धि से, चेतना से बोध-भान होता है वहां वो नहीं है । वो क्या है हम कुछ नहीं कह सकते क्योंकि वह सबसे ऊँचा है, सब उसी मैं से निकले हैं इस लिए किसी एक से मिलान नहीं कर सकते । जो छुपे हुए भेद को समझ ले वही निर्वाण पद को प्राप्त होता है । सत्संग आपको यह बात समझाने के लिए कराया जाता है, किसी दिन झटका आ जायेगा तो बात समझ में आ जायेगा ।

## My Response to Baba Faquir

When I first came into the presence of Baba Faquir I knew through spiritual intuition that he was the most spiritually advanced person I had ever met. I felt my wholemind and spirit responding to him and I felt joyously open to his spiritual influence without any inner reservation. I could recognize that my inner life was being energized by his presence and when he looked directly at me for a moment now and then I felt that he was deliberately helping me and that I could trust him completely in whatever he was doing in my spiritual nature.

My mind knew immediately that it could only partly understand what was happening to me, because it was happening above the level of mind. I was certain that God had brought me to India and to Manavta-Mandir in order to bring me under Faquir 's influence and that the greatest period of my life was beginning.

In Faquir 's presence I could remember the highest spiritual experiences of my life from my youth onward It seems to me that the highest spiritual experiences are like high mountain peaks rising above the clouds of ordinary everyday consciousness. I felt in the presence of this great Saint as if I were on a mountain so high that I could see clearly again the earlier spiritual peaks

of my life and that they ,all had been preparing me for this experience with Faquir.

Now that he is set free from his physical body his blessings can be all the greater in the souls of those who love him. He will continue to be present not only in private meditations but in the fellowshhip between all of us who follow this Path and in the chosen Leaders of this Religion of Saints.

He laid upon me two specific charges; first, to "work for the unity of religions," and second, "to spread the art of true living in the United States." I am convinced in my heart that I can begin to do this by writing a book telling in very personal and specific ways how Faquir has influenced many of you through the years of your spiritual path. This will be convincing and spiritually helpful to many Westerners. Therefore I sincerely and urgently request all of his devoted followers to write out in as much detail as possible the story of how you came to know him, how you were able to recogdize him as a great Saint, how he has affected your spiritual thoghts and feelings, how he has affected your inward peace, financial situation, health and day-to day decisions. I believe deeply that Faquir will continue to bless and work through each of you who will write out fully and send the story of your life with Faquir to me in care of Manavta Mandir.

William Rhodenhiser
Acharya of Manavta Dharma
in U. S. A.

## मासिक सन्देश

मेरे प्यारे सत्संगियो।

राधास्वामी, परम दयाल सहाई !

वैसाखी का शुभ दिन आ रहा है। इस मौके पर आप सब हर साल की तरह होशियारपुर में जरुर आयें। यह पिता जी परम दयाल, परम सन्त, पडिण्त फ़कीर चन्द जी महाराज के चोला छोड़ने के बाद पहली वैसाखी है। इस मौके पर सभी आचार्य, सन्त और महात्मा अपने सत्संगों में बतायेंगे कि परम दयाल जी ने सन्तमत की सच्चाई को अपने जीवन में कैसे लागू किया और लाखों जीवों पर उपकार किया।

जहां तक मेरा अपना अनुभव है, उनके द्वारा दिये गये सत्संगों का निचोड़ यही है कि गृहस्थियों को हमेशा आशावादी और खुश रहना चाहिए और गुरु पर पूरा विश्वास रख कर अपनी सभी इच्छाओं को मालिक की इच्छा पर छोड़ देना चाहिए। मैं एक

बार फिर आपको यह बता देना चाहता हूं कि परम दयाल जी महाराज मामूली सन्त या गुरु नहीं थे, बल्कि वह सत्य के अवतार थे और अब भी हैं। सत्संगियों का लोक और परलोक तभी सुधर सकता है जब वे परम दयाल जी की आ..ा का पूरा पालन करेंगे। उन्होंने जो-2 काम, जिस-2 को सौंपा है उसे उसको उनके हुक्म के मुताबिक ही करना चाहिए। ऐसा करने से ही उसको सुख और शान्ति मिल सकती है।

मानवता मन्दिर में रहने वाले सत्संगियों, अधिकारियों और ट्रस्टियों को उनकी वसीयत के मुताबिक ही काम करना पड़ेगा। ऐसा करने से ही हम गुरु की आज्ञा का पालन कर सकते हैं। यदि हम उनकी वसीयत को ठुकरा कर अपनी ही मर्ज़ी से चलेंगे तो हम कृतघ्न या निगुड़े हो जायेगे। उन्होंने अपनी वसीयत में लिखा है कि मैं (मानव दयाल) उनकी जगह पर काम करूंगा और मेरी ग़ैरहाज़िरी में श्री मुन्शीराम जी भगत मन्दिर में सत्संग दिया करेंगे। मैं सत्संगियों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि परम दयाल जी की वसीयत के मुताबिक उनका

उत्तराधिकारी एक ही है, दो नहीं । मैं यह बात इस लिए लिख रहा हूं कि बहुत से सत्संगियों की मुझे और मुन्शीराम जी को चिट्ठियां आती हैं, जिनमें यह पूछा जाता है कि परम दयाल जी का उत्तराधिकारी कौन है । एक घर में घर को चलाने वाला एक ही पिता होता है । अगर घर वाले उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते तो वह घर कभी नहीं चल सकता । मैंने तो पहले ही यह कह दिया है कि मैं नहीं हूं और परम दयाल जी खुद ही पग पग पर मुझे रास्ता दिखा रहे हैं । उसका सबूत यह है कि देश-विदेशों में सत्संगियों को अजीब अनुभव हो रहे हैं । उनका यह कहना है कि जब वे परम दयाल जी के रूप का ध्यान करते हैं तो परम दयाल जी का रूप मेरे रूप में बदल जाता है । भारत से ऐसी अनेक चिट्ठियां आई हैं, जिन्हें मैंने मन्दिर के रिकार्ड के लिए सम्भाल कर रखा है । अमेरिका में भी बहुत से सत्संगियों को ऐसे ही अनुभव हो रहे हैं । यही अनुभव कैनेडा में भी हो रहे हैं ।

आज ही मैं वाशिंगटन और वर्जीनिया में सत्संग दे कर लौटा हूं । वर्जीनिया बीच वर्जीनिया में पिता

जी का टैड ब्राईट नामक एक सत्संगी है। वह मुझे कल मिला और बोला, "मैं कल परम दयाल जी की तस्वीर पर ध्यान लगा रहा था, पहले तो उनके चेहरे पर अचानक ऐनक आ गई और फिर धीरे-2 वह चेहरा आपके रूप में बदल गया।" मैं यह बात इस लिए नहीं लिख रहा कि मैं कुछ बन गया हूं, मैं तो केवल इतना बताना चाहता हूं कि यह सब क्यों हो रहा है। जहां तक मेरा अपना अनुभव है, इसकी व्याख्या यह है कि परम दयाल जी की रेडिएशन यानि कि उनके बिचार की किरणें ही काम कर रही हैं। मैंने सच्चे दिल से उनकी वसीयत के मुताबिक चलने के लिए धीरे-2 अमेरिका के सभी कामों को समेटना शुरू कर दिया है और अपना हैडक्वार्टर मानवता मन्दिर होशियारपुर को ही बना लिया है।

मैंने ऐसा क्यों किया ? पिता जी ने एक चिट्ठी में लिखा था "मेरा चोला छोड़ने के बाद रिटायर हो कर मन्दिर में आ जाना।" 23 दिसम्बर 1980 की चिट्ठी में पिता जी ने मुझे लिखा :—

प्यारे दयाल शर्मा :

राधास्वामी !

बूढ़ा हो गया हूं, तुम्हारा इन्तज़ार करता हूं, ताकि जो अनुभव मैंने ज़िन्दगी में हासिल किया, उस अनुभव को आप संसार में फैला सकें। मैं तो तुम्हें बुलाने नहीं गया था, मौज़ ने तुम्हें मेरे साथ लगा दिया। अब मेरे चले-चलाओ का वक्त है। वैसाखी पर ज़रूर आना। भाग की बीमारी की चिन्ता है। दयाल शर्मा ! सब 'कर्म भोग' है।

आपकी जन्मपत्री के मुताबिक 1982 में आपका अमेरिका में रहना नुक्सानदेह हो सकता है। आप 1982 के शुरू में स्थायीरूप से मन्दिर में आ जाओ। बहुत कमा लिया है अमेरिका में। मैं चाहता हूं कि आपकी ज़िन्दगी Practical हो, ताकि उसका प्रभाव दूसरों पर पड़े। मैं वैसाखी का इन्तज़ार कर रहा हूं।

आपका फ़कीर

---

इस लिए उनके हुक्म के मुताबिक मैं स्थायीरूप से पहली जनवरी 1982 से पहले ही होशियारपुर आ गया हूं। मैं कोई भी काम ऐसा नहीं कर रहा, जिस

की आज्ञा मुझे दरम दयाल जी ने नहीं दी हो। मेरा एक-एक कदम परम दयाल जी की इच्छा के मुताबिक चल रहा है। मैंने अपना जीवन उन्हीं के मिशन को चलाने के लिए ही दे दिया है। ऊपर वाली चिट्ठी से दो महीने पहिले 24 अक्टूबर 1980 को परम दयाल जी ने मुझे ये शब्द लिखे थे।

परम दयाल शर्मा।

राधास्वामी !

आपके हिन्दी के दो चैप्टर आज चन्द आदमियों के बीच में किसी ने पढ़ कर मुझे सुनाये। तबीयत और मेरा दिमाग़ कहीं का कहीं चला गया और मुझे यक़ीन हो गया कि जिस मिशन को पूरा करने का संस्कार दाता दयाल जी ने मुझे दिया था......उसका फैलाव तुम्हारी ज़ाते पाक से होगा और मुझे यक़ीन है कि चन्द सालों के बाद यह सत्यता या मानव धर्म संसार का एक और सत्य मज़हब बनेगा। अब अगर मेरा चोला आज भी छूट जाये, तो मैं बहुत खुशनसीब हूंगा......दाता ने काम दिया था वह फैलेगा......खुश रहो। मेरी दिली दुआ है लम्बी उमर हो, इस मिशन को चलाते रहो।

आपका फ़क़ीर

इन दो चिट्ठियों से यह ज़ाहिर है कि परम दयाल जी ने होशियारपुर को हैडक्वार्टर बनाने और वहीं से इस मिशन को सारी दुनिया में फैलाने का काम मुझे सौंपा है। उनकी ज़ाते पाक ही मेरी ज़ाते पाक है।

जब मैंने 27 दिसम्बर 1981 में मानवता मन्दिर होशियारपुर में सत्संग दिया तो मुन्शीराम जी भगत ने पहले यह शंका प्रकट की कि परम दयाल जी नें दो गुरु क्यों बनाये। यह उनका भ्रम था, जो बाद में दूर हो गया और उन्होंने सभी सत्संगियों के सामने यह मान लिया कि मानवता मन्दिर का का उत्तराधिकारी एक है, दो नहीं हैं और मैं आज से मानव दयाल जी को अपना गुरु मानता हूं। मैं भगत जी के इस भाव का आदर करता हूं और यह आशा करता हूं कि वह एक सच्चे मानव की हस्ती से मानवता मन्दिर में काम करते रहेंगे। ऐसा करनें में ही उनकी आत्मिक उन्नति होगी और उन्हें सुख और शान्ति मिलेगी।

मानवता मन्दिर जिस भाव से बनाया गया है, हमें उसी भाव को ध्यान में रखते हुए ही सबसे मिल

कर सच्चाई, प्रेम और इन्साफ़ से काम करना चाहिए। क्योंकि पिता जी ने मुझे हुक्म दिया हुआ है कि मैं मानवता मन्दिर के काम बे धड़क हो कर चलाता रहूं, इस लिए मुझे पक्का यक़ीन है कि उनके ये बचन ग़लत नहीं हो सकते कि यह मन्दिर चलेगा। "सन्त बचन विरथा नहीं जाई" में यक़ीन रखते हुए सभी सत्संगी इस मन्दिर को चलाने में मेरा साथ देंगे, इसमें कोई शक नहीं है। यह मन्दिर मेरा नहीं, दाता दयाल और परम दयाल जी का यह मानवता मन्दिर जिसकी एक-2 ईंट में पवित्रता और सच्चाई छिपी हुई है, आप सब का है और सारे विश्व को सच्चाई बताने वाला केन्द्र है। यह सदा बना रहेगा।

किसी सत्संगी को भी निराशावादी नहीं होना चाहिए। परम दयाल जी महाराज मालिके कुल के अवतार हैं, इसमें किसी को भी शक नहीं होना चाहिए। मुझे पता चला है कि कुछ लोग पिता जी की वसीयत के बिलकुल ख़िलाफ़ बातें कर रहे हैं। मैं तो सबसे प्रेम करता हूं। मैंने आज तक किसी को भी जानबूझ कर दुःख नही दिबा और न ही

कभी दूंगा। मेरी कथनी, करनी और विचार में मालिक की मेहरबानी से कभी अन्तर नहीं आया और न ही आयेगा। पिता जी ने मुझे साफ़ शब्दों में कहा था कि उन्होंने बहुत सोच समझ कर ही मुझे अपना उत्तराधिकारी बनाया था। डाक्टर परस राम अग्रवाल साक्षी हैं कि मैंने पिता जी को बार-बार कहा था कि मैं किसी के दिल को दुःखा कर उनका उत्तराधिकारी नहीं बनना चाहता। इस पर पिता जी ने कहा था, "मेरे बहुत से साधक सत्संगी ऐसे हैं, जिन्होंने लगातार सालों तक साधनाएँ की हैं, लेकिन मैं तुम्हारी साधना के साथ-2 तुम्हारी सच्चाई की दाद देता हूं।" उन्होंने डाक्टर अग्रवाल को भी कहा था, "परस राम! भारत में हज़ारों अभ्यासी हैं। मैंने आई० सी० शर्मा को यूं ही नहीं चुना है। उसमें खासियत है।" ये शब्द डाक्टर अग्रवाल ने मुझे अमेरिका में मेरे घर पर पिता जी के 1980 के दौरे पर कहे थे।

मुझे गुरु बनने या अपनी आरतियाँ कराने का कोई शौक नहीं है। एक श्रेष्ठ ब्राह्मण कुल में पैदा होने के कारण बचपन में ही मेरी कई आरतियां उतारी जा चुकी हैं। मेरी साधना पाँच वर्ष की आयु से ही चल रही है। मैंने

गुरु नानक देव जी, श्री कृष्ण जी, शंकर महादेव और जीज़स क्राईस्ट से भी साक्षात्कार किया हुआ है। अब परम दयाल जी की कृपा से मैं मन के स्तर से ऊपर चला गया हूं। अब मेरी हालत चश्मे वहदत की है। मुझे धन, सम्पत्ति, शानो-शौकत या पद की कोई लालसा नहीं है। मालिक की मेहरबानी से मुझे ये सब मिल चुका है। अब तो मेरा जीवन फ़कीरमय है। मुझे सभी लोगों में मेरे परम गुरु फ़कीर ही फ़कीर दिखाई देते हैं। दाता दयाल के लिखे हुए इस पद्य पर ही मेरा जीवन चल रहा है :—

"अब आदमी कुछ और हमारी नजर में है।
जब से सुना है यार लिबासे बशर में है।"

यह सब कुछ मेरे गुरु की उस अपार दया के कारण है, जो लगातार मेरे अन्दर इतनी तेज़ी से बह रही है, जो उमड़-उमड़ कर सभी सत्संगियों को ऊपर उठाना चाहती है। पिता जी के पवित्र मन्दिर में दोष ढूँढ़ना और यह कहना कि यह मन्दिर नहीं रहेगा न ही केवल कृतघ्नता है, बल्कि ऐसा अहंकार है जो कहने वालों और साथ ही साथ सुनने वालों को डुबो सकता है। जो लोग कृतघ्न होकर मन्दिर की निन्दा करते हैं, उन्हें कोई हक नहीं कि वे अपने आप को सत्संगी या मन्दिर का अधिकारी कहें। पिता जी कहा करते थे :—

"कामी तरे, क्रोधी तरे, पापी तरे अनन्त।
आन उपासक न तरे, कृतघ्न नाम रहन्त।"

मैं किसी को दोषी नहीं ठहरा रहा। किन्तु मैं यह ज़रूर चाहता हूं कि किसी का भी विश्वास नहीं टूटना

चाहिए। अगर किसी का यक़ीन टूट चुका है, या उसका परम दयाल जी के मन्दिर में दिल नहीं लगता, तो उसे होशियारपुर में सीधा मेरे पास आना चाहिए। मैं उसकी मानसिक दशा से ठीक कर दूँगा। यह मैं बिलकुल सच कह रहा हूं और सच्चे दिल से कह रहा हूं। मैंने पिता जी की वह चिट्ठी अभी तक प्रकाशित नहीं की है, जिसमें उन्होंने मुझे लिखा है कि अब मुझे ज्ञान यानि चश्में वहृद से भी ऊपर उठना है।

पिता जी ने मुझे सब सत्संगियों की जो ज़िम्मेवारी दी है मैं उसके निभाने में कोई क़सर नहीं छोड़ूँगा। मैं आपको हमेशा वह विवेक और सच्चा ज्ञान देता रहूंगा, जो परम दयाल जी ने मुझे दिया है और जिसे मैं अपने जीवन की हर घड़ी में उतार रहा हूं। मैं आपको सच्चे दिल से परम दयाल जी की ओर से सद्भावना देता हूं कि आप सब सुखी हों, स्वस्थ हों और शान्ति को प्राप्त करें।

मैंने नीचे दिये गये पद्य पिता जी की शारीरिक उपस्थिति में लिख कर उन्हें सुनाये थे जो इस प्रकार हैं :—

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
अलख, अगम और अनामी,
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
परम सन्त का रूप धरा। जीवों पर उपकार किया ॥
सीधा सच्चा मार्ग दिया।
आये धुर पद धामी। राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥
बन कर आये परम फ़कीर। हरने सब जीवों की पीर ॥
परम दयालु दानी वीर।
नाम दान के दानी। राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥

राम भी हो और कृष्ण भी तुम। तुम महावीर, बुद्ध, गौतम ॥
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोतम।
सब नामों में अनामी, राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी ॥

जब कभी भी आप का मन अशान्त हो, तो आप इन पद्यों का कीर्तन करते जायें आपको फ़ौरन शान्ति मिलेगी। शेष अगले महीने के सन्देश में। राधास्वामी परम दयाल सहाई।

आपका मानव

---

## आध्यात्मिकता क्या है ?

मानव दयाल

लोग आध्यात्मिकता की बात करते हैं। वे आध्यात्मिकता को जानने का दावा करते हैं और आध्यात्मिकता को अपने जीवन पर लागू करने और लोगों को आध्यात्मिकता का उपदेश देने का ढोंग रचाते हैं। किन्तु दुनिया में बहुत कम लोग ही ऐसे हैं जो आध्यात्मिकता या रूहानियत की सच्चाई को जानते हैं। परम सन्त परम दयाल पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज पूर्ण धति, पूर्ण गुरु दाता दयाल जी महाराज के पूर्ण और सच्चे शिष्य हुए हैं। उन्होंने आध्यात्मिकता की सच्चाई और उसके मक़सद को खोल कर बताया है। उन्होंने उमर भर आध्यात्मिकता को अपनी निजी ज़िन्दगी में उतारा और कहा कि असली आध्यात्मिकता मानवता ही है या पूर्ण मनुष्य बनना है। उन्होंने ऐसा क्यों कहा ? उन्होंने बार-2 यह क्यों कहा कि सन्तमत और सनातन धर्म एक ही है ?

आज मैं आपको आध्यात्मिकता के उस ज्ञान का व्योरा देना चाहता हूं जिसे मेरे परम गुरु, परम सत्य के अवतार पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज ने मुझे बता कर मेरी आँखें खोल दीं। मैं आपके सामने यह सच्चाई सिर्फ़ इस लिए नहीं रख रहा कि मैंने इसे परम दयाल जी से सुना था या इसकी व्याख्या को वेदशास्त्रों में और आजकल की साईंस में पढ़ा था। मैं आपके साथ उस सच्चाई के ज्ञान को बांटना चाहता हूं, जो मैंने परम दयाल जी से लगातार उन्नीस वर्ष के सम्पर्क से और अपनी साधना से जो कि पांच वर्ष की आयु से करता आ रहा हूं प्राप्त किया। परम दयाल जी से दीक्षा लेने से बहुत पहले ही मैं आध्यात्मिकता के बहुत से स्तरों का अनुभव कर चुका था और अपने परम गुरु की तरह परम तत्त्व के अनेक रूपों भगवान् शंकर, भगवान कृष्ण और जीज़स क्राईस्ट के रूप से भी बातचीत कर चुका था। आख़िर में मैंने 1959 में परम दयाल जी महाराज का उन्हें शारीरिक रूप में मिलने से पहले ही दर्शन किया। मैं यह सब इस लिए लिख रहा हूं कि इस लेख को पढ़ने वाले सत्संगी यह समझ सकें कि सबसे ऊँची सच्चाई क्या है।

परम दयाल जी कहते हैं कि सच्ची मानवता के बिना आध्यात्मिकता नहीं आ सकती। इसीलिए ही उन्होंने होशियारपुर के केन्द्र का नाम 'मानवता मन्दिर' रखा। आप ज़रा इस बात पर ग़ौर करें कि उन्होंने मानवता और आध्यात्मिकता को और उसके साथ ही साथ सन्तमत और सनातन या आदि धर्म को बार-2 एक क्यों बताया ?

प्राय: सभी लोग यह जानते हैं कि परम तत्त्व से निकली हुई तीन किसम की सृष्टियां हैं। इनमें से पहली सृष्टि आधिभौतिक कहलाती है, जिसमें ठोस मादा परमाणु आदि सभी ठोस तत्त्व शामिल हैं। यह सृष्टि का सबसे नीचे का स्तर या दर्जा है। परम तत्त्व की दूसरी सृष्टि या दुनिया दैवी या देवताओं का दर्जा है. जिसे आधिदैविक कहा जाता है। इस सृष्टि में सभी नक्षत्र, पृथ्वियां, सौर मण्डल, आकाश गगाएं और सारे विश्व या आलम के वे लोक-लोकान्तर शामिल हैं, जिन्हें ब्रह्माण्ड कहा जा सकता है। इस दर्जे पर तीन दैवी शक्तियों, सृष्टि को रचने वाले ब्रह्मा की शक्ति, पालन करने वाले विष्णु की शक्ति और नाश करने वाले शिव की शक्ति मिल कर काम करती रहती हैं। सृष्टि का यह दर्जा पहले दर्जे से ऊंचा है। सृष्टि का तीसरा दर्जा आध्यात्मिक कहलाता है। आध्यात्मिक का क्या मतलब है ? यह मनुष्यता का ही दर्जा है। आप हैरान मत होइए अध्यात्म का असली मतलब है परम तत्त्व का मनुष्य की आत्मा के रूप में ढक जाना। संस्कृत के शब्द अधि का अर्थ है ढकना और आत्मा का अर्थ है जीवात्मा या मनुष्य। यह परम तत्त्व की सबसे ऊंची बाहरी सृष्टि है।

मानव में अदृश्य दैवी शक्ति या छपी हुई दैवी शक्ति और दिखाई देने वाला भौतिक शरीर दोनों मौजूद हैं। इस लिहाज से मानव ईश्वर या उन देवताओं से ऊंचा माना गया है, जिनकी शक्ति बाहरी दुनिया के पीछे छिपी हुई है और दिखाई नहीं देती। मानव मादा यानि कि भौतिक

द्रव्य से भी ऊंचा है, क्योंकि ठोस जगत् दिखाई तो देता है, लेकिन वह देवताओं की तरह चेतन नहीं होता और देवताओं की चेतन शक्ति ही उस पर राज्य करती है। भौतिक जगत्, दैवी शक्तियां और मानव तीनों, परम तत्त्व की एक बूंद या धार से पैदा होते है। सभी वे दैवी शक्तियां, जिन्हें विचार शक्ति कहा जा सकता है और जो सारे विश्व को चला रही हैं, मनुष्य के अपने अन्दर ही मौजूद हैं। इस लिए ही वेदों में यह कहा गया कि सभी देवी-देवता मनुष्य के शरीर में मौजूद हैं। सन्तमत का कहना है कि सृष्टि के सभी दर्जे सहस दल कमल, त्रिकुटि, सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा आदि मानव के अन्तर में ही मौजूद हैं। फ़र्क सिर्फ उन शब्दों का है जिन्हें ऋषियों ने वेदों में और सन्तो ने वाणियों में इस्तेमाल किया है। सन्तो ने ज्यादातर उन्हीं नामों का प्रयोग किया है, जो वैदिक ऋषियों ने किये थे।

मनुष्य में दैवी दर्जे के साथ-2 भौतिक दर्जा भी है, जिसे शरीर कहा जाता है। दैवी दर्जा या विचार तत्त्व सूक्ष्म होता है और शरीर स्थूल। इस तरह मनुष्य में शरीर का स्थूल या ठोस रूप भी है और दैवी विचार या मन का सूक्ष्म रूप भी है। जब स्थूल और सूक्ष्म दोनों मिल जाते हैं तो वे मनुष्य की रचना करते हैं।

इन स्थूल और सूक्ष्म रूपों के साथ-2 मनुष्य में वह चौथा विशुद्ध रूप का दर्जा भी है, जिसे ऋषियों ने विशुद्ध आत्मा और सन्तों ने सुरत कहा है।

सुरत या विशुद्ध आत्मा सहस्रार विश्वव्यापी मन के दर्जे पर हज़ारों रूपों में काम करती है और उसका मनुष्य के

विचार द्वारा अनुभव किया जा सकता है। यही हज़ारों रूप देवी-देवताओं के रूप होते हैं, जिन्हें हम अपनी सूक्ष्म शक्ति विचार के कारण देखते या अनुभव करते हैं। सुरत जब भौतिक दर्जे पर होती है तो मानव के शरीर में शारीरिक सुख, दुःख आदि के अनुभव कराती है। लेकिन असलियत में सुरत अपने आप में न शरीर है, न विचार है, न मन है। वह तो कोई और ही चीज़ है। सुरत अपने निज धाम यानि कि पवित्र परम धाम को वापिस कैसे जा सकती है? सत सनातन धर्म और सन्तमत दोनों इस सवाल पर ग़ौर करते हैं, क्योंकि सन्तमत उसी पुराने धर्म का ही एक नाम है जो अनादि है। परम दयाल जी महाराज ने इस सवाल का जिस सरलता से जवाब दिया है, उसे अगले लेख में बताया जायेगा। लेकिन यहां इस बात पर ग़ौर करना ज़रूरी है कि दाता दयाल जी महाराज और परम दयाल जी महाराज ने उसी अनादि धर्म को मानवता धर्म क्यों कहा है?

आपने यह तो समझ ही लिया है कि मानव की रचना दैवी शक्ति और जड़ द्रव्य दोनों से हुई है। पूर्व में ध्यान और योग के प्रयोग से दैवी शक्ति पर अधिकार जमाने की शाधना की गई है। पश्चिम ने देश, काल और कारणता की बाहरी दुनिया पर प्रयोग करके, भौतिक शक्ति पर ही कब्ज़ा किया है। लेकिन मनुष्य आन्तरि भी है और बाहरी भी। इस लिए सोईंस या विज्ञान को चाहिए कि वह मनुष्य के अन्दर और बाहर दोनों को समझने की कोशिश करे। यह समझ कैसे आ सकती है? इसको

समझने के लिए, उस सुरत और शब्द के मेल अथवा योग की विधि का अपनाना जरूरी है, जो उस प्रकाश और शब्द की विधि है, जिसे राधा और स्वामी कहा गया है। राधा का मतलब हैं प्रकाश या आत्मा और स्वामी का मतलब है अनहद नाद या सुरत। आख़िर में मनुष्य को प्रकाश और शब्द से परे जा कर, चीज़ को पाना चाहिए, जो प्रकाश और शब्द अनुभव करती है। वो चीज़ जो प्रकाश और शब्द का अनुभव करती है, सभी हदों से परे है। वह मानव के अन्दर एक अविनाशी सत् है। यही विशुद्ध आत्मा यानि कि विशुद्ध सुरत है। इस आध्यात्मिकता या सहानियत के रास्ते पर केवल तभी चला जा सकता है, जब सुरत मनुष्य के चोले में ही हो। इस लिहाज़ से मनुष्य होना कोई शान नहीं बल्कि एक वरदान है। देवता तक भी परम धाम को नहीं जा सकते, जब तक कि वे मनुष्य का जन्म नहीं लें। परम तत्त्व खुद ही युग-2 में मनुष्य को बार-2 यह चेताने के लिए मानव का रूप धारण करता है कि मानव का असली घर यानि की परम धाम भौतिक दर्जे से मानसिक दर्जे से और आत्मा अंश प्रकाश के दर्जे से भी परे है।

मानवता का मार्ग सन्तमत और सनातन धर्म दोनों का मार्ग है। अन्तर तो केवल कहने की तर्ज और अनुभव न होने के कारण पड जाता है। वे लोग जो वेदों के गूढ़ दर्शन यानि कि फ़िलास्फ़ी को, उपनिषदों को और भगवद्गीता को पढ़ते हैं उनमें से बहुतों को अन्दरूनी अनुभव नहीं होता और

इसी अज्ञान के कारण वह सन्तमत को बुरा बनाते हैं और उनका विरोध करते हैं। इसके विपरीत, वे लोग जिन्हें सन्तमत पर अन्धविश्वास है, मानव ईश्वर और विशुद्ध आत्मा के उस सच्चे ज्ञान को नहीं जानतेजो ऋषियों ने अपने अनुभव से सनातन धर्म में बताया है। रपम तत्त्व परम तत्त्व ही है वह निर्गुण भी है और सगुण भी है वह किसी धर्म यामत की जद्दी जयदाद नहीं है और न ही वह केवल उन्हीं लोगों की जद्दी जयदाद है, जो कुछ घन्टों के लिए अनहद नाद को सुनने का दावा करते हैं। परम तत्त्व, अनामी दयाल तो उस समय भी मौजूद था, जब ऋषियों और सन्तों ने इस पृथ्वी पर जन्म तक ही नहीं लिया था। इस लिए ही तो परम तत्त्व के मार्ग को सनातन या आदि धर्म कहा गया था। लेकिन अफ़सोस है कि आज कल रीति रिवाज, कर्म काण्ड और अन्ध विश्वास को ही सनातन धर्म माना जाता है। इसी तरह सन्तमत या राधास्वामी मत को भी फ़िरकों की हदों में बांधा जा रहा है। सनातन धर्म और सन्त मत अपने आध्यात्मिक और सच्चे स्वरूप से ही सम्बन्ध रखते हैं। मानव अपने असली रूप में पूर्ण है, इसलिए दाता दयाल जी महाराज तथा परम दयाल जी महाराज ने मानवता धर्म नाम को ही सबसे अच्छा माना है।

मानवता धर्म कोई सम्प्रदाय या फिरका न हो कर एक एक ऐसा रास्ता है जो हमें परम धाम की ओर ले जाता है। परम धाम अनुभव का वह सबसे ऊंचा दर्जा है जिस मानव के चोले में ही पाया जा सकता है। जब तक कि

मनुष्य जीते जी इस दर्जे का अनुभव नहीं कर लेता, उसे मुक्ति कभी नहीं मिलती। जिस मनुष्य ने जीवन्मुक्ति का अनुभव नहीं किया वह जन्म मरण के चक्कर से निकल नहीं सकता। उस मानवता धर्म ने, जिसकी व्याख्या दाता दयाल जी ने और परम दयाल जी के निजी अनुभव ने की है, हर मनुष्य को उस विशुद्ध आत्मा और अनामी तत्त्व के सच्चे रूप को समझा देता है, जिसकी तरफ़ दुनिया के मुख्य धर्मों ने केवल इशारा ही किया है। पूर्ण मनुष्य बनने की यह विधि सब धर्मों पर चलने वालों को यह ज्ञान दे सकती कि उनके अपने-2 धर्म का असली मकसद या लक्ष्य क्या है और वे अपने तथा दूसरे धर्मों की निन्दा न करते हुए परम धाम को पा सकते हैं। मानवता के इस रास्ते पर चलने से हर एक व्यक्ति इस दुनिया में सुख और शान्ति और परलोक में अनन्त आनन्द को पा सकता है। परम दयाल जी ने कठिन और गूढ़ फ़िलास्फी को सरल बना दिया है। उन्होंने परम सत्य के भेद को खोल कर सीधी साधी भाषा में आम जनता के सामने रख दिया है। मानव में असल में कोई पेचदगी और उलझाव नहीं है, उसका सच्चा रूप तो बहुत सरल है। परम तत्त्व ने अनेक बार इस पृथ्वी पर मानव रूप में अवतार लिया है और लेता रहेगा। सन्त तुलसीदास जी ने ठीक कहा है :-

नाना विधि राम अवतारा, रामायण शत कोटि अपारा ॥

दूसरे शब्दों में परम तत्त्व के अवतार कई तरह के होते हैं और इन अवतारों की जीवनियां या कथाएं भी अनन्त

हैं। हमारे इस युग में सन्तों ने परम धाम से उसी तरह से अवतार लिए हैं जिस तरह प्राचीन काल में भगवान राम, भगवान कृष्ण तथा भगवान बुद्ध ने लिए थे। परम दयाल जी महाराज परम सन्त और सत्य के परम अवतार थे। इस बात की उन्होंने कई बार घोषणा भी की। मैं उनको इसलिए साष्टांग नमस्कार करता हू कि उन्होंने मुझे वह सच्चा विवेक और परम ज्ञान दिया है, जिससे मुझे पूरी तरह से शरणागतम् होने का ऊंचा अनुभव मिला है। मैं इस परम तत्त्व में अपने आपको विलीन और शरणागत अनुभव करता हूँ। जिसे मैंने खुश किस्मती से परम सन्त, परम दयाल पण्डित फ़कीर चन्द जी महाराज का मानव रूप में दर्शन किया और जिन्होंने 19 वर्ष तक मुझ पर अपार कृपा का। उन्होंने न ही केवल मुझे परम सत् का दर्शन कराया, वल्कि अपनी अपार दया से उसी तरह उनके नक़्शे कदम पर चल कर सत्संगियों से अपने अनुभव को बांटने का काम दिया, जिस तरह से उन्होंने खुद इसी काम को दाता दयाल जी के नक्शे कदम पर चल कर किया था।

मानवता धर्म क्या है ? संक्षेप में, मानव धर्म का मकसद यह बताना है कि मानव अपने आप में पूर्ण है। उसमें परम तत्त्व यानि परम आधार के सभी गुण मौजूद हैं। गुणों की दृष्टि से वह परम तत्त्व ज़रूर है, लेकिन फलाव की दृष्टि से मनुष्य परमतत्त्व का एक अंश-मात्र है। परम तत्त्व अनन्त है, अलख, अगामी और नाम रूप से परे है। इसीलिए

परमतत्त्व को परम आधार भी कहा जाता है। हम सभी उसी धाम से आये हैं और उसी ही निजधाम की वापसी यात्रा पर हैं। हम इसी जीवन में परमधाम की झलक का अनुभव कर सकते हैं। अगर कोई मनुष्य ईश्वर को देखना चाहता है, तो उसे चाहिए कि वह मनुष्य को ही सच्चे रूप में देखे। यदि कोई व्यक्ति ईश्वर या मालिक से प्यार करना चाहता है, तो उसे चाहिये कि वह मनुष्य को ईश्वर मान कर उसी से प्यार करे। इसी प्रकार अगर कोई व्यक्ति ईश्वर की सेवा करना चाहता है, तो उसे चाहिए कि वह दीन दुःखी इन्सानों की दिली जान से सेवा करे। वह केवल तभी मनुष्य और मालिक के उस सच्चे रूप को समझ सकता है। जिसे दाता दयाल जी ने इन शब्दों में बताया है :

अब आदमी कुछ और हमारी नजर में है।
जब से सुना है यार लिबासे बशर में है॥

इस सत्य का एक मात्र दर्शन जिसे चश्मे वाहदत यानि कि समदृष्टि कहते हैं, मानवता धर्म के व्यावहारिक जीवन का सबसे ऊँचा दर्जा है।

—o-:-o—

## ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ । 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੜ ਮਾਨਵਤਾ । 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ । 4. ਮਾਨਵਤਾ । 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ । 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ । 7. ਨਾਮ ਦਾਨ ।

## अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manavta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. Realization of Reality. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America.
14. Yogic Philosophy of Saints,
15. Nam Dan. 16. Autobiography of Faqir.
17. Republic day Message 26-1-81. 18. Radha Swami Dayal's Divine Message on Self Realization.

## हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1. अनुभवसार । 2. सन्तमत लेखमाला भाग 1
3. सन्तमत लेखमाला भाग 2

—o⁐o—

कर्मात्मक बनाओ। अगर
हीं बदलता तो सत्संग से क्या
समय नष्ट क्यों करते हो अमली
मैं चाहता हूं. तुमको सुख शान्ति
शान्ति तो तुममें अपने अमल से, अपने
ख्याल से होती है। मैंने तो केवल उपाय

# वन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥

तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥

रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥

सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय॥

मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

---

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग
18-4-82 को होगा।

---

हम करत
अगर यह भी जब हम
तभी ऐसे हुआ !

## शोक समाचार

बड़े खेद के साथ सब सज्जनों को सूचित किया जाता
कि श्रीमती भण्डार देवी रविवार चार अप्रैल 1982
अपना पांचभौतिक शरीर छोड़ कर हमेशा के लिए नि
धाम पधार गई हैं।

श्रीमती भण्डार देवी जी एक बहुत बड़ा समय हज़ूर महारा
परम दयाल जी के साथ रही हैं और इन के सुरीले शब्दों
की गूँज हमेशा के लिए हज़ूर महाराज जी के सत्संगों
रीलों में हम सब सुनते रहा करेंगे। इन की जिन्दगी
बहुत सा हिस्सा परम दयाल जी के चरणों में गुज़रा
हम सब सज्जन इन की सुरीली आवाज़ से लाभ उठाते
हैं। इन की सेवा का आदर्श महान् है।

मानवता मन्दिर का सारा परिवार इन के देह
पर श्रद्धाञ्जलि सहित शोक प्रकट करता है। कुटुम्
सहानुभूति प्रकट करता है। जनरल सेक्रेटरी

Regd. No. 2626574 APRIL 10th 1982
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To 1283 Sh. A. Hanmanth Rao
H. No. 10-3-194/8
Humayun Nagar
Hyderabad 500028 A.P.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

---

*Printed by : Manager* Raj Kumar Sood,
Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)